

मूमल

संस्कार

रानी अक्षमी कुमारी चूडावत

रायतसर

प्रकाश

गजस्थानी संस्कृति परिषद्
जयपुर

वीथी संस्करण
सन् १९६१

भाग ४)

मुद्रक
नेपथस प्रिंटिंग प्रेस
बयपुर

राजस्थानी मामूनी करक सू एक ही भासा री है। बी भासा ने भाज रा पुजराती 'प्राचीन पुजराती' रा नाम सू बोली राजस्थानी ई ने द्वियम या प्राचीन राजस्थानी क्ति। राजस्थान रा जालोर रा बान्हडदेपरी क्यात जको जालोर रा हीज एक कवि री रष्योडी है वा पुजरात में बी ए० रा कोस में पढाई जाई। पुजरात बाज्य बी भासा ने भाप री प्राचीन पुजराती माने। बास्तव में प्रद्वारकी सदी सू पैंसा राजस्थान धर पुजरात रो सामाजिक धर सांस्कृतिक सम्बन्ध एकाकार हो। धकरेजा रे भाषा राजनीतिक ईम सू यां ने प्रसम करवा सू ये भाज ग्यारा म्यारा श्हीमा। सिध धर पजाब सू ही राजस्थान री सीमा धर। रात दिन रो भाजको जाबगो हो। भाज सिध रो परपारकर री पगोकरो जिलो सदियां सू जोपपुर राज री ही ज दिसो हो। बठ धर ही राजस्थानी बोली जाई। अस्तमेर बानी निधी भासा रा बषा ही सप्टा ने काम में जाई। उत्तरी बीजानर बानी पंजाबी रा सबर धरा मिले। सीमा मिले बठ धर सबरा रा मिसरा कायदा रो बात है। ये सब श्हेता पवा ही यां बातां में ठैठ राजस्थानी भासा है। भाषा राजस्थान में ई गुणां सू बी दुनां तब यां रा बषार है। निर्योडी मिल नही जावे। बिसस बिसस जमां री बोली रो कँबा में सिखबा में बोडो पको करक पई जायी यां रो घातमा धर सरीर में बोई करक नी।

शूरी बसम सू निर्याडी ६ बातां जो पोपी में उप री है यां री पुन गरीमा है वा तो राजस्थान री परती री उपज है भासा धर भाव बिकृति मातृभासा राजस्थानी री सपदा है। शूरी बसम धर शू तो बिरबायां रे मू डायै याने रातबा ने निमित्त भाव हू।

दीनो संस्करण
सन् १९६१

भाग ४)

मुद्रक
मेजमस प्रिंटिंग प्रेस
बपपुर

राजस्थानी मामूली फरक से एक ही भासा ही है। वही भासा ने धात्र रा गुजराती "प्राचीन गुजराती" रा नाम से बोस राजस्थानी ई ने डिगल या प्राचीन राजस्थानी कहे। राजस्थान रा बासोर रा काम्बुदेयरी क्यात कफा आसोर रा हीज एक कवि री रच्योड़ी है वा गुजरात में बी० ए० रा कोस में पढाई बाबै। गुजरात बाबा वही भासा ने धाप री प्राचीन गुजराती माने। बास्तव में घट्टारवी सबी से वीना राजस्थान पर गुजरात रो सामाजिक पर सांस्कृतिक सम्बन्ध एकाकार हो। पररेका रे धामा राजनीतिक ईप से या के चलम करवा से वे धात्र म्यारा म्यारा ल्हीया। सिद्ध पर पत्राव से ही राजस्थान री नीमा पर। रात दिन रो धात्रको जानयो हो। धात्र सिध रो परपारकर रा मकोकरा जिको सविया से बोसपुर रात्र रो ही ज हिरयो हा। बठे धरै ही राजस्थानी बोनी बाबै। वैसमकेर कानी विधी धामा रा पण्य ही सव्या ने काम में मारै। उत्तरी बीजानर कानी पत्राबी रा सबर कया मिले। सीमा मिले बठे से सबरा रा मिलना जायदा रो बात है। वे नर ल्हीना पका ही या बाठा में टैट राजस्थानी धामा है। धामा राजस्थान में ई पूजा से वी ल्हीना तक या रा क्यार है। निर्योड़ी मिल कही बाबै। बिसेस बिसेस जना री बोनी रो कवा में सिद्धवा से घोड़ो पलो करक पड़ बाबी या रो धात्रमा पर तरीर में कोई करक नी।

गुहारी कलम से निर्योड़ी वे बाठा जो बोपी में छप री है वा री पुष गरीमा है वा ठो राजस्थान री परतो री परब है धामा पर भाव बिभूति मानुमासा राजस्थानी री सपदा है। गुहारी कलम पर गुरु तो बिदधाना रे बु धार्य यान राखवा ने त्रिमित मात्र है।

राजपि महाराज चतुरसिंहजी का परिचय

राज्य कृषियों में बीमर के बीच विनाम के उपकरणों के मध्य पोषित होकर भी कई व्यक्ति धार्मिक-आध्यात्मिक दृष्टिकोण को अपनाकर मस्तक में संसार के सामने धाम हैं। राज्य-मुकुट के स्थान पर बीराम्य के वेष्ट रंग में रंगे बस्त्रों को ही उन्होंने पसन्द किया है। महारामा बुद्ध इस क्षेत्री के वरम श्रेष्ठ व्यक्ति हैं। इसी प्रकार राज-योगनी भीरा को भी रत्न शर की शय्या अपनी घोर माहृष्ट नहीं कर सभी, बुद्धावन के बनों की पत्ती-पत्ती जगहें सावरा "रंग राखी" का सारथ बहते हुए पवन के साथ होती रही।

मस्तकाल की रचना भी सिंहासन पर बैठे-बैठे एक मस्तक-राज के कर जाती थी।

उत्प्रेतबी शताब्दी के भी राज्य-मुकुट में एक मस्तक बरि को उत्पन्न किया जो जीवन भर, विनाम के हाम में जन्म लेकर भी भीरा के ममान नाते रहे। उनमें मोदी की ही निष्ठा मस्त का आत्म-ममर्षण बरि का हृदय नकारक का ररर घोर राज्यमुनीय मर्षण थी। भीरा के ररर में अपने उपानव को प्रम-नीला ममाने भीरा को परती पर ही घोर भीरा के ही बंन में देवाइ के राज्य बराने में जगहोंने जन्म बिपा,—

वि० संवत् १९१६ की महापत्रक चतुर्दशवर्षी का जन्म करवाली की हूँ। उसी उदयपुत्र में हुआ। इसकी रचि बचपन से ही साध्यात्मिकता की धोर सुनी हुई थी। धर्म्ययन का उन्हें बचपन से ही था। सख्त हिन्दी पुस्तक मराठी मद्रासी तथा धर्म का धर्म्ययन इन्होंने उक्त भाषाओं में लिखे धर्मों को पढ़ने के लिये कर दिया था। साध्यात्म विषय पर लिखी पुस्तक कथाचित ही ध्यापके धर्म्ययन से संबंधित रही है। हिन्दू धर्म के वैद-वैदिक शास्त्र उपनिषद् पुस्तक तो ध्यापने पढ़े ही पर धर्म्ययन धर्म्ययनियों का धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये बौद्ध, जैन ईसाई, सिक्ख मुस्लिम-धर्मों का भी ध्यापने धर्म्ययन किया। ध्यापका पुस्तकालय या जिसमें धर्म्ययन पुस्तकें थीं।

ध्यापने ध्यापना बौद्ध धर्म्ययन में तथा पुस्तकें लिखने में ही बिठाया। ध्यापने कई पुस्तकों की रचना की जिनमें से कई प्रकाशित भी ही नहीं तथा ध्यापने कई धर्म्ययन निकले। ध्यापने से कई धर्म्ययन हैं। कई ध्यापने तक प्रकाशित भी हैं।

मीठा मेवाड़ी लखनौधी भाषा में
 ध्याप-ध्याप (राजस्थानी तथा हिन्दी टीका सहित)
 चतुर्दशवर्षी (राजस्थानी में)
 ध्याप-ध्याप ध्याप-ध्याप ध्याप (राजस्थानी में)
 ध्याप लखनौधी ध्याप (राजस्थानी में)
 ध्याप-ध्याप-ध्याप (राजस्थानी में)
 ध्याप-ध्याप-ध्याप (राजस्थानी में)
 ध्याप-ध्याप

बातां बातं बातं रा बिद्यम मार्पे सिन्धोही है । देवी देवता पर तिहार
 मून प्र तां री मूबर नाहर रा भगवां री तिहार कतरि मात री भूे क्रियां
 करीने मो करपन मां बातां में कर्षो बित्तार मू कर्षोरो है । मूबर ने
 एक मूरवा रो प्रणीक मान मूबर पर मूडम री बागबीठ में एक बीर
 पुरन रा मन री इच्छा री पर बिचारी री तपबीर मो लेबी है ।
 बाबायतियां री हिम्मत री बातां ओर पर ट्या री कतराई री बाता
 कपी मुबांरणी है । ओर पर ट्यां कपी कपी सप्यई मू घाप री कडा
 रा हाब बनाया कपी रोचक है । कनसा तापरिया ओर री कपी बाता
 मार्पे । एक मू तक बहिया कामारी पर ओरी री तरबीबां री ।

कपी रो ही टाटा नीं । कपी कपी कपी हांरी है के मूड वं कचम्पी
 घाई । कचम्पीरा कतरिया सेठ साठुबार, वमु पंती कचम्पी जोम्पी
 सागना पोखता इन्तर री परियां टाबर री बाता कर्षो परती है के
 कर्षो पर नीं । कचम्पी नीति री कर्षो ने ही कपी मनोरञ्जक कपाय
 रीपी के मुषनां ओरपी नीं घाई ।

मूरबीरां री पर रणगतां री बातां कर्षतां कर्षतां ता कचम्पीनी कचे
 घायां ही नीं । बीर रम रे मारै रो मारै मूङ्गार कर्षे प्रमी
 प्र मिजाबा रो कर्षो रा ता कचम्पी भरपा । क कर्षो कपी कचम्पीमावण
 है कचम्पी ही बिन्न हरणाक्य मां रै कर्षो रो इग है । कर्षो रा इग कतरा
 जानदार कचम्पी पर मुबांरना है क मुषनां बातां मुषनां हीम रै कर्षे
 कचम्पी रा कपी नीं कर्षे । क कर्षो री कचम्पी मक्ति ता कचम्पी रा है
 बाग कर्षे कर्षे बित्तार कतरा है । कर्षे कर्षो रा कचम्पी भूे पर कर्षो
 कचम्पी नीं कचम्पी मुषनां बातां ने मू नाय कर्षे कूबा लोफ में कचम्पी विद्या

हैं। एक वन में हुंकार, हुआ वन में रोबनों घाँस लीला वन में रोम
 नु कटकटियाँ भीबना मार्ग। बीरता रो वरपन करे तो रुच रुच
 ऊभो भूे बाबे। एक बाँध तो कावर टी हुआ ही वरवार टी मुठ ई
 जाव पद। पाग रो बा छप्पर बाँधे के मुखवा बाला बतराम टी पूत-
 दिया भूे म्पु जंठा री जाई। एक जसो वात के बठे बस्यो ही सार
 हुंकारो बेबगिबी बाबे। हुंकारा बिना वात घधी प्यीबी बली नंपाव
 बिना छोज।

‘वात में हुंकारो फोज में नंपारो’

वात मुठ करवा प म्पार। म्पारा इष म्पु। कोई वात मुठ म्पु करे

वाता हदा मामसा दरिया हुंदा फेर
 नदिया बहै उताबळी दे दे पूमर देर
 बेजाव सर सोबे केताक जागे
 जागता रो पागड़पा गोस्या रे पागे
 रूपता रो पागड़पा जागड़का से भागे

वात बंधनी ही एक बुरी बच्चा है। वात एक जसो बंदे वन पटना प
 दूमां मे ई ठरे ग मुठारि राग बाप ताटक देग रिया ही। वात प
 बतरा ही वाब भूे बातो म्पारो म्पारो पाई को घबेती करतो जाबे।
 एक वन नंसा ता बा डाकरी टी नाई बाबड़ दिनातो बंड पूजाता बोस
 रिबो ही दूके ही वन मुठ करीङना बजर मे बंधी बटार लंबवा मे
 हाव पैजना बीगंजा बाग रा बडाव उठार दे सार पुरो घबिनप करदे।

सीपाळा री राता गाबा में बुणी बास दे धुभी री चाक पार्ने दाना बुडा बुबाण मोटपार, छोरा छापरा समझा मैला भूँ बाबे तपको करे । गांभ री दाना बुडा ठाबा मिलक बीमा मार्च उबहु बँठ पार्ने एक मोटा बीपा री बाठ कँवप्यो ही बँठ बाबे पछे जमें बाठ जो राठ जाठा जबर नी पड ।

म्हार पिताजी देवगड राजठकी विर्चसिपकी रे बाठ कँबाबा रो सोक भूँपो ही हो बा बिना रो रहम सहज ई ज ईप रो हा । बुती बरपरा र माछर म्हांक घठे हा बाठ कँबा बाळा रैवता घोर हो दुभी भाबो करता । म्हांक घठे रैबा बाळा मे एक तो मूळकी राजल दुजा बोखी बडवा भसी टाटदार बाठ जमाता के नई कँवपा । हुंजारी बाठा बुहा बबित्त पुरो पिरबीराज रासा मूई याप भप्यां नी एक काँधो पासर । बां री चाकरी बाठ कँबा री ही । काँभ पड़ता ही रोसनी री मुजरो करता ही बाठ जमती म्हा समझा जणा मैला भूँ बँठ बाठा । एक जणा हुंजारी देता दाना बुडा हापां में माळा सीबा बीच बीच मापो हिलावता "बाहू माई बाहू नई कधी बाठ" री बाँ देता बाठ रा पाणह मे दुपा कर देता । मियाळा में मियाड़ी कठरी दाँभ धर जर्ने घाय जाती पाठ बासनी रैती । मुगबा बाळ्य बिनाम भूँ बँठ सुपटा रैता । बीमामा मे भरभर भ्रमर छोटा पड़ता भस्या मर्म मे म्हार पिताबा हुषम दबा करता "भातहा ऊम री बाठ कँबा ।" भातहा ऊम री बाठ जमती सार सार बुहा रा जटकारा मावता । एक तनबीर सिच जाती पापना मे हाळपां में पास रिया है बोरा हनहपाय रिया है हापो बरबाय रिया है रण्ड बिना मुध धूम रिया है । जटारियां घांतदिया मे जटवती मु निवळ री है जाटे भरोका मे बु

मैंही रा रघ्वीरा ह्याम निकळपा ह् । सुनतां सुनतां डोकटा हुस्का री
 मेव मे छोड डाडी पं पाव केरवा लागता । धोटा रोजांचित श्चे बाता
 म्हां टावर घांस्वां फाडपां घाप रो घापो मूल बातां ।

पू तो बात कँवण्यां री कोई सात बात नी । कँव बापँ बो ह्नी कँवे । पण
 रावळ मोठीसरा माट, बडवा राणीमंयां डाडी नकारची सरवडा
 जांनड कीम में बाण कँवण्यां ग्यावा मिलै पीडपां मू याने बातां बडानी
 पाद वाली घाबँ । एक नीं घनेक छाटी नी मोटी मोटी बातां सेवडा
 हुहा सुबी याने बडानी पाद रे । भण्या पडपा नी पण बरचन घाटो
 घटरो जबरजस्त के काईं कँपो । बात रे तारें मोका मोका पं हुहा
 बोमता बाबँ । यां हुहा रे बोमता बाबा मू बात रो घाबँर घोर ही
 बीगळो श्चू पाबँ । परमग पं गाबता ही बाबे । छोटा छोटा बास्व एक
 पानतू भरती रो घाखर नी टाळमा सवद काट्या मे जाय मूषा मादँ ।
 बाता रा कँवण्यां मिमगां ने राजा माराजा घाठी इज्जत घर रोजघार
 रे घार रे घटँ रासता । यां री बणी कुळ ही सभा मे रीध्यावाने मे
 घावरी बड्य बठाता इतिहास घर स्यातां री जाणफाटीं तो यां बातां मू
 बणी बागी श्चे बाती ।

यां स्यातां बाता री भागा प्राचीन राजस्थानी ह् । पाडासी राज्यां री
 भागा रा ही मा बातां र्व घमर ह् । पजाबी मिपी गुजराती भागा रा
 सपदा मे काम मे लीबा ह् । मू ता घट्टारवी सताम्बी एक गुजराती घर

‡ राणीमंया एव बात श्चू बा गिरफ रात्रियां मे ही ज जांचें घात री
 बही मे रिचडा रा पीडीबार नाम माडँ । राजा माण्डां मू काईं नी
 लेई । रात्रियां च जाचक श्चूबा मू प राणीमवा बाबवा साण्या ।

समर्पण

घनस्थानी पद छ बढार कठगिया
पू ज्योड़ा मयत घर घोयो
जयभ्रामा बुग घाडरिया
बो राज म्हेतां सु बठर बघां बगां रा मन मंहरि में बम गिया
ज्यां री पौध्यां घाज ताई मैबाइ रा घर घर में
वीठा भावबत ज्यु बांधो जावे
ज्यां रा बघापोड़ा बजन पांज पांज में सोहबीतां री ताई पाइने
बां महाराज श्री बतुर्तपजी री बाबन पादपाटी ने
बघां मांज सु भेट

शुभिका

पानपी राजस्थानी ज्ञाना राजस्थान की बरती पर इतिहास की नई ही ब सबल न लयतावान है। प्रायः प्रायः दीनहा पर भीड़का जगता कीरल उभागर है बमोज मरम मरी बजाता मर बाता है। राजस्थानी बाम्य मो बगत बाबा है वेग बिरेग की बर्षी तरी भाषाबा में राजस्थानी काम्य रो अनुवाद बहीयो है एन बय सागुहो प्यात ही नी हीयो ई बाले राजस्थानी मय ए पुन मोगा की ज्ञान में प्राया बाब वस्या प्राया नी।

राजस्थानी बाता की नमी प्रायः रूप की बनोनी है। ई पोपी में नू ग्हापी प्रापुनिक राजस्थानी में निख्याही ए मोनिक बाता मरर कर की है। राजस्थान की पूनो परंपरा पर इतिहास न पदपो राग न बाता निसपो तो एन राजस्थानी एनक साक ननुमदिन ही नी एय पदगांगपो नी बार्न। राजस्थान की मरुति पर परंपरा पनरी पोज नू परपाहा है के नोर् बाठ निर्ग पर जीमें दा रो परतबंन नी कमई तो बा बाग राजस्थान नू पदगी पदगी पर पनरीगी नाय। राजस्थानी रो तो एक एन पातर इतिहास है। बाठ बंन रो पर निगवा ए ग्हारो मुना मोर है। हाम ताई जगती बाता ग्हे निगी है के मपद्री राजस्थानी मरुति पर राजस्थानी बीगुता नू पदपाही है।

राजस्थान में मूरुवाँ घर खटिवाँ ह्रीं व नीं भटा रा लीं बाड़ावठियाँ रा ह्रीं खरिन रो बजोँ एक घनक रिवो ह्रीं । भारत में राजस्थान रो लीं महारूपूर्ण स्थान ह्रीं बम्पो ह्रीं स्थान भारतीय भासावाँ में राजस्थानी भासा रो ह्रीं । राजम्पाकी रा एक एक सबर रे लारैँ एक एक रखसेठ बोर्लैँ पीइया रो तराकरव खोजैँ ।

म्हारी निस्पोड़ी बाताँ में लू बोड़ी लीं वे बाताँ विदवालाँ रे धाने वेन रो ह्रीं । बाँ रा उपमान, उरमेय विरीषक विरीष्य खरिन घर बर्बन लैँसी बर्बरा नयन्त्री राजस्थान रो धान रो घर धाप रो परंपरा रो ह्रीं । म्हुँ, लीं बाताँ वे रात दिन धाँबर्लैँ घराँ में बोलाँ लीं बासा में निखी ह्रीं । राजस्थानी वे बाताँ कँबा रो घर निघना रो परपरा धनी लूनी ह्रीं । राजस्थानी पद में निस्पोड़ी बाताँ घर क्वाताँ लोळ्बी लताम्बी लू धिसैँ । लत्तरबी घर म्दुठारबी लताम्बी में लीं बाताँ कँबा रो घर निखवा रो बन्दा बराबर लखरी करतो रो धनो बरचार खूँबी । बाँ बासा लीनकी खारली बरबा में हुवाँराँ बाताँ निखी रो ।

घानवाले हिन्दी में लो का प्याँ का बागा निरीने बाँरो बहुनी बंपाळी घर घ बरेजी भागल लूँ लींको ह्रीं । बवाळी भासा में लीं बाताँ निरी लीं बाँरो हन लूपी घ बरेजी लूँ नियोजो ह्रीं । घ बरेजी रे देवादेव बंपाळी में ह्रीं तरैँ लूँ बाताँ निस्पोड़ी लफ् ल्हीको बंपाळी रो लैँ घ बरेजी रो बरन लिम्बी में लींबी पद राजस्थानी बाताँ रो लैँसी घर हन बिलकुन लीं लफ् घर लूनो ह्रीं । मुक करवा रो हंन रातन करवा रो धामनी बरगन करवा रो प्रवा लबळी रो नयन्त्री धाँबली ह्रीं कोईं लूँबी बाताँ रो घान बोबनी । राजस्थानी में लींन भाग रो बाताँ ह्रीं । एक लीं पद में, लूँबी पद में लींबी बाँठ रो बाताँ पद पद निस्पोड़ी ह्रीं ।

निरुपानमुपान कम प्रयोग-वदति
 वान खडोक्त सभ्याह्वान-प्रयोग
 क्षत्रिय त्रिकाल सभ्या-प्रयोग
 सप्तपती स्यास ध्यान-विधि
 पितृ-सर्वथ ब्रह्मदेव प्रयोग
 क्षत्रिय-गायत्री

गीता की कई विद्वानों ने ज्ञान-विज्ञान तथा वादिय पूर्व ज्ञाना प्रकार की
 टीकाए की है । पर महाराज साहू की राजस्थानी भाषा में की गई
 समझोकी टीका एक पनुची वस्तु है । जिस प्रकार के छन्द में गीता
 का मूल रनाक है उसी छन्द में राजस्थानी भाषा में पनुबाह प्रमुत्र
 बन पड़ा है जैसे—

पुष्पो मय पूर्वाभ्यन्ध तेज रवास्त्रि विमबधो ।
 बीजम् सर्वभूतेषु तपरवास्त्रि तरस्त्रिपु ॥

उसी छन्द में बभ्रु-द्वि ने दितनी शरमठा से धपनी मादुमापा में
 यह ज्ञाना—

पवित्र पञ्च पृथ्वी में धपनी तेज हूँ मूँ ही ।
 जीवां में बीजपो जाय तपनी में मूँ ही तर ॥

बड़े से बड़े प्रान को इनकी मरमता तथा नादमी से ये निरा जालते या
 समझा देने कि गममने ज्ञान ध्यक्ति के लिये भी बह जोई रस्य नहीं
 रह पाता ।

एक दिन बीज ने प्रेव विद्वान होकर प्राचना की थी,

मूर्धनि चाकर रासोत्री

चाकर एहस्तां, बाग लमास्या ।

निष्ठ उठ दरसन पास्या ॥

यह तो मीरा की भावना की हार्दिक कामना थी बह "चाकर" रहने को प्राकृत होकर निश्चिन्ता रही थी उस "चाकरी की कल्पना के पीछे स्वप्नों में डूब रही थी । पर अनुरसिहारी तो अपने उगा क की 'चाकरी' में लगे हुए ही थे । उनकी अपनी अनुकूलि थी

मैं तो छा भी चाकर बाँधा मैं तो ठेठ जनम कमला का
बाग राग लीला रे मैं तो एका पायद लाया ।

भीने रंग के हृदय पर सवार अपने इष्ट के पागल में गछ पंरी को पकड़ बोड़-बोड़ कर के चाकरी बजाते आ रहे हैं ।

मीरा के "मूर्धनि चाकर रासोत्री" यह कर मारी-दूबय को धोम कर रन दिया तो महाराज लाहिर ने "बाग राग लीला रे, मैं तो एका पायद लाया" यह कर राजरत्न की भीर भावना को नविष्ठ करे ही दर्शों में विरिष्ठ कर दिया ।

भुजरा मामुन निष्ठ कथां शोचयां को कमला का ।

बल्लभना तू ही बागव छां मारण सब मरना का ॥

बिना लमार का नरिषय है ध्यान इष्ट न ? बागव य बनगम मे ही दग धन्य पु। की मुरने इपोही दरवाजा को जानने जाना ही दन पंथियो को निष्ठ नवता है ।

राजस्थानी में इनके बड़े हुए क्या गय और क्या पय इतने मयुर इतने
 प्रभावोत्साहक है मानों अपनी आत्मा ही बोन रही है और
 उसकी ध्वनि मानों में पूज रही है। पाणिन मन को बेताबनी
 देते हैं।

यू कोई पश्यो पसरनी डाकी पार कपी जवाहूँजाभा की
 बठे समरनी बठे पसरनी बठे पागनी म्हाकी ॥
 टिपट टैम, री खबर। काज नी बटपी साठ टकाकी ॥
 बर कांय भू म्हीयो गाफिन रेल मपी रीहा की।
 कई पपी नै पड़ उतरणों या है रीठ घटा की ॥

सामग्री बर में जग्य ले और उमी पाचार-बिचार में पम बन बुमार्य
 की और सामग्री को बड़ते देल उम्होंने इस बय का मबिप्य तमी देल
 लिया था। बुरी सोहबत में फंसे हुए को तीव्र दग्नों में फटकारते हुए
 तबन का बिच उतार मांछें खोलने ही बेप्टा की।

धनदाता नै पाजा, बोया पारा बठे पूटम्या बोया।
 पाजारेख बोड स्वारथ री खोई खीन मू खोया
 देव बसां मू नाय। कपयो कई रांहा में रोया ॥१॥
 कमा समा, देतां बर ले कर्त-मर्य कर बोया
 घोषापणां नै ऊ बरनों गिष द बड्ठी मारय बोया।
 डाठा टीठी बर मुँई बर, माटा बाब डबोया
 बड बिदा बडपय बिचारतै पटक बणाड निबोया ॥
 राज-बरन नै घाट मीतारै रांठ-बरन में बोहूया
 करया बाल पकड़ी छाट्टी म्नु कई बपी ले का या ॥

मनका रा तुभारा पू लुँ के बुनिया रा तुभारा पू लुँके ।
 छड़-पड़ छोटी मकठ में नाथ मछा सु कर लई
 पाटा नै पारै समझा ।मिस्र नर नै नार निमज लुँके ॥१॥
 भूपतपस के पिथै भूरपस मन हुआ रो ठम लई
 हाथ-पयारे पाटा बाँई मुडा र देवी लई ॥२॥
 माठ-पिता सु करै कुवरप्या मारी के निच-दिन लई
 रै हवा रा रै बाबा रा पाना पास सरा रई ॥३॥
 रै काबलमा बंन बनारै क हुआ पंभी लुँके
 देनत रो बन मन नी पारै मुछनी री मनसा रई ॥४॥
 बब-बब करै बडाई निज री घोर रा कटली लई
 पाजी पास राठ-दिन रै रै हा बी मु छाजी लुँके ।
 पर रा मु लो लड' रोज मे बाहरमा री तम लई
 पूरव काम पछम मे बौड़ करै नहीं पन लई रई ।

महाराज तार्दिक अपुरबिबजी के मारी का लका सम्मान के लख देया
 लका संकोचन किया । मागु जाति के लिये सर्वत्र उनका मस्तक मुका
 रहा स्त्री मे उहूँ पालि दिगलार्द भी । पुन हुए मारीलक को छिर से
 प्राप्त कराने के लिये उहूँने बीर हूँनार बी भी । कात्मकोप कपते हुए
 मारी के मुह से उहूँने कहनाया ।

"बैना धारा घोषी बी ह्य ।"

राजारानी कवि के कहे हुए, निबन्ध जाई निबन्धी" की पुनरावृत्ति
 उहूँने मारीलक को ललित को धारण करती रहने पर भी उम पालि
 से धारणित मारी को स्मरण कराने हुए का ।

“मारी हा तो काई स्त्रीयो मई मारो पी मारी हा”

हम मारों से (निहों से) उत्पन्न मारी (निहनिषा) है ।

बहु तो मारी के उस स्वल्प को देखने के लिए भाभावित थे जब धात्म
बिषयाम से घोर प्राण हृदय जन्ही के शब्दों में मानू रविन ऊ वा मस्तक
कर, पुरातन राजस्थान की कीर मजनादा की भाति फिर से कह उठे,

शूरां पर जममी हां मायां शूरां रं परधी हां ।

शूरां पी बननी हां धायां पीते ही पूरै हा ॥

यह ठिक करते करते एक घटना याद था गई ।

उमने स्पष्ट हो आयवा कि महाराज साहिब का स्त्री भाति के प्रति
क्या दृष्टिकोण था ?

उनकी पत्नी का पुत्रावस्था में ही बेहाम्त हो गया था । वह एक बानिका
छोड़ गई थी । महाराज साहिब मुबक ही थे । यों ही इनका मन पहिने
ही धाम्यप्रय विषय की घोर शूरा हुआ था जब ता अपना सारा समय
ही य पुस्तकालयमोचन में बोटने लगे । उनकी बाती हुई एवात्म-प्रियता
की बेग मेबाह के तत्कालीन महाराजा फतहसिंहजी का जो इनके
रक्त-मन्त्रण में गये पाया वे भय हुआ कि कहीं अतीजा बँराग्य ही
न लेते । एक दिन महना ये अपने नाम बुनाकर धामा बी— ‘तुम
विवाह करलो ।’

महाराज साहिब पहिर तो बीन रहे फिर महाराजा के सोहगने पर
हाथ बाड़ कर दूता से बाते

“भाओ बबान घरव करवारी हूँ तो पुस्ताबी वन तावेवार भर जाती
तो म्हाणी सुगई काई करती ? वा रंवापो काटती कौं पुनो व्याव कर
लेती ?

समाज मे जो नियम तथा बर्बादाण बगाई हूँ उन्हें केवल रिजवा ही
वने निबाहूँ कुदप भी वयो न निबाहूँ ?

जनकी बुद्धता तथा ब्रिज्यास्त की सत्यता को देख महात्मा ने फिर कमी
उगते विवाह कर लेने का आग्रह न किया ।

उन्होंने पत्नी को मृत्यु को डँक का बरदान समझ्य और भक्ति-रंग में
गहरे रगते ही वन गये ।

बहागन साहित्य के काम्य वर विद्वानों ने समालोचनाएँ की हूँ जामी
समझे ज्ञान बानों के मुहू से उनके योगादिक बान्यों की व्याख्या सुनी
जाती हूँ ।

उनके पञ्चानु भवन बद्-नाद् बानों ने पवित्र योगनास्य ज्ञान दर्शन,
तक भीमाना के ताव वा बड़ी सरभता छ प्रस्तीतरा के द्वारा ही
उनके समझ देने की महिषा तथा कुर्षों के बर्चन किया करते हूँ । वर
मेरे निरे ती उनके बरेनु जीवन की घटनाओं वा जिक करना ही
जगारा उचित तथा बहुत हूँ । क्योंकि उनके घरेनु जीवन वा स्वरुप ही
मेरे घाविक ज्योप हूँ उनके बीदिक जीवन की अपेक्षा ।

घनत्र वधि अनुरनिहूनी रिपने में मेरी बीनी के देवर के । मेरी बीनी
महात्मा साहित्य द्विभननिहूनी की पत्नी थी । ये दोनों लगे भाई के ।
मे घननी बीनी के बहा ज्ञाप जाठी ही रहती । मेरी ही लवधपस्था,

योसीजी के बार बग्याए थीं। हम लोग वहां साब-साब लता करती।
 बहिनें कहती "बासो कुआकामी कुमी काम न रमा।" हम महापत्र
 साहित्य के पास जाकर लतने लगती। उनके पास लतना बड़ा प्रच्छा
 लतता जा ने बच्चों के साथ बड़ा स्नेह रखते हम लोगों के साथ मिल
 कर खेलने रूप पाते कमी सतरंज की बार्से सिखाने लगते। योसे के
 बसने के बार्ड कर घोर ऊट की ठिरछी बाल नहीं सीखी। बीपड़ की
 पोटी को मारने के लिये हाथ में पाते लिये 'पदार्थ पासा पीबाघ
 सतरा के पदतारा" का हम सब सम्मिलित स्वर में पुकार करतीं हमारे
 साथ बह भी मिलबिसा कर हुंसे। घाय भी उस सन्त का बह पुत्र
 पाल्य हास्य स्मृति में कमी बोंब जाता है तो प्रबाघ की रेखा सी पिच
 बाठी है। रेजी (घापी) का कुर्ता ऊनी-ऊनी बोठी तथा जखपुर
 की बनी बेसी कृतिवां ने पहिने छूटे थे। घामा से हीष्ट बनका मुख-
 मंडस घानम्ब की ज्योति से बनकटा रहता। हम उस समय समझ
 नहीं पाती थी कि एक योपी मसत कबि तथा बार्जिक हमारे साथ
 खेल रहा है। हम समझती नहीं थी फिर भी बिलकुल ना-समझ भी
 नहीं थी। उनकी राजस्वानी में लिखी रामायण हम बड़ लेती थीं घोर
 इतना प्रबन्ध समझती थी कि साधारण मनुष्यों से ऊपर थे बिषिष्ट
 व्यक्ति हैं। उस समय के अपने ज्ञान के अनुसार हम लोगों में जिजासा
 भी थी मस्तिष्क में प्रसन्न-मूकक बिम्ब भी था। एक बार मेरी मौतेरी
 बहिन रामकु बर ने पूछा

"बाबाजी सायर कु बर बीबी मरया कबी पाय रोया ?"

सायर कु बर उनकी बुकी की बिलकी बिबाह के उपरान्त मृत्यु हो गई
 थी।

महापुत्र लालिब ने सहुन वीरता के साथ बल्लर दिया जो देने काशों में धाक थी झनझना रहा है "बापछो लीजो । सायर कुपर मरवी । म्हारो बोरो पलो बंधन हो जोई हूठ्यो ।"

पौं तो जगकी भक्ति ली बर्बाए हय मूलती भी धीर बोझा-बोझा मकस का धर्म भी समझती थी । हम पोट पलने प्रदन करती

'घापने मयबाब का दरख भू ? घापने दरखन भू जदीई म्हाणे ई करारजी ।'

के बड़ स्नेह धीर सरलता से हमें बल्लर देते—“हां देसोला बाने मयबाब दरखन ई जरी के ई म्हाणे ही घापने केबजी ।"

हम सभी विद्यार्थी के साथ इस धर्म की संकुर कर लेती । हम बहिनों की घातना में घागे भिन्नगी धामन्य के नाक "दिनें सब प्रथम बह सूचना देने का अवसर किसे विमता है ?

महापुत्र लालिब का भ्राई से नाथी बड़ा परिवार था । बीसा कि माय राजपूत सामन्य के घर होता ही था सोनों समय के जोकन से मास भी जाता था मदिरा का व्यवहार भी होता था सपोठ मादि के कापकन भी चमते थे । उन बातावरण में म्हराराज माहिब की जीवन चय्या देख हटानू बन-क्रमसरत बानी उनिन माद था जाती है । घर में पत्नी थी । बी बानिबायो का जन्म भी हुआ । पाह्लव्य जीवन का विवाह कर रहे थे । फिर भी विविष्ट रहने थे ।

छात्र का प्रोत्सव करने समय कभी-कभी इबरी पत्नी बर्बाती पोसाक घ मरती बपही मादि बहिनो इनक कारक में बैठती । इन माति की बर्बाती पोसाक बहिनना राजपूतो के प्राचीन सामन्य-मुना में जीवन

रखा था। राजमहल में बापस्य बीबन की तरह बड़ियों की बुद्धि होती थी। मध्य-युगीय राजपूत बीरवंशियों ने जो कुछ भूमि में तमवार का बीहर बिछताया था वह तो सब उन्हें धीरे-धीरे बड़ियों के भारी बोझ के नीचे दब गया था। फिर भी उस युग के धीरे धीरे ताकत की पुनर्जीवनाय सब भी राजपूत रमणी के मागस में थी। वह अपने तायन-कस की लकान्त में वह बीर-सुरमा सज कर उन धीम्य-धरी घटनाओं का अभिनय ही कर अपने को सम्पूर्ण कर लेती। पनियो को भी पत्नी का वह बीर-रूप इच्छता था।

पापके इस उच्च जीवन का सारे परिवार पर गहरा प्रभाव पड़ा। जिस घपनी मीठरी बहिनों का मैंने त्रिक्रिया है उनमें से दो तो पापकम धार्मिक लैव में तथा अपने काकाजी के माप पर प्रच्छी पाये बड़ गईं। यों तो इनके परिवार में धार्मिक प्रकृति पीडियों से आई जाती है। अमुरसिहनी के पिता महापत्र साहित्य मूरतसिहनी का जो कि देवात क महापामा फनसिहनी क बड़ भाई से मध्य स्वरूप में ही बान-स्मृति में अनित श्रुतियों के स्वरूप की वसना करत होता। बबल प मरसी के ऊपर लहाराजी स्वच्छ बबल बाड़ी बच्चों का सा सारन हास्य। कवि रबीग्र के पिता महपि देवेग्र का कमी किन्न दिवसाई देठा है तो मुझे हटाए श्रुति मुख्य ध्यभिनरव बाने महापत्र मूरतसिहनी की मार या जाती है। वह युव भी बड़ा धर्मयुत का सब लैवनों बन्दरों से पिरे हुए, हरेनी का चौड़ा जीना बड़ने काठे धीरे बन्दरों को रोटीयां गिमाते जाते। चारो धीरे बन्दर घाने पीठे उनसे रोटीयां छीन रहा ने रहा धीरे पीठे पीठे बामक बालिकाओं का समूह इस युव का धामन्द लेठे हुए बनता। बन्दरो से निबट कर इस बाव

समूह को पूरी स्थायि बाँटने बैठ जाते ।

बुढ़ पिता के बीबित रहने तक तो महापत्र साहित्य उनकी सेवा करते रहे, उनका बेहान्त हुंते ही बरयपुर से उत्तर-पूर्व में खोसह मील की दूरी पर नरवा ग्राम के समीप बाय वी कुटी बना कर रहने लगे । पौराणिक इतिहास के अनुसार वह स्वान विनायक के श्रुष्य ऋषि का धाम था । इसी पवन स्वान पर बैठ कर ही तबत् १९७८ को पीप सुकसा पुठीका को धापको भारत साधनकार हुपा जती स्थिति में धापके हाथ धनक पञ्चीसी मुहिलाष्टक और धनुमत्र प्रकाश नामक पुस्तकें लिखी गईं ।

राजपि ने १९९६ धाबाइ हुप्पा नवमी के प्राय काल इस पंच-मौलिक नरवर शरीर को त्याग दिया ।

डीकानेर के महापत्र पुष्पीराज की जाँठि ही देह त्याग । के पूर्व धापने भी एक घर बनाया जिन्का धर्मिक चरण इस प्रकार है—
“बागुर” और बाकरी रो वन से धपनाय तिबो । ने ही चारो काम ली ।

फेरिस्त

१	फैहर			१
२	भायपी		--	२१
३	मोवा खपावत बीठू	--	---	४३
४	घासो शमी	---		१६
५	घावत खीवपी	--	--	६२
६	पुमन			१२०

सूमल

(राजस्थानी री मौखिक वार्ता री सग्रह)

लेखिका

रानी लक्ष्मी कुमारी चूडावत

राजतसर

"मुना की माथी। छोरी नातमन्ना नादल है। रीन बस्ती रा बाइसा रो हुकम नी माथीला तो की रो माथीला। म्हुनें सनभ्यावा देवावे। धवार करमां में लाव परहु। ह्करत नीचे पपारे। म्हुं तमभ्यावू।"

देवदत्ता मां के बेटी कर्न छोड बाई तिकल गियो। बवाहर कंबळ के बचकावा लागी।

धर्म वा नुड़ी बाई सुथी है। पुजराव रो बाइसा कर्न 'घम्मा घम्मा' कर रियो है नु मिजाज कर री है। धाई लकमी के ठोकर देव री है। ललबाव टुटियो है कठ बाइसा रो हुकम बजा पुजराव रो राज कर, बीब रा लावा ले। बँटी से घस्वा मौका जिइयो में नड़ी नड़ी रा बीड़ा ही घावे।"

कंबळ बोनी "नु बाई म्हुं एक री भ्देयी। भ्देयी जिरी भ्देयी। धर्म बुनियां रो बाइसा धाईतो म्हुारे नाई काम रो?"

बवाहर बिइयो "एक री भ्देयी एक री भ्देयी नाइ पब लभाव राधी है? नु बत्तर री बेटी है। एक रो नुको नी पर राखियो है।"

कंबळ बपइती बोनी "पत्तां बाबरियां छेँ के बाठरियां घोर। म्हुं बां देवली कौयनी। नु बांयळ रा बस्ती रा पाठर ही बीरु नाम वै घाली ऊपर री के नी? म्हुं ही जहना री बेटी हूँ। एक रा नाम वै ऊपर बाइला।"

बवाहर बोनी मिनरा तो देस। बठ तो बारियां री बंवर केहर निव कर्टे बो पुजराव रो बनी। बी रा बस्ती हूँ रे रीकड़ा ठावेराव है। केहर री हीमठ बो पुजराव रा बयो री बरबी बिना बांइयो भर ले? बो नुच नुच ललाभां करे रोव।"

नुवठा ही कचल बचक की माथो बुनगी बोनी

बेहरियो गल बल्य क्रियो, सोम्हरियो सिरदार
 वे टीमरियो घादरू, (तो) कोड़ कोड़ धिकार ॥

मैं तो घसल सोन्हेगी मोहत्या माहर ने गलबल्य कीचो है। घई भी
 मूं टीमरिया (घप बेसरिया) ने घादरू तो मूर्ने कोड़ कोड़
 धिकार है।”

सैमदसा नाळ में ऊमो मुपरियो ब्यु ही घाप साकू टिमरियो” लफज
 मुष्यो तो मपक न मांयने घायो। बांता री कटकटियां बीजती बोलियो,
 “बारा सोन्हेरी नार ने सांयळ्य नु बड़ पीअरे म्हाक घाय घाये भी लानु
 तो मूं टीमरियो।”

भी ज बगत बबाहर मे हवेनी जावा रो नीस बीची। कंचळ में भी ब
 मेहल में रई बीची। फरुयाखान ने इस्तजाम री बीन बबाना रो रीरो
 मगाबा रो हुकम बीचो।

सैमदसा दुजे दिन दाबल्ल, बलात रोसन बग्जर ससीम जस्या घास
 घास मर्दा ने बुनाम बेहरानिच न पकड़बा रो बीचो भेलाबा न उठावो
 घो बीचो सैम जो बारियां रो पट्टोपावे।

अइ एक दुबा रो मु डो बेसबा लामिया। बुनागइ तो मुतर भोगरियो
 पासलपुर न इंदर घाट भीपी बीजापुर री नमीम रो नबजो हो ही ब।
 नांय री बांकी में हाय बाप मयी कुच हेरें ? अनात सारां मांमहा एक
 नजर म्हाक मु छ री हाय र भुक मुजरो कर बीडा भेस्यो। सीतळा
 माना री दिन साबरमती नरी में बळभेळ नरवाने बुनाय पकड़बारी
 नमाह म्ही।

साबरमती नरी री नीतळा घाता रो मेळो भरिवा। सहर स नर नाही

मेला श्रिया । ममरसा ही हाची खड येतो देखवाने घायी । मेला देख
 नही री बाय सागरियो बठ गिबो बाय री महलाठ मे उतरियो । नही
 रा किमाठ री मेहन बन रिया मेहसा रा छाजा पीसका नही मार्प
 भुकरिया । नही री छटा देख ममरसा बोसियो "घाय रो किन तो बठ
 ही देवाला रीबपो करवाला । कां हवेतिया काय बीव पुठ वाळा
 देवा भावजावो । आई केहर मुनियो है कां ही घाळा तीव ही । घाय
 वारी बळवेळ देवाला । पाछा देवा भावजा ।"

कंवरची बीवचा मे बीठिया बठरे मे तो ममरसा रो कुमावो घाय ही
 बियो "भट पवारो रीबचा री खाटी है । केहरतिव पूरा बीविका भी
 बीविया भट बोहे बडिया । उद्यान रे ताव कंवरची मेळा रे भट घाया ।
 बारिया री झोली बोडा घाय बीट न केहरतिपजी रे कुदवा री खाटीक
 रो हुहो बीवी केहरतिव भी सकरी मे कुचबिबी जिकने हरण ही नी कुच
 सभिया ।

मूम सळ पावस गळ जळ घाय पट जोय
 केहर नूदो सकुडी नूदे हरण न कोय ॥

हुहो मुन ममरसा माचो मुनियो । केहर मे घरेला घाया देख बीव राभी
 श्रियो के बो ही योगो श्रियो हुयेला तापजी खतवी लागे री बी
 घाय मार्प नी घाया ।

ममरसा बोसियो 'घायो रीबपो कर ।' बोई पचां हाचा बोही कर
 वापी मे उतरिया । हुनरा नरजीघान मू कुदने वापी मे पडिया । बळ
 केळ रा शोडन बळ श्रिया ।

घारव तो निकायोरो हो ही व । वापी मे केहरतिव मू कुचमार करवा
 लागो बरवा देवा लागो बरवा लागो । केहरतिव वापी का बळ केळ
 नी का ती सवाई है । रीन मे घाय घारव मू कपडवा लागिया । वापी

में भवाका मानवा मानिया । बोई ठंरु बोई बळ सुळ रा
 बाणवा बाटा बोई जवान बोई रीस में भरियोडा । बाणम बाण धेरिया
 पू कारा माररिया । जाई बो मगरमठ भिडिया । सावरमती रो पाणी
 सळ मज्जाय गियो । उरुणा पड गुळुणा पड बुबकी मार मई घाय
 पकई छुडाय दूरा जाय निरुळ । पाणी रा हिनेळ्य घाय रिया ।
 टवररां सु पाणी उछळ रियो । बळमुय रा बाक दाव बळ बांक
 कांटा बाक वेह बांक बैज बाक एक दूजा व लपायरिया । पारव सरीर
 बळ में तो केहरनिय बो सु इवरीस हो पय पाणी रो ठंरु उपनीस ।
 पारव रो सांस भरनियो केहरनिय एक हाय सु काथो पकई दूजा हाथ
 सु माया में मुबका मारवा माया । पारवला पछाट जाय जाय पड़ियो ।
 केहरनिय बी वे बाँव में पाल बुबकी मारी बी मे जीव हुवाय कू कारो
 मारतो पकेसो केहरियो कू वर ऊवरे घायो ।

मेनवमा मीतो नी देख बाठ सम्भाळी केहर को पूठ व बाणी बीपी
 लावात जस्यो मुषियो जस्यो ही बने देवियो । मलती पारव टी ही ।
 बीपो जस्यो बी पायो । बोई बाठ नी ।”

बंवर में यज्ञ टी कटी वंराय सोल बीपी । तिवणइ को कटी बीपो ।

बंवर बी हुंती घाय मांजनी सतनी नैमाज रो सारो बर्याण्ट क्रियो ।
 सांपनी बोलिया “ई में उज है । पारव ने मारवा बाळा के कटी
 विरोवाव वसु बीया जायरिया है ।”

निपट छट्टी दूगों नमें बीतो बिनु बो चार

मेननी कहियो “निवणइ रो कटी देवयो जात्र है । लालव में घाय ने
 ही तो निवत नई । बाव रा मोम में घाय बंवरों बपे हुबनी रा
 लोव में घाय बबन्तर हाथी मांजना के करे रोवा रा लोव में घाय

बतवो बड्ड । के पड़पंच सोरा कंचल री बात वें श्वेतरिया है । धरें
धापियो रीणो छीक नी । धरे जाबा रो कामे छीक मांगतो ।”

दुर्जे दिन नबर भी छीक मांकी । मैमबसा नीयो एक धय रम न बावो ।
बसम रे दिन धाय मनी । राध्या रा चौक में धाय राखी । नवा
नवा धापा धसबत बुवातां मे लंगठ कर बीबा । समझमा बीबा
धु ही इतारो धै केहर वें दूट बड़यो बच खबरदार कोई पाठ मत
करवो । बीबता मे पकड़ लीजो ।

धेतली सापनी मे नारे लीबां केहर धायो । “बनाता धाय है नारा
साप नाब्या मे बेचो धो नारे डोडी वें बीटे नु केवतो मैमबसा केहरतिब

रो हाव पकड़िया राबछा मे जातिवो ।
तिरें डोडी मे धाय मैमबसा धाय ललच मे धापरा हबिबार उतारिया
सारें केहरतिब ही उतारिया । हबियार उतारता ही डोडी रो साबब्य
नामनी । मैमबसा बोतियो

“गू जातु हुरना मे मे धवार धायु ।” नाब्य बड़ नापनी साबब्य बड़
ऊपर रा लख वे बड़ मैमबसा ललकारिवो

“बकरो बकरो केहरतिब जाबा नी जावे ।” बबान नूर पदया ।
केहरतिब धकेमो । व धतरा जपां डोळ चिरतिब । मल्लबुज श्वेवा
नापियो । बुग्गी रा जतरा ही बेबां मे प्रबीय केहरतिब बब्यनच बांभ
नु बाबन मे नार पछाड़ियो । रज्जक पैबलपाय लम्बरगां मे पछाड़ियो ।
बयो धोर रो जुठ बीबो बच धरेमां नगतो नाई । केहर मे पकड़ लोड
री जंजीरा मे जकड़ पीयरा मे बड़ बीबो ।

मैमबसा कबल मे लाय नीयरा मे बटिया केहर मे बगाय गुषापा
जापियो

‘बेस लीबो ? बारो घतस सोरूरी पीअर में पड़ियो है । ई नाहर
 वी ही न बु घुमान करती ? यो साम्हरी बारो बर रियो है । घरे
 केहर धाबिया बोल, घठीने झंरु । मुँडे तो बोल जीम क्यू बंबयी
 है बापी । छूटनों बारें तो कंबळ मे कँ बारस मुँडां मु कँ म्हारो हुकम
 बजाबाने । बोल कठांजरा बारें निकळनों है तो पड़ पयां ।’

कठांजरा में मजमजाय न केहर बोसिया

घरे मिया मूँ कठांजरा में हूँ बतरे बु ही बुनिया री हवा सायने ।
 जि दिन पीअरा बारें निकळियो ननें खोर में पोडाय हुआ । यो तो
 कठांजरो है पन बाबरां बास्ते चितो ही कठय नीं । ई मे तोड़ न
 निकळु सा । बो पने बीबक री मोठ नी मारियो तो म्हारा बाप रो
 बेटो नीं ।’

मेजरसा बोसियो “रखी बळपी पन बळ नीं पियो ।”

पीअरो उठाय कंबळ रा मेहम ननें मेजाय बीबो कंबळ बी मे बंदीगत में
 देखबो करे प्यु ।

केहर तो घनघन मीपा कठांजरा में पड़ियो । नीं खारें नीं पीबें
 नीं घांस छोते । बी री या पत देख कंबळ ही घनघन नय सोपयी ।
 नाजरां जाय मेजरसा मे चिया कंबळ भूती तिथी बँठी है ।

मेजरसा धामियो कठें ही कंबळ मर नीं खारें । बी मे केहरुघिप मे जाय
 बीमाबा री हजाजत बीबी । कंबळ हरराय जीमम बनाय कठांजरा
 ननें पी । केहर तो धांपिया मीचिया मूतो । घभी बजबायें बीबी
 हीमठ बंपाई पर धांपिया नी उबाड़ी । कंबळ बोनी

गंजणु मद भर गंज डाडाळ भंजणु डकूर
 पंजणु निबारिया पू न किमां न पोपे केहूणे ॥

पतंगो बळ । ये पक्षुपण सारा कंबळ री बाठ वं ब्येपरिबा है । धरं
पांभणों रंगो टीक वी । बरे जावा री काल सीख मांगसो ।”

दूर दिव कबर जी सीख मांगी । मीमदसा कौयो एक पाय तय न जावो ।
दसय रे दिव प्याग घसी । राबळ्ळा रा बीक में प्याग राखी । कपा
कपा घाछा घगडुठ कुवानां मे रीनात कर दीबा । समझया बीबा
ब्यु ही इसारो ब्ये केहर वं टूट पडवयो पय कबरदार कोई बाठ मठ
करवो । बीबठा मे पकड़ सीजो ।

खेठठी लंगची मे लारे सीबां केहर घायो । “बनाला प्याग है बांरा
सांय बळ्ळा मे केवो बी बांरे डोही वं बीटे नू केवतो मीमदता केहरसिप
रो हाथ पकड़िया राबळ्ळा मे जासिबो ।

तिरं डोही मे पाय मीमदता प्याग कसण मे पावठ हबियार उवारिया
लारं केहरसिप ही उवारिया । हबियार पसारता ही डोही री सांय
लापनी । मीमदता डोलियो

“मूं जाडु हरवा मे मे पवार घाडु ।” लळ्ळा कड़ मांगनी सांयळ बर
ऊपर रा कण्ड वे कड़ मीमदता ललकारियो

“बबडो बबडो केहरसिप बाबा नी पावे ।” कबान नूड कड़या ।
केहरसिप घरेमो । प घठरा जबां डोळ किरकिया । मल्लपुड ब्येबा
लापियो । कुगनी रा ललरा ही बेबां मे प्रवीण केहरसिप बळ्ळाजय बांभ
नू राबल मे मार कण्डियो । राजक देवलयाय लम्बरवां मे कण्डियो ।
बयो जोर रो कुज बीबो पय घरेमो कणो बाई । केहर मे पकड़ मोह
री बंभीरा मे उकड़ बीजरा मे कड़ दीबी ।

मीमदता बबळ मे लाय बीजरा मे बरिया केहर मे बगाय गुवापा
बासियो

अप ही वो छोड़े वो प्रमाण साथ लीयो अँ के वळ री या काम ही
 हाया कीची अँ । अँ ता प्रकम हल्ले कठरा ही सनुवां मे भागिया है ।
 पू अन्न वपु छोड़ रियो है ? उठ मूछ मरोड बारा बोल मे पुण
 कर । मीमदसा मे कीचक री पीठ मारवा रो प्रक अँ कीचो वो प्रक अन्न
 मे लजियां पुरो रिठ ठरै करैसा ?

अरे केहर, अनें म्हां सतरां बिवा सिद्धार्दी बीरो नाम अईं पड़ियो है ।
 लतवार ए घर बिघोट रा पुरा बाब व सिद्धिया मे कर काम धारैसा ?
 बुदवा री बळा मे वु बजरंग रो अकतार है । ईं अ महाबाद ए किता
 मे कूय मीमद मे मार बाठी परविणिया पूरी कर ।

कामज मुक्ततां ही केहर मूछ पँ हाय कीचो 'बाणों मया अकर पावु वा
 किता ए कांपरा कूर न जावु ता ।

अंबर जी मे बीमाय अंबळ ही बीमी । केहर मे प्राय बीमावा साक
 वो अहीनां री अळळ मीमदसा पू रबा बापी । वो महिना रो कोम मे
 मीमद अजावव हीमी ।

अंबळ बीमावाने धारै अर बारें निकमले का अस्मापूठ करे । पँ ए
 बाळा अडुतायां मे टूना अटी मे बटी मे कर बाठां मे भरताईं ।

"प्राय अमावस ही राठ है मूँ अंबर जी अही मे जावु । टूनां वो
 पड़ी ईं अडुतायां मे वु बिमबाय मे तो बटीमो नाम मूँ
 करवु ।

टूनां बीमी नबीन रो । अडुता मे तो मूँ बटी मे अकरसा मो डू । अही
 बाठी रे वो ता वु ही हाय बोड़ पयां री वूठ धाजिया रे मयाईं ।

बाळी दाटन कोम डू पांवर यो परदाट

घस छो बो छोड़े बो घसाव बाय लीपो र्दे के गऊ री वा बामन री हूवा कीबी र्दे । ये तो घेनन हूये कठरा ही सनुवा मे मादिया है । घू घनन वनू छोड़ रियो है ? उठ मुख बरोड़ धारा बान मे पूरा कर । घेननसा मे कीबक री मीन मारवा रो प्रन बे कीबो बो प्रन घनन मे लबियां पुरो दिन ठरै करेना ?

घरे केहर, घने म्हां लतघ बिघा मिबाई बीरो काम घरै पहियो है । लसवार रा घर बिघोट रा पूरा बांघ घ सिखिया मे नर काम बांघेना ? बूधवा री बन्दा मे नू बजरेण रो घबतार है । ई घ मबाकाव रा किला मे बूध मेमर मे मार बायी परठियिया पूरी कर ।

बायन नूपता ही केहर मुख रं हाम कीबो "रायो मया जकर बाबु ना किला रा कामरा बूध न जाबु ना ।

बंजर जी मे बीमाय बंजर ही बीपी । केहर मे घाय बीमावा साक बो महीना री कबळ मेमरसा नू रजा मायी । बो महीना रो बोन मे घेनन इबाजत बीपी ।

बंजर बीमाघाने घारे जद बाई निबनरी वा सस्तागून करे । वीरा बन्ना पडुनासा मे दुना घटी मे बटी मे कर बन्ना मे भरमारै ।

"भाज घनावत री घत है मूं बंजर जी घाड़ी मे जाबु । दुना बो पड़ी ई कडुनासा मे घू बिमबाय मे तो बटीलो बाय मूं करनु ।

दुना बोली "बर्बात रो । कडुना मे तो मूं बटी मे करकवा नी बू । घाणी बाणी रे बो ता नू ही हाव ओड़ पना री कुज घालिया रे नबाई ।

बाटी दानक बीम नू पांजर यो परड़ाट

साजसी बेतसी बेठिया वां नू बाय मुजरो बीबो । दोई जणां अपधीत्यां
केहर ने ज्यो देव कराय गिया । बीड़ न छानी रे मयायो भट
निछराबळ कीबी ।

“केहर घरे बिना काळजा रा केहर, कंठजरा नू पयब उड़न घायो ।”

कहरिया बिनकाळजे करे भिसा करतूत
घसल कंठांजरहूंउडर घायोगत्रबमभूत ॥

कबो लो सही किन तरै घाया ?”

छारी बिपल मांड न मुजाब केहर बोसियो

“काका घा देबो घरे बठे बाबा । घमी जना ठाजो जडे बँठ पुजराण
रा बीडी बां । येमर ने साजा नू एर दिन भी बँठवा बां ।”

मठमी बहियो ‘बाहरियां रो पटो लो जनाण न मिलगियो । घबार
ला घानी बिद्या रा लापी मेबाड़ रा संपरा में जाय हवां । बठे नू बीड़ा
मांजा घस्या बीड़ा मांजा के घाली दुजराण ने हिलाय दा मगरा ये देय
ने बीड़ा कटां के बरसां लाई घोरणी बाणां बार्ने ।

तीनु घनी भदनां बोळा पैर नहरपनाह रा दरबाजा गुमलां रे मां
बारं निबळगिया ।

बिबट पहाडी में खेला बड़प जाळ घाया । भीलां रो दुलियो घाने
बपायन लीपां । भीलां रा दुपनठ पान मुखिया गीया रे हेटे । बींग
बिना हजम रे पतो भी हान ।

घाने बहियो ‘मूं घर म्हारा दुपनठ पान रा भीन राबडी बावरी ये ।
हजम रे नाटे बाबा हाकर हे ।”

काम वह तो काला नाम के पीले दू पतुलो तो बिचारी परकाटो कांप
है। माम में और पोट न धाई। प्रबाक नाम कबुता ने पावु।”

कबल केहर रा बठपीजरा जल बाय। रांपली में तु एक कटारी घर
रेठी बाड मजर सीधी। गुणी व मिमली लपके क्यु केहर रेठी सीधी।
बटापी ने हुरस छाठी रे सया।

‘साबास कबल साबास।’

रेठी नू धारण बचम जाटिका। कठपीजरा रा बपाटी रा काट काट
दुखा सीधा।

कठपीजरा बारें निबळतां ही लम्म पटकारियो। लपोट कम ‘जै वं
बजरम’ कर दण्ड वेतिया।

मटवती टूना धाई ‘कबुलिया के घोन ललायन बायपी हूँ। घोबरी
में ग्हाक बाबरी ही लाबल मनाय सीधी हूँ। मचीठा धाय पपारो।
बाई घटको नी।

केहर बजरम नी स्तुति कर

महाक्षी मास्त वेग वीर बप्या मुळो वय महागरोर
पाहिंमामु गोठम पुनी पूठा देवाधि बंबो रघुनन्दन पूठा।

गोगडा में जानिया। बोसदा रे नीके बापी रे बाबरी बरी ‘जै वं
बजरम बनी’ कर बाबरी में तीन लण्ड ऊपर नू बुदियो। बाबरी नू
निबळ दिना रा बोट बाई बचटु न बहयिया। नीके बापी रे बाई
के एर भरसाटा में तरागयी। घ बारी राठ छांटा छिड़को ब्येवरिको
बाय में बाबुना रा न ला हेटे श्रेणो महर में बजयिको।

बांगनी खेतमी बैठिया पां मू बाय मुजरो कीनी । दोई जनां घनबीलां
केहर मे ठना देत बकराम दिया । बीड न छाती रे मयायो मट
निछराबट बीबी ।

“केहर घरे बिना कालना रा केहर, कंठजरा मू मजब उड़न घायी ।”

केहरिया बिन कालजे करे जिसा कच्छूत
घसख कंठांजर हू उडर, घायी मजब घभूत ॥

कैबी तो तही जिन ठरं घायी ?”

घारो बिकत मांड न मुयाव केहर जोनिया

“काया या केवा घरे बठे काया । घरी जया ठाना घठे बीड मुजरान
रा बीडां रा । केहर मे छाता मू एन दिन भी बैठवा रां ।”

संतही बहियो “बाहरियां रो पट्टो तो जलाम मे बिनपियो । घघार
ता घांती बिना रा साबी मेबाद रा मंगण मे जाय हबी । बठे मू बीडा
मांडा घस्या दोडां मांडा के घांती मुजउठ मे हिन्याय बां मंगण मे देव
के बीडां करं के बरसां ताईं घांपी बातां चारं ।

तोनु जनां जग्यां खोटा रीन नहरपनाह रा बरबाजा मुनतां रे नारं
बाईं बिकजिया ।

बिकट बहाड़ां मे खेता बरुण पाळ घायी । बीलां रो मुनियो नागे
बघायन तीबां । बीलां रा दुगनठ बाल मुनिया गीया रे हेटे । बींग
बिना हुषय रे पना नी हान ।

बावे बहियो “मूँ घर गहारा दुगनठ पाज रा बील राबटी बावरी मे ।
हुषय रे नाटे बापा हाजर है ।”

कंवर भी बोझ मारिया । रात बिरास छाही बाभा ने बाप जड़बड़ावै । बांसेदार कैमैतदार, बिरासबरा मे देखिबा नी मेले । बीको मिले पठे ही मारे पाछो धाम बट्टम पाल के मोके । पाको किरास बापनी भाई बग्धा लुभी वीरो देवे । कना जगां टूंकिया बैठाव हीघा । बाहरिया रा पड़ मै मूतो जलाल धोऊके । गैने जासतां छाही सभारा रा बीव बड़के । छाही गुग्गरबरा केहरविन रा नाम मू कर्पे । जलाल रे घर केहर रे बीव रीज भड़ावा भावै । केहर रो मोड़ो कोई एक बलाव हो । हाबिना रा होवा वैं बावतो ही भेतो । इस्कीय ही पाठ री फिरत मै फिरिपोरो बी पटियात्र रा जावा घोटा रे मुदाबसा मै घाती कुमराग मे बाको नी । जो मोड़ो केहर री रान नीके रबिता जतरे बी रा बीजा रोकनिषो कोई नी । बा मोच बलाल बटिया दरवार मे मोनियो

“जो कोई केहर रो मोड़ी मे भावै बी पट्टी जमराव रो भाई ।”

बट्ट ही बंवरजी से होनी पीरिया ठमो गुग रियो हो । बी पताबळें भूे बट्टियो “मोरो मूँ मे बाबु ना पम पट्टो जमराव ो मिलषो भाई ।”

बलाल हा बीबी ।



केहरनिप भावजी खेतनी मे लारे भीचां बीड़ा वैं निबटिया । बाहरिया कमे बिपटा मे बापा तो बंवरजी मे बाव छाई । “घाज जवल्ली घाटन है । घाजपुरा देवी रे मोच रे घाज । बा बाको मूँ बायो ।”

खेतनी बोनिया “मोच बट्टियां ही जमना वर बाछा भू वळ्या ।”

केहर घाजपुरा रा बिबर मे बाप बाव रे बाछो निबटियो कुमारी

बी ने देखियो तो बीड़ परमावी रो बाल नाय रोबो । परमावी रो बाल जांब केहर पीबतो ही चिहियो । पीबता हो मसो घायो ।

घठी ने पीरियो डोली निकलियो इस कंवरबी भ्राजा बाता बाय रिया है ।

पीरिये भट मुसलम बेय बिरबायो

केहर कबर, बे धाक मुजा वं पासमान लोक राखियो है । सारी पुत्ररात बारा नाम मू बुर्र मता जममियो बंन उजाटवा बे ।”

कंवर पांच रिपिया बयस घोडा ने बुधाय रे नार्थ बहायो । पीरियो तो घाघो फिर लोठो बोमियो

महारा गुल्लर घर मान्, केहर तिमगळ रूप कर
जवना लणी जहाज, भळो हळहळो मोमबत ॥

पुत्ररात रा समंवर में तिमंगल रो रूप कर जवना री जहाज में भीम रे बेटे केहर हळभळाम बीबी है ।

लोठो मुपता ही तो कबरबी घोडा ने घोड़ियो । राभी ब्हे बोलिया,
“माग मांग ।”

पीरियो बोमियो “बारा पीबहो पळ्ळा फिर । बाप ! बपमील करे तो ई घोडा री कर ।”

कंवरबी ता दूची मस्ती में उतर घोडो बेय बीबो । पीरियो तो भट उजाटी लमाय घोडा वं राजवाटी ।

केहर बोमिया घोडा बरटी तरवार ता देतो बा ।”

पीरुडो बोड़ा है एह लनावतो बोसियो "कमर है बन्धी है भी ने ही ने बेबा पधारो ।

मा मुजवा ही तो कंबरजी रो लारो नसो उतर पियो । मइ उतर छे वसुतावन रा मायर में डूबिया । बाहरियो नभीक दुसमम छाती प । बोहा बिना कठे पावे ? काई करे ? बखीम री मूरती भिवा कंबरजी ऊमा ।

घतपाऊ में भारो काटतो डू मरसी घायो । कंबरजी ने देस मुजरो बीबो "मूँ घालरो साहूनी हो । घब ये स्रोटा रिग घाया भारो काऊ बेट बरू । घाव भई बाहरिया रा बोरमा में बिना भोज खु ऊमा ? काई बात है ?"

"महापी नउ भापीगो । बोहो पीरुडो बोपी लेपियो ।

डू बरती कहियो 'कट करो मूँ से नासु कठे पधारो । बोही छीकरी सू बड़ो घूटे बती बगठ है ।"

कंबरजी ने चारा ए घुडा री खन्धोन में से बाव छिपावा । बिन बलठे बीनारे लखोन में छिपता देस लीवा । पीरुड बाव बोहो हीची । बाहरिया रा घोरमा में बिना मोह कंबरजी । घस्यो पीरुडो घाबाने कठे ? बलान बोहा बनाव । पीनारे खन्धोन में छिपवा री घालिया देसी मकर वाप बीपी ।

बमान ने बोहा घाय चारा रा घुडा री खन्धोन में देरी । लतवार बीपी

निबन बारे निरुन । नायने पीर खु छिपियो खु रीठियो है ।"

खान मुन घुडा री लतवार ने केहर काटियो ।

बलास मासो बाहियो । बार ने टाल पीर रो बरस केहर री नाई लपक केहर छोरी ठरबार री । बलास रा दो बटका ब्हे नीचे पड़िया ।

“बस बाप बस बाप” केबता ही केहर री बोनी वे कमियोड़ो घोड़ो रुकियो । पकड़ लगाम रैता ही पायडा में पग जोड़ा ने राना नीचे नीचे । घोड़ो पमा नीचे घायी पछै काई ? बलास रा साथी केहर रे मार्च टूट पड़िया मासां रा भजाका सागवा सागिया । बार छावतो घर पाछो मारतो केहर बोड़ो कूड़ाय निकस भागियो । डूगरसी पीकडा रा ठरबार नू दो डोल कर बी रो बोड़ो से केहर रे नारे री नारे दपटियो ।

छांगजी खेतसी बनी देर रा घायोड़ा घनुब्बाय रिया । नाना भात रा बंम मन में घाय रिया । रैस तो लोहिया नू सलंबर भिया कंवरजी घाय रिया । रीस में घाय खेतसी भाषो भुनियो । कोब में भर करड़ा बोल बोलिया ।

मू भययो आतां ही जंगां घायो कट बन् भग
मह सायो बहणो निमघ रगो टंकसा रग ॥

बोळ रंगा बगळ खुबत, तंगां खुबत तुरंग
लग खुबत घाडे रांमे, रगो टेबला रंग ॥

बावतां ही जग में भूँभियो । घ ब घ म बटाव न घायो । साल बांध बनी बमभायो पक रती भर नी भावे । रप है पारी बिदने ।

रगत में लपक ब्हेपरियो है । बस्तर नीचमा घ परतो लोहिया नू चुपरियो है । जोड़ा रा लप नू रगत दपटिया है । घाड़ी बार ठरबार मोही बंभरियो है । रप है बिही पर्व रंग है ।

बाबां सूनू भगियो पबरायोही केहरु बबाब बिबो "बांरा बोल म्हारे
पाबा ये लुन ब्यु लाकरिया है। म्हारे बाप म्हुनें नो मे बोई महां मे
मली भळायो। म्हुं मीठ सूनू लड न धायो है। बां माठा ही बाप
वै लुन लयाय रिखा हो।"

बांनजी भीमा भे बोतिया

धो साबिद भू धेकसो, जुलमो सुमड जमान
पतग जैम कूद र पडघो लडघो न डब सूनू साम ॥

म्हाय बाप ! तू एकतो बो बलाय सुकमी धर बोपो। पतन ब्यु तू
दूर न बडगियो। म्हाय माय डब सूनू तू नी लडियो।"

बा गुलगां ही डू परनी बोतियो

"बीं लुनमी बलाय मे उबरां लुनमी महां सुबी एक पुन मे बांरा भू
जमान न यो धायो है।"

गुलगां ही मांनजी धर गतमी रा मुडा वै धोर ही रंत धाबपी।
हेतबो तो केहरु रे डील वै पाब बोहा मजर धायो। भट बोई बपां
मुजरो वर मजर भीषी।

तीनु जपां तो कुनराय रा बीहा धोर ही बोर रा मरु भीषो। बोतियां
रो पन लुट भीनां मे केवे माही बाबां लुटे परीबां मे बाटे।

बनाल रे बरबा रो थवर मुय संवदमा रे लाव लावपी। दुगी चोर के
बागरिया के बरबो इमजान करायो। जपां जपां बांना मे बापीरा मे
इमनियार भडिया। केहरु मे बरब भी के लाग रो बने मार मावे जिन
के बरबान हुजार रो धर जिन न पकडावे जिन मे बभीम हुजार रो पट्टी
जिनया। धाल धीमाह तक बीं के भोगया।

छाँसना जाति रा भूजवा रे मन में लोभ घायो । बाँटै घाबतो बाबतो रेबै । कंबरची घँति घाटे मिले बह परँ घावा रो मनबार करै पम ये नी रँबे । एक दिन बुबँडा रा छापो मार बठी ने निकसिया । भुगणे-बुपट्टा पापड़ियाँ रा पपमडना बिछामा । पभी खँच न मनबार कीपी । गाँमजी तो नटिया पम केहर मामियो नी । बरे घाय मोड़ सु उतरिया । घटी ने तो याँ ने जीमणो बुँडबो कररियो घटी ने पाँगा में ग़बन मेब कीपी । रितालो घाय कोटही रे बीटो बे दरबाजे हूँतो मारियो केहर सिय बारे घाय ।”

तीनु जमाँ हड़बडाय मोड़ा रँ बडिया । बानाँ उठाय हिरण्यकाम सपाई । बांगरा मूची डंडो बूब बारँ निकसिया । निबळ घापताँ रेब पकड रितासबार पोड़ो बड़ायो “अरे केहर के हिरण्य ज्यु काई भाग रियो है पाछो तो फिर । मरब खेती एक हाथ बठा ।”

भुगता ही केहर बाप मोड़ी एक बुबाच में तरवार रो डोड़ो हाथ मारियो जो मक्कड रो भाबो बरती रँ पडतो ही नजर घायो । तीनु ही पोड़ा उड़ाव जालिया मिया ।

भ्रमला रो सारो कडू ब मैलो खेपियो ।

“अरवार ! अरवार !! री बोनियाँ चाक कानी बरमबा लागो ।

भ्रमला री माँ पेट बूटती बीसी ‘म्हने घानासँप रे बपन ही सबरें पड़वानी के घस्यो गोड़ोको म्हारी पेट में है तो ई रो भार ही मी भेजती ।”

भ्रमला री मुपाई गुलाबा लागी ‘म्हनेँ को खँचियाँ में ही लबर पड़वानी ई रा मात्रवाँ री तो पँचिये मोड़ बुबाटी रे जानी पप ई के मी परणगी ।

दाई बोली "बारा यां दुनां री म्हुने सवर बइ जाठी लो बममियो बबी
कुज्जी बावठी बपठ ही मळा ठक नम बाब बर्न बरो मारियो
म्हेली ।"

कंठळ भंमबसा रे घटे भिता ये लो रे बम म्हु कंठळ पायी ये रेवे
म्हु रेवे । कवर बी रा बीरा मुक नम बयो हरबावे । भिता घु
निबळय रा मग्नुबा बयावे । कयना नाई री वेन मे कुलाय भोकरि ये
राखी । बयो इनाम इकरार देव बी मे मरजीबाता ये कीची ।

"अबाबक बाप बर री म्हुने एठवार है । कंठळी मे बापक भबयो
है ।"

अबाबक बोली "बापक लिखो । बाप रा अबाब मे भंभू बापक री
अबाब लैव पाछो धावे ।"

कंठळ बापक लिख बी रे अठर लबाब सतीते बंती कीचो बपड़ी लपाय
अबाबक रे हाथ बीचो ।

बापक मे लिखी "म्हाय कामदार मुपडा र बाज अजमेर नू
घायपी है । बा लुटी नी बावे बी बाज रे भेळ बाप घ मराबाद रा
बहर ये बवार धावो । बडे अयबाज कीचो लो बारा मनोरथ
बुरख म्हेला ।"

अजमेर नू घ मराबाद बारा जावे बी मार्च एव देरा बइला री छाया
मे बांध रजगुन हयियारा नू अजिजपोरा बीटिया । बांधु ही एक नू एक
अबाबा । अजमेर नू धानाबा री बाज घाय री । बाज नू धागे एव बठी
छाया री बदा देवय मे धायो । बइला री छाया मे यां बांधु धिरदार

ने देख जाती घटक्रियो । घासीरबाय देय भई धाय ऊमो । पेसां लो केहरतिब समरु काळमो कापियो चतराई नू ठिकारो पूठियो लो घौर नाम मुल मन राखी ग्हियो । बी ब चड़ी बीड़ छेठ मे कहियो "घापां मे केहर कंबर रो डर बगो है । नू लो परबगघ वै पांच लो रजपूठ मेयर घापां जासियां ह्रां पन बार पांच सिरबार मूँ घबार देल मे घायो हूँ । पचास बरस री घमर मेय लीबी पन घस्या कठै ही देलबा में मीं घायो । बां रजपूठां मे बाज में मे लो लो केहरतिब रो घापां मे रली घब मीं । बाने सारै नियां पछै बाज नूट बाये लो म्हुने जती ही मठ बांय लो ।"

या मुण गमखो साहू बीर मे साय बां सिरबांटां री पयां लवायो । बन मोहरां पयां में मैल बीर बीसियो "म्हुनें घ मदाबाद परपाय लाबो । भंडा में केहरतिब रो डर है ।"

गेठली बोलिया "बचीतो री । म्हारै श्हीया केहरतिब दाब बाये लो गुरब घाकूणो ऊमे ।"

बाज रे भेळामेठ केहर तिब घ मदाबाद में बाय बझियो ।

बंबल री बामदार मु बड़े बंधायन जान मे लीबी । घाठीं घाठीं बबां बांनितियां रा डेरा शीया । टूनां मु घरा री हूबेबी घाईं बोरो देल बांग्जी गेठमी नू रो बात करली ।

मु बड़ बाय मीबबला मे बबाईं बीबी बंबल हुकन री लामील बरवाने राखी है । पन घरज लख है दस्तूर सारा हिम्बुबां रा भेना ।"

मैब" बरी "बंबल बडेना वनू ही बरु ला । जो बाबै बागज वं सिद्धाय ला ।

बरल बलयां री चरर निनाई १ बड़ा रो समारण भूे बाम्याक जी बेटयां बाईं । २ मायबील मोस बांग्जीर बबाबा बाईं । ३ बीड़ा री

राज नीलकण्ठी बार्न । ४ मैला में माहू बहारि बी बगल घाउसबाबी
तोपां छूटे । १. दुम्पक बिलन्दी में मारो देहबाठ छूटे । १ म्हारी डोड़ी
वै घावा टी कोई बाछामीर में रोक नी छूटे । ७. म्हारी यां म्हातां में
कई न घावे ।

मैलबना फरद पड़ घापी कलमां में ताबित कर बीपी । ब्योतपियां में
कुमाय कुडो रैरबारो मोरत क्कामो मोरत घाउफिका मय रो घायो ।

मोरत रे दिन ताक बहियां म्हातो में तबाजमो में टूना जबादुर में मैला में
बानी । घायै केहरनिय सस्तरां मू तजिपीका मय भियां बीठा । मोयां
में एक बानी बबहाय कंवरजी में म्हातां में बीठवा टी भरत बीपी ।
बैतसी हुयेसी में से मुपमाड प्रमल बीपी मैल के बार, उछरनी
कई कर बैया घाबजो ।”

बापजी बहियो “मैलबसा बानी बलकैत है । तपर रो कैपी है करैती
रो मैरी है । घबनां कपरळी घबजो छूटे । कळ बरिकां कई बाबोला बळ
बीपो तो यजब ठूं बावेला ।

बपी बपी बळबका देव कंवर के म्हातां में बीठायो घाडा ठकिया
लयाया । म्हातां रा बपाटया बड़ कोळी म्हांक डोपी बळ बीबा । कंळ
बायलां होनां टूनां केहर में मैलद रा निता ठे दाविल बीबा । कंळ
रा बीनां रा बीक में म्हाता के उतराव सापें के नीत है डोडीत
दिबाडां टी नांजळो लयाई । केहर में दुम्पक बिलन्दी में से जाय
बीठायी । कंळ बर्ण बाबना बीबा । केहर छिर छिर लड़ाई रे नामक
यां देगी मैलद के कुनावा टी घावत बीपी । कंळ टी मय घर गुठी
छाओ बरक री । बगवान काई करेला ।

न ली मैलद दुम्पक के जायां । टूनां घाम्ना लम्ना करनी लारै बानी ।
कं डोई न कुबरो बीपी ।

दूना बोली "हजरत री कमर जोमू । हबिमार उठार ठिफार्न रासू ।"

सैमर छा नटियो "अबार नीं ।"

दूना बाद बारें हुकम बीचो "बादमा मैल पवारिया । घातसबांनी छुटे तोपां रा केर रहे ।

तोपां रा फेर रा पकड़ाटा रहेबा सागिया न केहर कूद न सैमरता री पड़ियो ।

दोई मिडिया जाई भीम घर जरामल्ल मिडिया । अइम कुरब मस्समुट रहेबा सागियो । यां रा पनां रा अमाका नू दुम्मज बूजबा सापी । यां री अकर नू कांमरा कांपबा सागिया । बटी नै तोपां रा अमाका रहेपरिया । मिनतां नै तोपां रा अमाका धाईं दुम्मज नै रहेपरिया अमाकां रो पतो नीं सागियो । बारे घातम बाजियां छुट री, दुम्मज नै पुरबां रा प्रहार रहेपरिया ।

केहर न बाजियो बैल, कंबळ सैमरता न ललकारियो "घरे टीमरिया बेनी केहर री हापळ । मूँ पाई हूँ ईं सोम्हेरि नै मने मारबा नै ।

टीमरियो केवतां ही तो सैमरमा केहर नै छोड कंबळ नै मारबा नै लपरियो । अतरेन पाछा मूँ केहर सैमर री टांग पकड़ रहेबी । टांग पकड़ न पछाटियो जा सैमर रा सागडो प्याटगियो । छाती री अड़ गोडियां मूँ घुप ग्हाडियो । सैमर रा हाता छाता लोहियां मूँ घांनडी घर दुम्मज री बीड री पाडियो

"मूँ केहर, ईं सैमर नै बीजर री मोठ मार न बड नै नै बापरियो हूँ ।" दूना अट घ्याना सैं केहर नै घर कंबळ नै बँठाय भायां नै हेनो पाडियो जबाहर बाई नै पाछा केरे पकरावो ।"

जावती सयी हुकम देती थी की सैयबसां रो हुकम है भाटी छठ बपार
सालो बार्न बोसदिया बुड ।

बोड़ा कसियोड़ा डेर री तपार हा कबळ मे पूठ पाछे केहर बाधी टूना मे
सामिनी बांघ बोड़ा मे सहर पनाह रो डंडो बुधानो ।

नागजी

सोना री निजर घासमान साम्ही सामियोडी कट्टे ई बाबळी निकळतो वीसे । गुरीयो पवन बाजे न घालियां मं घामा चमक बाजे 'सूरीवी बाजिया हे घब मेह घावेसो ।' बिडी ने घुसा में कसोळ करती देखे सो नर्न बंठियोडा घादमी ने घाल्येटी करमे बत्तावे चिडकलियां घुळ मं न्हाय री हे बरसा घावेला । घामा साम्ही घालियां पसारी घुनियां ऊभी ।

ताती बळनी घुषां घाघोई वीठ लोही वीचो । नीठ नीठ घटाइ घायो । घसाइ मू घबी घासा ही । सोप बाजरी बीजळ ने प्रमयाय रिया ह्य । घामा साम्ही देखतां देखतां घताइ ई उतर दियो । साबळ उतरवा घायगियो । लोनां मे बाळ घामे ऊबो दीगवा सामियो । हांडा मूला मरवा मागिया । पीबा रा बापी रा लसाता पडगिया । पांच पांच कीस दुरां मू पीबा रो पानी लाबा मे ऊटा री बीसटां जाल री । बाभियां घान न घरां में जाल लीया । उपारो देखे मीं । जे हाणां विच मे ई उपारा हे ई दे तो दूची बाही माडे । मिनळां रां मूडा पिठा मू पीबा पडरिया । सोब हाब री हाब रीया बंठो । घाब काई मीं घाकास साम्ही जावना घर बाळ री बाठां करयो । बाबळ हे बाळा रा घर रा घोटा मार्ये पांच ताठ जमां बंठ बाजे घोरमां रावना रोवता री ।

"चडवियो बाळ वरयो ।"

“भाऊ सूरिबो जालियो तो हो भयवान करे भसी तो हत्य बाई मोडो है।”

“बलबापो सूरिमी एक पड़ी नी जालियो र बनलियो।”

“एक हाथ तो बरम ही सी। कोई कुबारी तो राह नी रहेता।

“मियमो डोकरो कंबतो घासा पीज जे मुयन तो बोला श्रुवा।”

बाबल दे बालो भाबल हिमावता बोलतो, मुयन बोला धे र मारा धे।
कल्ल तो नाई बंधलियो।

परमाते गहू डंबरा पुर्वरा तपन्त

रारु वाजे बायरा, बेसा करा गछत ॥

दे मपला घहनाम बाल रा है।”

“तापी बाठ है बा दीन पढ़वा पारै तो दिन बहतर बाजै। देखजो पूरा
बहतर दिन गाबेसा।”

“बहतर दिन लाख्या तो मर बाबासा भुकी मीठ। जन मरक लाज ही
मियो। रोत्र लज बो एक बो हापर मरिवा नीमरै। ग्हापी मरर पाप
घान बेनकिया बखरी। एक से छेर घाठ कुक बेती हो।”

“भारी भुरी मोडो टेक बीबा। बी बीत ठा विमापोड़ीज है।”

भुला बरना कुन मोडा बी टेके। जे मपली बेनकिया बह ला।”

बाबा भूँ जापु बन जे जराता जे बाबट मे दगवा जे कट्टे ई लीमी
बापी नी। घासा घांपगो बरिबो है। कोई कु नापा पाधो घारे बरी
बा न मो के मज बायो, बांरी घालिया भू घांनु बर।”

गायों के धाँसियाँ मू धाँसू पकवा रो नाम लता ई छोटा वी बीडियोका लमझा रे भीक वी कमकनी धाकपी । हुक्का रो फूक लँचतो बाबले दे बाडो बोलियो "मऊ लो मकां हें मरली । डामर मराबन बाबलो जों में बाई । बतरा बेवा निकट जावा बनरी जिवाबरा रो मँर हू ।

बाबा बुडा सवजा ई हू कारो भरियो "मऊ लो हातमा ई पडपी ।

घाय घाय रे घत मिमल बज्ज काडबा ने गाब छोडक लागिया । बोई मऊ माझरे बासिया कोई घायरे समा परमंगी रे गुजाळ बाजी बागमा जाम बेँटिया । बाबले मी ठा लायी पाटप में जमानो बोलो । घमाइ ने माबय बरसता निकलिया । घाठा काठा रे छापे मरागडाजी ने ममाचार बुलाया "बँबो लो पाँक सात पहिना पाटप घाय जावा । म्हाघरोजी पाबळ है रो जूतो बित्त । पाडा हेत । अबानी रा पका भेस माये करियोडा । बाकडोमी पको छपी श्रियो । ममाचार बीइता अबान रे नारे म्हा भेजिया ।

घाय जाबो कारो कर हू । कमरबायो लीनो कारो जमो हू बुहार सेता मे टट्टा" वर री हू । नादिया में बापी पबोळ लाय रियो हू । बाडा डोर बगाइ लौरा बिबा ।'

बाबले बाडो पैता ई आगतो के पाटप मू ममाचार बाई धावेता । बाबा बुबा कर रागिया हो हुक्का पी फूक "ए हेमो पादियो "नामनी ।"

हाथ के घळीयो भीबा लाबला रन रो बापडो घाय जमो रियो । गाबर पाबड लाने दग पटप रिया बाँड़ी फटी कपी छानी बसियोही मरीर । मत्था वें पैटो जिरा पाटा पडमियोडा ।

घरे नाबडी म्हाघरई बेला पाटप हातनी हू । वें बीके पापी बाकी

मे । छि छि नैसो काटला ।

बाबड़ रा भूटका रँ मारे 'हो' कँतो बको नामकी जि मस्त बास नू
बासता घायो बी न बास नू हाबा मे घबडोका मे घबडोका घायो रा
बाबा मे परीमिया ।

* * *

भूटकोकी बाप मे बाब पास बाबसरे मू मिलियो । हीठा वँ मुळक
घर घालिबा मे मेहु भरिया पोळ मे मेजाय बँधिया । नामकी रा माबा
वँ हाप केरयो । 'बनँ घतराव माटा ने देखियो । घाँचळकी पार हे ?
ई नै मोर मे सीसो जयी ई फारी मू छाँ पकड छकी सो ।"

बीई होकरा लामे हुतिया । नामकी री मुखा पकड न बवाई 'दिनु
बमरत करँ के नी ?

मुखा री बिबकियां जयी सयी । घाँचळी लानी बाबँ सोहु रँ घड़ी मू ।
गठियोही भुजा बेर राकी गिया । पूर वँ बापी बीपी ।

रँबाने घर बतय बीपी । डावर बाबबा मे बाबो देव बीपी । नाम
करबाने लेत मग्गळाय बीपी । नामकी गत म नाम करँ । घाँचळरे
घर भूटकोकी छात्रा मे माबा बास न बँठिया बाठा रा चटकारु
मारँ हुकरा रा लटकारा लेब ।

बीई होकरा 'प'छाया रो पाइली पीली बमङ्गीम रा बजा ग ।

नामकी री भाखाई बिलोबना करँ, बापा दूरे बचरो बुहारो करे ।
'गठियां पीर नामकी माऊ गत वँ भागो स बाबे । नामकी गत मे बाबो
नाम रगियो माजा वँ बँठिया घटपोकी बभाबँ ।

भूटकोकी री बेटी नामबती । बरन घट्टाराक री । नारळ बस्या
बाप वँ बँबा रा भार लिया बापा दुहा नै बँठि जयी लटकी बोटी नै

सुपारा में देख देखा बाबू बरप बाबू रूँ कठै ई बासक नाप लो नीं
 बुड़ रिया है । भाटो भीमबती बल्ल गैहूँ री लोभ र बीरा हापा रो
 रक एक मिल बाबू । बट्टी केरती बाती नावबती मगिसारों गाबती
 लो बोट में बल्लियाड़ा हरबिया करवा छीइ हागी रँ पछमाइँ घाय ऊमा
 रै बाठा । नावबती रँ घर नापजी री भीजाई रँ बचां हेत ध्येनिया ।
 दोई जमियां साथ बँठी पीसती बाने घर पाबती बाबू । बडी एक पीस
 न साबरे । एक बिमाबनों करे दुखी बाबबिया बोवे ।

नागजी री भीजाई घाबल्ले मे भीमाय जु ठाय बही री हाडी र रोटिवा
 भाबू मँल अत बें नागजी मे भाटो ईबाने वाली ।

नागबती बोली "घाय मूँ ई बापु ना रँ साबू ।"

"बासो ।"

दोई जमियां बोट वाली । हरी कच जुवार ऊभी । काबर मतीरा री
 बँलियां पसर री ज्यियां पूट री । तिलां रा मीइ गैहगाम रिया ।
 बाट्टा रँ बीठियो नागजी पल्लभोजा रँ मस्त भिुवा 'तेमो' बजाय रियो ।
 नागजी ब बाई मस्त ध्येय रिया । जुवार ई बीं राय मे मस्त भिुवां
 भेना घाय री । हिरण मस्त भिुवा भूम रिया । ये दोई जमियां
 घाने बाबती बाबू ग्यु बायरा मे जरियाड़ी मस्ती री सहुरां या रँ
 ई मस्त करती बाबू । बाबड़ी कने बीं घाई लो नागबती री निजर
 बडी घुटा मे लाल रंग रा पव मँदियोड़ा । बा घबग्गा मू देघवा लागी
 "ये वम कुच बाबिया मस्या ?"

नागजी री भीजाई हुंती "वम बाबिया नीं । ये लो नागजी रा वग है ।"

"नागजी रा वग ? लाल रंग रा ।"

"हूँ । नागजी बाबू घर कहुत पबनिया मँदता बाबू ।"

मे । ठंडे ठंडे बीसो काटता ।

पावड़ रा झटपा र बारे 'हो' बीतो बको भागजी जि मस्त बाम मु
बामतो बापो बी ब बाम मु हावा मे घबपोजा के उछाळतो माया रा
बाबा मे परोमियो ।

आराङ्गोवा बाब मे बाब बास बाबलदे मु जिनियो । होटा र मुजक
पर घागिया मे मेहू बरिया पोळ मे संजाय बीटापो । मायजी रा माया
वे हाय केरपो । 'बन' घतराब माटा मे देलियो । बाबलजी पाव है ?
ई मे गोप मे मीचो बरी ई म्हाती मुछा पवड सीची जो ।

बीई होकरा तावे हुनिया । मायजी री मुजा पवड न बवाई बेगू
बमरन करे बी बी ?

मुजा री जिहकिया बरी मनी । घायली मानी जाई सोहू र घड़ी म्हे ।
पटियोही मुजा देग रात्री श्शुया । पूठ र बाधि बीपी ।

रवाने पर बघाय बीचो । डारर बांधवा मे बाङो देव बीचो । बाब
रवान मत्त मग्गळाव बीधा । मायजी घेत मे बाम करे । बाबलदे
पर घागारोत्री काजा मे बाबा बाम मे बीटिया बावा रा कटकार
मार हुकरा रा मटकारा मव ।

बाई हाकरा 'पराघापां रो पोडवा पीचां बजदोग' रा मजा मे ।

मायजी री बीजाई दिनोवणा करे, माया बुवे बचरो मुहारो करे ।
पटिया बीव मायजी माऊ म्गन री मागो न बावे । मायजी गन मे बाळो
गन रागियो काळा री बीटिया घटपोजा बवाई ।

घाघरात्री री बीटी मायबनी । बरन घट्टाराक री । मारळ बापा
बाम री बीना रा बाट निवा माया हुवा मे बीडे बरी मटवनी पोटी री

सुपारा में देव देवता बाबा डरप जाई सै कठै ई बासक नाप तो नी
 बड़ रिप्यो है। पाटो धीमगती बंड्य सैहूँ री छीप र बीरा हावा रो
 रन एक मिल जाई। मदी केरती बाती नाबबंती मगियारो नाबती
 ता बोट में बन्दिमोहा हरबिया करबा छोर हाणी र पछवाइँ धाय ऊमा
 रै बाता। नाबबंती रै घर नागजी री भोजाई रै मया हेठ ब्येपिया।
 मोई बन्दिमोहा साने बठी पीसती बाब घर नाबती जाई। बडी एक पीस
 न साबरे। एक बिलाबमों करे बुजो बाबबिया घोसे।

नागजी री भोजाई पाबबरे मे जीमाय बु टाय वही री हांडी र रोटिया
 नायँ भन बन में नागजी मे भातो बँवाने वाली।

नाबबती बोली "घाब म्हुँ ई बामु पा रै छाये।"

"बानी।"

मोई बन्दिमोहा सत बानी। हरी कथ जुबार ऊमी। काबर मतीरा री
 बँलिया पसर री बन्दिमोहा वृष्ट री। तिला रा पीड़ पैहूपाय रिया।
 माजा रै बँटिया नागजी धलपात्रा रै मल बिया ठेको बजाय रियो।
 नागजी ब बाई मस्त भैर रिया। जुबार ई बी राय मे मस्त बिया
 भोला घाय री। हिरय मस्त बिया ब्रुन रिया। मे बाई बन्दिमोहा
 घाये बाबती बाब म्हुँ बावरा मे बन्दिमोहा मस्ती री लहरा पा रै
 ई मस्त करती जाई। बाबरी बने बँ बाई ता नाबबंती री निजर
 बड़ी पुत्रा मे लाल रंग रा बग मदिमोहा। बा घबम्भा म्हुँ देपका मागी
 "मे बब बुन माडिया घाया?"

नागजी री भोजाई हमी "पय माडिया नी। य तो नागजी रा बग है।"

"नागजी रा पय? लाल रंग रा।"

है। नागजी जानै कर बपुरा पयनिया बँड्या जाई।"

“ए है है है ! नाकबंदी हूँगी ।

“साँची का मानो भी ।

नाक की घबग्घा मू देरती लगी बोली “जाबा को मूने ई वैली कर
रिया हो । घग्घा पाँच देकर म्वाय ई ।

“बैली बपू कर ही हूँ । साँची बाठ है । नाकबी उमान कर न निबळ
अर कंठुप पपनिया घंर ।”

“मूअ कडा रा ई ।”

“मू कूटी भी । का मूअ ।

“सार्बनाम का मूठा हो । बकुरा बपनिया घंर ? बली घतक
बापी है ।

“नाकी ह्रीड मारा । काई देवीना ।’

“बा देवी को ई ।”

“ओ भी हारगिया तो घाँर मूरा बकर न परनाव देवूँता ।” मोसाई
उकीपी ।

बनुर । घग्घा को बांग टकर श्मेता तो बरप जान ता ।”

नाकबी घातरी कुन से घग्घा घग्घोको बजाय शिबो । मोसाई काय
हैतो बाशिरो । नाकबी मोके उगरिया । नाका रा बट्टा हल्ल रिया
एक मरु लमाद नै मटव ही मुजिमोका नैब । उपाको डील घन घन
बनिबोरो । नाकबन्दा नै लानिबो बाणि नाकबी से तरीर साँचा दे
[इतिरोरो है ।

भोजाई बोली, 'बाबो वैसा सनान कर घाबो पछै पकू मू ।'

नापत्री बाबड़ी में आय सनान करवा लागो । भोजाई नापबंती में तारै लजाय बड़वा नीचै ऊभी री । नागबो सनान कर निकटियो । सुअ रै नमस्कार कर जालियो तो उअ रा पयमिया बंकुरा मंठा जाई ।

नापत्री री भोजाई नागबंती री घाँबिया म घाँबती बोली बीनो हारी के बीती ?'

"बै बीतिया" । नागबंती नीची नाळ्ठी पय रा घ टूटा मू घोळ संबती बोली ।

"घई होड मारी का पूछे करो ।" नापत्री री भोजाई नागत्री साम्ही घाँवर मुटवी ।

"कमी हीड घाभी ।

"या तो नागबंती नै पूछी ।"

नापत्री नापबंती साम्ही जालिया । नागबंती नाअ मू राठी पदमी । पनीनो घायपिया ।

"नागबंती हीड मारी के घाँ देबर रा जो बकुच पयमिया बदे तो मूँ परप बावू । हीड में हारणी जो घाँ घाँ बरणावू ई नै ।"

नापत्री नापबंती साम्ही जालिया । घप नै जालियो घाँ बीरो मन नागबंती रा बेठा में उट्ट मियो । हाबर नैसा में पूज मियो । पूर पूज नाअ बीबा री निअर एक व्ही । वप ई पूर पूज मे ई बोई पवाँ का नार लकड मिया जो पदगरा मय अब में ई नी ममभे ।

"तो बचन पूछ भै जाई ।" नागत्री री हाव घदजाँदिया ई घपरो घा

हुण्टो भँगायो ।

हुण्टा टी नेत्र के मुखा रे लयाय बाळ बोर नू ताटकारो नेत्र
भालडाजी के भँगायो ।

घमल के बटोरी में लेय घायली भर न छाटा देय भँगाते कर घमल
के रग बीबो ।

रंग रामां रंग सद्यमणां, रंग दसरण रा कंधरांह ।
मुम रावण रा मांगिया भासोजा भंवरांह ॥

मारें रो मारें भालडाजी भगाते बीबो । भँगारा टी ठोर भगाटी
मण्डाडोजी सोबा के घमल भर न रंग बीबो ।

रग उईपुर रा राणां नै

रंग रूप नपर रा बापां नै

रंग बडोवर टी बाबी नै

रंग बोटड़ा रा बोगा नै

रंग नेरना रा घमराणा नै

रंग कपारै मस्मिनाय टी रापी नै

रंग सीठा रा लत नै

रंग लछमण जती नै

रंग लौक्यरां टी घाल नै,

रंग मायजारी टी जवान नै

रंग हुबीर रा हट नै

रंग महाराज रा इरट नै

मम रो लोबो भागरोजी बाळा रँ होंटां रँ लमायो पूरा ताबा के

बट्टापन बाळ धम्मल रो जर खोबो भयबडाची रं मूळा रं लपायो ।
दोई जयां खेबारा कीया ।

कमूबा रा व्य ना मि नजर बडाय बाळें धम्मल न रंय देमो चाटी
पांसयो ।

जै काई हाताग्यी करो तो
बगदेव पुवार कीबी ज्यु करवो
जै काई धोटादीडावो तो
बनडावतां बीडाया ज्यु बीडावता ।
जै काई मुगाई घाप परल बीद परणो हा
पात्रसाहू री ताहूबादी परमी ज्यु परमजो
जै काई मुपाई परादिया सू मन फाडो तो
पद्दा बीरम दे नै कहियो ज्यु जै बीजी

दोई डावरा धम्मल रो एव एक साबो नवतां बीमिया

एग मधु मामती मेहू शिबज निभाया
एग बीरमदे रज्जून शिरे बिणपामी मक भाया
एग गोडा बाळा रंसि घायल पर बीटां घाई
रंग होना रज्जून पदमप साक पाई
पदम पुत्री रंग छं पद्दा लोचन बीरम भी भाविया,
लागा बाशां मोह नै घाय परा नै घाबिया ।

दुवरा बीर रिया छंघारा बर रिया बन्नुबा री बनवाछं चाल री ।

“म्हारी सार किम तर बारी ?” मुदाई छ सार रो बनकारो बोबा

देई काना में पड़ियो । सारै रा सारै पावनी रो बंड गुणिवियो
 "पौ मे भागी ।"

"पौ घाई नही ?"

"पौबाप पहिया पावट्टे बाटा ही घाय ।

"अपट्टेजी ही घाय जो बरि पौबाप पहिया रहे । मामो ग्दारी
 सार ।"

सार सोमती ही बुटिया गजरी । भागदोत्री घर बाजा दोई बमकिया ।
 कूप ? नापत्री घर नापवती । रीम में घर न बाजो माडिया
 कानी लपकियो । सारै घालाओ भी भागियो । घाय नापत्री
 घर नापवती सार ही सोसा रानी कर दिया । नापत्री
 बाप न देघ ईक सार न भावियो बाजै मा न धावा ठांगी करता
 देसिया ठो ठेस नू उकट्ट पियो । घटीने बठीने अकियो कुचा मे
 केतकी पहियो उठावन बाहिया नापत्री माप । नापत्री बाजा रे घीन
 घायवियो ।

रोस करै भकौटिया हायां छुटया संस ।

धौगणुगारा माग रे, घामी घाय्या घस ॥

बाजो नल उगाव बाजी मारवा लावियो बतरै भागदोत्री घाय बाजा
 रो हाव पकटियो "मजब करै । ई न बनु मार दिया है । मारयो
है ता छोरी न मार । बंस न बनु बाटे ? बंवा रो बार्द दोम जो बैतही
बी रे बिनु न बार्द ?"

बाळा बाड़े बैस बंपते नै बाड मतो ।

घपसे नही ज दोम बंपे बिनु की देसदो ॥

नागजी गई नाटगियो । नागवंती भीरु उतरली । बाजो रीस में ऊभो ऊभो घुसाहा मार रियो । झूठ जाबरियो । “नागजी रो मझो भीरु हू । नामायक ई ज बर में रीस में करम ।”

बाई होकरा घममना बंठिया । बाजो दुखी बको बोसियो “नागजी बपुत निबलियो । घममो ई नै भी जाबियो । एक तो पां रं बरं घाय घबली बेला में रिया । ई घोमबपारे दुख रो बरमो यो बीबी ।”

भातहोजी नीलो छाटो ग्हाबिया “रीस नी नागजी रो हू नी नामवंती रो । दोन घांता दोना रो ई हू । घापा त्याघां लमरुमां बूंगा / भी न घर बामरी मे एक ठोड़ भेळी परो रासी ।”

बाजो बीजियो ‘बाई रो ब्याज कर देबं मे ई सार हू । तपाई हुयो ही हू ही ज । पन देर क्यू ?”

जग ई ज दिन बामन न बुनाप मेहा नू मेहो नाकी बैराय मिघ में नूपरा बर्न देर बीयो । ब्याज री नाय बयो सक बीयो । नागवंती रो मन जापों सक बीयो ।

मीको देग नागजी री ओजाई री सार एक दिन नागवंती गई नी । नागजी पुठियो

‘घारा गाथा बिरल गिया ?”

हां रिज दल बाया रिबा हू ।” मुनियोही बीज नू नागवंती बोली । ता में बोला रा टंभना मिलया हू । पट्टे नू क्यू बोतबा नापी । धुकरा रं सार जाबना ।

नी नागजी नू घांठि जो बारी ब रंहु ना ।”

“रहिमा, तुम्हारा रा नाई भरोसा। सुमरो मोटो मनन मूँ परीब
घारमी।”

“नागबी प्रीठ घमीर नै घर परीब नै नी देता। नागबती बळमळी
झुपी।

‘डबुमो मर न मोना रो पणो घाबेमा जरी नी नागबी हीरता घर
नीं या प्रीठ।’ नागबी मू हो मरोव सोमी मागियो।

नागबती री घागियो मे वाकी घागियो व बोल मठी बोल, नागबी।
मन मेळू मिसयो जा मिसगियो। दुनिया मे पना ही जना हे वय वा
मू मन बोडो ही रळ।”

नागा नागर गयाह मन मेळू मिसिया नही।

मिसिया घवर घणाह जा मू दिन रळिया नही॥

नागजा बानियो मन मळ र तन मेळू। र्बवा री बाना हे। घारमी
धीरे जतर बीरी जुगार। मरिया न परया री घेनी देर नी सगार।”

दाडी नेण र दाग, गिर ही माघे घालनी।

(पण) दुरी पळारी नार मुबां पर पर मासमी॥

नागबी री बरती बाना गुय नागबती राव बीयो।

“नागबी घमो बरदा मत बाव। पै जुगाया दूरी झेपा। घारमी
जुगाया र मार बर ई मरिया? मे जुगाया ई व री वा मार प्राव
वे दे। मे घारमी ज घम्या मे जा जुगार र। बगान र। बागदी नी
कुळे बळ रीनी दूरी म्गाव करन। व ता रीना नागबती रो मळो
पुडवा लावियो।

“यू म्हारा बिना भी रूँ ? नागबती भीमळिया नैकां मू पुठियो ।

“रूई ई बीबती भी रूँ या बिना । नागबती री घालियां मू बीतरा छुट गिया ।

नागबती रीच म नागबती नै घानरे पागती बटाई । घ गुरबी रा पन्ना घामू पुठिया ।

“रो मत । म्हुन धुन जा । करम मे योरी निगिया घांरा रूँ । यू सारी सांतण रूँ । म्हारी भिम्बती तो घान बिना मसाण ग्हेकी ।”

राय घोय नागबती घरे घाई ।

बो दिन ई घायबिया । मूमरा री जान घाई । तोरण बंपियो खंबरी रपी । तोरम मार मूमरो खंबरी मे घायो । आराखोबी बैटी रो हाथ मूमरा रा हाथ मे टीको । इगळेको ओठिया नागबती पासाग री मुठली ग्हे ग्यु ऊभी । म्हाकारो धंजायो । हम हम होम बाब रियो मुदाया गीत गाय गी । भाबा रूँ मो- घांयां मूमरी मुछा वे रूँय रूँय बंट रूँय रियो । बायल मंतर बाय रियो । घाला बिलर रिया ओ एक ऊदरी पदरती गणी घाई । बीर रे बने पडिया लगा घाला ताबती मूमरा रा बाग री चाल ग्यु चालो बीपो । मुदाया हुंपी ।

मूमरा नै घाई रीम “रांठ गाना बने ई पन्क पदक करे ।” पण मु बाइताई बरदंगु पगरगी रोरी ऊदरी रे ओ दुइगी बटई बापरी । ऊदरी मार न मूमरा भी मुछ वे हाथ टीया । मुदाया हुंनका सापवी । घनराज मे मामूबी घायो । ऊदरी नै बरी देण न घामू खेबी “न बाई मो पदक धुन दूरवायो ।”

“सुमन, सुभाषा च नाई करोता / सुमरो मोटो मनन मूँ पठीब
घादमी।”

“नामजी प्रीत घमीर नै घर परीब नै नी केई। नागबती गळपळी
सुकी।

“इसुमो घर न मोला रो बंभो घाबसा जही नी नागबो दीसैला घर
नी या प्रीत।” नागबो मू हा मरोर घीमी मारियो।

नागबती री घांगिया में पापी घामपिया “य बोम मती बोम, नामजी।
मन मेळू मित्तयो जो मित्तियो। दुनिया में पना ही जना है कच ना
सु मन बोरो ही रळें।

नागा नागर गयाह मन मेळ मित्तिया नही।
मित्तिया घवर घणाह जा गु मित्त रळिया नही॥

नामजी बोमियो ‘मन मेळ र लन मेळ। बंभा री बाना है। घाबजी
बोई जगई बीरी सुपाई। मारियो न परादा री झेती हेर नी लपाई।”

दाडी वीग र दाज गिर ही गाथ पालवी।
(पण) छुगी बटारी मार सुपां पर पर मातसी॥

नामजी री कटकी बाना गुण नागबती राय दीयो।

“नामजी घायो करडो मत बाप। नै सुगापां छुनी झेपा। घाबजी
सुभाषा रै मारै नई ई मरिवा ? य सुगापां रै क छे जो मारै प्राण
है हे। ये घाबजी क घापा छे जा सुपाई रं मघापां री बागदी नी
कुमे बड नैनी सुकी झार करता। बंभा बंभा नागबती रो मळो
सुडवा नामनियो।

“यू म्हाारा बिना भी रै ? नागबनी बीघटिया लका नू पुछियो ।

“कई ई बीबती भी रैबू या बिना । नागबनी री घातिया मू बोमरा छुट गिया ।

नागबनी रोब न नागबती नै घातरै पाखनी बँटाई । घगरखी रा पस्ता घामू पुछिया ।

“रो मत । म्हन भूब जा । बरम मे पाही भिगियो घांरा रै । यू नाही सांतरा रै । म्हारी बिस्वगी तो बाग बिना ममाण रूँगी ।”

रोय पोय नागबती घरे घाई ।

बो निन ई घायगिया । मूमरा री जान घाई । तोरम बँपियो बँबरी रबी । तोरम मार मूमरा बँबरी मे घायो । भागदोबी बेगी रो हाव मूमरा रा हाव मे रीबो । ज्यईका बोहिया नागबनी पासाण री मुरती भै मू ऊभी । मन्जारा रँधाना । इम इम होन बाज रियो मुगाया पीठ घाम री । माया वे मो बाघ्या म्मरो मुटा वे रँम रँम बँट देव रिया । बासण मँगर बाव रियो । घागा बिबर रिया या एक ऊदरी पन्तगी लमी घाई । बीर रे कने परिवा लका घागा साबनी मूमरा रा बाग री जाळ मू बाजा बोबो । मुगाया हुंभी ।

मूमरा नै घाई रोय “राट म्हाारा बक ई पन्त करव करै ।” पक नू बाजनाई बर्येनु पदरगी गौरी ऊदरी रे जा दुइमी बँटई बावरी । ऊबरी मार न म्मरा बी मुटा वे हाव रीबा । मुदाया हुंमबा लापनी । घतराज मे मापूबी घाया । उदरी नै पदी टंग न घामू बोनी म्म बाई या म्मद बुप दुइबाबो ।”

सुमनो घट छाती फुलाय कुछ वी बंट के बोलियो "यो बस बारै बयाई नै घायो।"

सपत्नी सुनायो ही ही कर न हूय बीयो । नागबंतो करम टोक सीयो ।
रीस तो घटी घाई के ऊमी झैँन सुमरा री घाई छाती मे एक माठ री ।
नठ जोरा नै प्यङ्क न म्हाकदे बबरी री सालबाइ मे । पप देबस
लाभार नाई करै । नागबंतो रा द्विबहा मे नागजी री मरत बयियोरी
"नद घरी कँय पूरा झैँ न म्हुँ बाऊ नागजी मू मिसू । देग झैँना
ई नागजी स बँधिर मे मिलन रा कीन कर राविया बा नागजी बाट
देस रियो झैँना । के बामन मोरा मे मोरो कर रिया है ।

बस मे घबनी बीरी केर तापा ई ज । मेव बस्तूर करता घायो राग
झैँबयो । नागबंतो रा जीब बन्ध बिनड कर रियो । झु लु मोरो
बाट बिहर मे यी । घाने नागजी भी दीलियो । बाग्ये अंधी माय मे
नाडी । बरकम्मा मे हैरिया । नठ ई नागजी भी । नागबंतो मे
घबरोन घायो म्हुँ तो घनी घबबाई देग वाली घाई है । नागजा घायो
ई भी । बिहर रा बामन मे जयाय न पूछिया "घटे नाई बटाऊ घायो
नाई ?

बामन बाबियो 'एक मोटियार घटे घबरी नाऊ ईटियो ता हो ।
बोरी ताऊ झैँ घबार बारे निबडिया ।

नागबनी री मन सुनायन झैँ बियो "घायो तो लरी म्हुँने घारनी भी
देगी जो उरान झैँ मे बरी बियो "

बा ई ज बदा लगे बानी । नाजा भीके ऊमी देव देग बाहियो

'नागजी बा मु घबरीज देर ई बिहर मे बानी उकीरनी घायो ।
घायो भीब उरारी म्हुँ घाययो।"

नामकी बोसियो नीं ।

नामबंती पाछी बोमी नामकी कसबा री बेल्ला या ई ब ई काई ?
नीच उठरी ।”

केर नामकी नीं बानियो तो नामबंती मायो

नामकी धोड़ो तो सूडे बोस रे प्याग
य फलडो डरपू परणी हो ५५ नामकी ॥

नामकी तो बोसिया नीं । टप टप करतो नामबंती रे भावे ऊपर सू
बू दा पड़ी ।

दिन बादळ दिन बीज, टपटपिमा छांटा पड़े ।

नामकी बानियो नामकी बट्ट ई उद्याम धे राय रियो हे जाय मनाह
उप हे । बट घाप माळा रें बड़ी । नामकी तो गूटी खैब पट्टवड़ी धोड़
न सूतो । नामबंती बाना नाम सूडे ई नीं बोसो काई ? नामकी
धरती घरजा मन कराबा । उठी बिल मन री बातां करत ।”

नामकी छाना मानो रियो तो नामबंती सू भळ्याय के बोमी

सूना गूटी तांण बतळायां बोना मही ।
बटपन पड़मी बान मारा करस्यो नामकी ॥

नामकी सू राय सूतो । हानियो तर नीं । नामबंती के धरणाई
पादनी, “नामकी या माराज होतो री कसले री बला बोड़ी हे ।
श्रीत हांता मन नीं हे का । छन के जाओ घर गिन वें छोड़ा ।”

तडक नट्ट मन नाह रे प्याण बतबागे रा तार उठ ।

सुमरो म्हा छाती कुलाय मुँछ दी बँट दे बोसिबो 'यो बस चारै जमाई
नै पायो ।

सपत्नी सुपायां ही ही कर न हन सीबो । मापबंती करम टोक सीबो ।
रीन तो घनी घाई के ऊमी धूँन सुमरा रै मारै छाती म एक गात छी ।
बठ जोहा नै चपड़ न गृहाकदे बबरी गी मातबाद मै । पण बैबस
माचार नाई करै । मापबंती रा द्विबहा मै मागजी री मृत बनिषोही
“बद घटी कैरा पुरा ब्ये न नृ जाऊ मागजी सू मिठू । केग घंता
ई मापजी न घबिर मै घिसर्न रा बीन कर रागिया बा मापजी बाट
देम रियो ब्येना । मै बामन पीरा मै बीहो कर रिया छै ।

बन मे घबनी बीरी केरा घाबा ई न । नेग बसूर कगता घायो गन
ध्येयसी । मापबंती रो बीब बज्ज बिज्ज कर रियो । ज्यु ज्यु मोको
फाट निहर मै भी । घाने मापजी नी रीगियो । बागौ भांरी माय मे
भाटी । बरबग्ना मै हेरियो । बठ ई मापजी भी । मापजी मे
घमरोग घायो नृ तो घनी घबलाई देरा भाणी घाई छै । मापजी घायो
ई नी । निहर रा बामन मे उवाय न पुठिया “घने नाई बटाऊ घायो
नाई ?

बामन बोसिबो “एक मोटियार घटे घनरी ताज ईटियो ता हो ।
कोरी ताज ब्ही घबार बारे बिबडिया ।

मापबती रो मन सुपावन ब्ये पियो “घायो तो लरी नृनें घायो नी
देमी जो उवाय ब्ये मे करो गियो ”

नाई नै ब बर्न गने जानी । माजा नीभे ऊनी देव देम पाठियो
“मापजी बा मु घतरीक देर ई निहर मे जानी उठीबन्ने घायो ।
घयो नीब उतरो नृ घायोनी ।”

नागजी बोसियो नी ।

नागबंती पाणी बोनी नागजी कतपा री बेज्या या ई ब है काई ?
नीच उतरों ।”

केर नागजी नी बोसियो तो नागबंती पायो

नागजी थोड़ो तो मू डे बोस रै प्याग
अ पन्नड़ो डरपू पणो हो ॥ नागजी ॥

नागजी तो बोसिया नी । टप टप करती नागबंती रै भाये ऊपर सु
बुबा पड़ी ।

बिन घादळ बिन बीज, टपटपिया छुंटा पडे ।

नागबंती जानियो नागजी कठ ई उराम धे राय रियो है जाय बनाव
उग के । अट घाव माळा वं अड़ी । नागजी ता मू टी सीच कटपड़ो छोड़
न सुतो । नागबंती बोनी पात्र मूडे ई नी बीनो काई ? नागजी
घनरी दरजा मन कराबा । उटो बिल मन री बातां करत ।”

नागजी छाना जानो रिया ता नागबंती मू भट्याय के बोनी

गुना मू टी तांए बजळ्यायां जायां नही ।
बन्दक पदमी पाय नारा करम्यो नागजी ॥

नागजी मू म मू गुनी । हाजियो तर नी । नागबंती के घबलाई
घायना नागजी या नागबंती हाटी री कगने री बेज्या बोरी है ।
वीन हांसा पाय नी है बा । टप के जाओ घर लिज में ठोरो ।”

तदक नरु मन नाडु रे प्यारा, बनवागे रा तार मू ।

मुमरो भट छाती कुनाव मुछ दी बंट दे बोसियो 'यो कम कारे जमाई
नै पायो ।

छमटी मुपावां ही ही कर न हम बीषो । नागबंती करम ठोक लीषो ।
पीत तो घसी घाई के ऊमी धूँत मुमरा रै पारै छाती में एक माठ री ।
मठ जोहा नै च्यड़ न ग्हाएदे बबरी री नामबाइ मे । पण बैबस
नाभार बाई करै । नागबंती रा द्विबहा मे नागजी री मुगन बमियोरी
"बह पटी चैय पूरा धूँ न मूँ बाऊ नागजी मू मिमू । देग धूँगा
ई नागजी मू बंठिर मे मिलभै रा बीन कर रागिया को नागजी बाट
देस रियो धेना । मे बागब बीहा मे मोहो बर बिवा है

मन मे घबगी बीटी केरा ताबा ई ज । मेग दम्पूर कगता घायी गन
धूँबमी । नागबंती ये बीब बन्न बिबन्न कर रियो । ज्यू तू मोरो
बाड मिहर मे बी । घादे नागजी मी बीगिबी । बागले भंरी बाय मे
नाटी । बरकम्मा मे हूरिया । बठ ई नागजी नी । नागबंती मे
घमरोन घायो मूँ तो घमी घबलाई देग भायी घाई हूँ । नागजी घायो
ई नी । मिहर रा बागब मे जबाय न पूछिया घटे बाई बहाऊ घायो
बाई ?

बागब बीबिजी 'एक मोटियार घटे घटरी नाऊ बँठिया ता हा ।
बोरी ताऊ धी घबार बारे निबजियो ।

नागबंती रो बस मुनाबक धूँ रियो "घायो तो मरी मूँने घायो नी
देगी जो उराय धूँ मे बरी रियो ।"

बा ई ज बदा मने जाना । माळा नीबे ऊमी देव देग बाहिया

"नागजी बा मू घमरीक देर ई बिहर मे बोनी उरीबली घायो ।
घायो नीबे उतरो मूँ घायो ।"

नागजी बोलियो नी ।

नागबंती पाछी बोली नागजी कतया री बैला या ई क ई काई ?
नीच उठरो ।”

केर नागजी नी बोलियो तो नागबंती नागो

नागजी घोडो तो मूडे बोस (प्याग
स फणड़ी डरपू धरणी हा ५५ नागजी ॥

नागजी तो बोलिया नी । टप टप करती नागबंती रे नागे ऊपर सू
बूबा पड़ी ।

दिन बादल बिन धीज, टपटपिया छाटा पड़ै ।

नागबंती बोलियो नागजी कठै ई जरास भे रोप रियो है नाप मनाडू
पय मे । अट धाप भाटा वं चर्चा । नागजी ता गूटी जेच पटैबड़ो घोड़
न सुतो । नागबंती दानी यात्र मूडे ई नी बोली काई ? नापजी
घतरी गरजा मत कराबा । उठो बित्त मन री बाठा कर ।”

नापजी छाना मानो गियो तो नागबंती भु मळाय मे बोनी

मूता गूटी ताण बतझाया बोसो नही ।
बन्धक पढ़मो पाम मारा बरस्यो नागजी ॥

नागजी मु रो मु मूता । हावियो तरु नी । नागबंती मे घबलाई
घायपी, “नागजी या नाराज हाणे री ममणे री बैला बोरी है ।
श्रीन हांवा मन नी है जा । उन मे बोस पर उन मे छोड़ो ।”

तड़क तड़क मन ताड़ रे प्यारा, बतपारो रा तार अड़ ।

सुनरो घट छाती कुनाव मुँछ वी बँट दे बोसियो ओ बस मारँ जमार्ँ
नँ धायो ।

सगरी मुयायां ही ही कर न हन बीयो । नाबबंती करम ठोक सीयो ।
रीस तो धनी धार्ँ के ऊनी धूँन मुनप रँ मारँ छाती मे एक तात री ।
पठ जोडा नँ पद न गूढाफरे बबरी री नामबाद मे । पप देबल
साधार नाई करँ । नागबंती रा द्विवा मे नामत्री री मन्त बनिपोही
"बद पड़ी कँध पुरा धूँ न गूँ जाऊ नागत्री गू मिष्ट । केग धूँना
ई नागत्री गू मंदिर मे मिलनँ रा कीन कर रागिया जो नागत्री बाट
देस रियो धेना । मे बामन जोडा मे मोरो बर रिया है ।

मन मे धबनी बीरी केउ गापा ई ब । जेप हम्मुर कगता पाथी गन
धूँयी । नागबंती रा बीब कळ विजळ बर रियो । बपु तु मीको
काड मिहर मे यी । धाये नागत्री नी बीतिया । बारती भोँची माय मे
गात्री । बरबम्मा मे हेरिवा । बठ ई नागत्री नी । नागत्री मे
धनरोन धायो गूँ तो धनी धबलाई देग भापी धाई हूँ । नादना धायो
ई नी । मिहर रा बामन मे जगाम न पुठिया "घने कोँ बटाऊ धायो
नाई ?

बामन बानियो 'एक भाटिबार घटे धनरी ताळ बीठियो तो हो ।
पीरी ताळ रूी धबार बारे विजत्रिया ।

नागत्री रो मन मुनायम धूँ यियो "घायो तो लरी गूँने धाबनी नी
हेनी जो उहाय धूँ मे करो गियो ।"

बा ई ज बदां गने चानी । बाटा नीब ऊधी देव देन' बाहिया

"नागत्री बा गू धनरीक देर ई मिहर मे बोनी उहोवनी घाना ।
घायो नीब जगरा गूँ धायो ।

नागजी बोसियो नी ।

नागबंती पाणी बोमी नागजी कसबा री बेज्या मा ई ब है काई ?
नीच उचरो ।”

केर नागजी नी बोसियो तो नागबंती बायो

नागजो पाइो ता मूडे बोम रे व्याग
म कलइो डरपू भणी हो ५० नागजो ॥

नागजी तो बोसिया नी । टप टप करती नागबंती रे नाच ऊपर सु
बूटा पड़ी ।

बिन बादल बिन बीज टपटपिया छटा पड़ ।

नागबंती आनियो नागजी बठ ई उबाम दे रोय रियो है बाब बनाइ
उम मे । बट भाप माज्या पे बड़ी । नागजी ता गुटी रोब बछेबहो घोड़
न गुतो । नागबंती बोमी “नाग मूडे ई नी बोसो काई ? नागजो
घतरी वरजा मठ कराबा । उठो बिल बन री बाठा कप ।”

नागजी छाना जानो रियो तो नागबंती मु मज्याप मे बोमी

गुता गुटा ताणु बठज्यामा बोसो नही ।
बनपक पड़मी काम, मारा करस्यो नागजो ॥

नागजी मु रो मु गुनी । हाजियो तक नी । नागबंती मे अबलाई
पादनी, “नागजी या माराक हीठे री बनने री बेज्या बोड़ी है ।
मीन होमा नागजी है जो उठ मे जोरो धर टिक पे ताहो ।”

तड़क तड़क मन ना- रे व्याग, बनयोरो हा नाग ५५ ।

मावजी तो हैं नीं बोलियो । मावबंती धनधीर भी । नीचे झुक घावा
 ऊपर नू पट्टबढ़ो डरी सीधो । देखे जाई । मावजी री छाती में तो
 मूठ छाई छुरी बस री । लोही रर बाबका परिषा ।

“ह्राब रे मावजी कटापी त्राप न भर गिबो ।” मावबंती मावजी री
 मास मू निपटयो । “मावजी नू भरियो क्यु । भरयो हो तो गहूँ
 बार न भरतो ।”

मास नू बटारी मे रोच न काडी । मन में धाई या ही ज टुरी छाप न
 भर बाबू । ह्राब छापी तक बिबा पन दूर गियो । बटारी मे बँवनी
 बयी बोनी “ब नुजाई जान रा माव नै ई ज शाय मयाय बीधो राउ
 मावजी री छापी रे पार ख्येता बने माव नी घाई ।”

बटापी कुनाट, नू बँवठकी बिरधी नहीं ।

मास तगै घट पाट, सोहा बाट्टी साजी नहीं ॥

मावजी री घागिबा मूनी बडी मावबंती मे सागियो जाले मावजी बी
 मे देल रिदा है । बी रा लाम्हो खोच रिबो है । घागिया ई घागिबा
 मे जय मे मजीब घावा मे बँव रिबो है ।

मावबंती माव रे निपटयो “मावजी जठे नू बटे गूँ । नू गहूँ छोड़
 न बरा बिबो तो जाई गूँ तो बारे लारे री लारे हूँ । घागा लपला
 देपला हा मोट बांध न मिलका रा । बा मन में रँवी । बुनियां मिलका
 नी बीबा । नग मनाबा रे माय मे लीरा री केर पं घागा मे बिबता
 मे कुन रोके ?

मिलका री मन माँज माड़ बांध बिबिया मरी ।

मिलम्या बगागाँ माँज गौरा माये मागजा ॥

म्हारा मापजी म्हारी घाठमा रा घाठार के प्राण देव बीबा का ठो
निभाय पिबो बगो बोई पुरज घाठ ठाई निभाई नी ।

काजळ जिनरो भाग, घास नैयां मे से चालू ।
म्हारे घाठम रा घाठार, मवी निभागो न गजी ॥

एक दिन मापजी ने म्हें कहियो क तो सुपाया ई ज खे जो घाठवी रे
कारे बीब देदे । पुरज ई बई ई सुपाई माळ प्राण बीब हे । मापजी
तो मापजी निजळियो । घरे म्हें बीबती रेवू तो म्हारा बस्यो पामर
कोई प्राणी नी । सुपाई जाल रा माप हूदे ? मापजी बस्यो बीब कारे
ई बीब नी हू तो फेर बाई ? मापजी बस्यो हेरिबा नी ताके ।

माग सरीया सैरा र, पुग में जोया मा मिले ।

मापजी एक काम घाम लोल न म्हार घाम्हा मांज मा । एक शंज
तामी एक दाप म्त्रमें बा हेमो ही मार जो । या री एकर बोभी मुज
मू । म्हारा माप ई माटा के ऊपी ऊपी म्हें भुजक री हू । २ वरसा
रा वरसा मू हजमा पू छनो ग्गु एकर म्हारा घांजू ता पूछ दे । मापजी
मे बस्यो करवा बसबोलमा बपू नीया । बास घट्योजा री एक टेर
तो सुपायो जातो ।”

कोहिमां मे भरिया घट्योजा के उठावो । घट्योजा के छानी रे मपायो ।
“घट्योजा वन मापजी मू हुनो नी रागु । घापां बोई मापजी रे
ताके कामण्यां । घट्योजा के बांजरो में घाजियो । टप टपी मपाय मे
मापजी के हेमती री । “घरवा संज म छोड बई ई बीबनो रीबती
घावे । जटे रीबाना घापां ताके हू रीबाना ।”

मापजी के पठेवरी मोहाय मापवती बीब उतरदी ।

सज्जातर री गज्ज वै बबळक कुंभो मीसट रिबो । सुसरो मबी परनी
 बीनची मे घरे ले जाय रियो । टण टण बीनियां रा पळ्य री ठोकरियां
 बाय री । रबाडा मे परलेनु एगस घोडी बीनची बीठी । हाची बांत रो
 चूरो बनक रियो । हजळेबा री मेहरी बनक री । जानियां रा
 राजायोडा ऊड घावा पाळा जाय रिया । म्प म्प करतो रथ सज्जातर
 री गज्ज बने घाया । बीडतो रथ एवदण दकियो । म्प म्प करती
 बीनची मीन जगरी पक बगती बिता मे कुडनी । जानिया घरेरेरे
 करे अगरे भाळा मे नायबंती नायत्री सु जाय दिनी ।

भोजा स्वपावण जेलू

बयदावतां रा चौईस ई भाई भेटा ब्हे बिचार करवा मागिया भगवान
घांतां मे घतरा बन बीजो है तो बाई करत ई रो । बापो दूबर चौईस
जात रो मुगायां मे परबियो । ये चौईस ई भाई चौईस ई जात रो
मुगायां रा बैटा ।

बरो मां ठेजाओ बचिपापी रो बैटो बोलियो

“भायां इय माया नै जमीं में गाइ बां । बरनोर रा डीगा डीगा डूगरा
ने ठ डी मीर मुदाय बन ने ठ डो पाइ ऊपरे सीजो हुटाय बा ।”

दूरे भाई भांरे जेर नू पाबइ भंयेड़ी “बादा पन पाइयां परती हूँ ।
गाइबा बाटा मे मीना मबभे गाइयोहा बन ने तो या दुठिपारी परती
पउ जाये । घाता ता घाबा बीबां घरबां ।”

गाओ पोओ गरपजा, करो जीवदा साइ ।

जोय मरोसा पांइगा, यिने न दूओ वार ॥

तजाओ सवभाय मागिया बारबाइ घाया रे मजीक । बाउ मे बिन्ज
बराता । सांज्य बांसी हाइदियां रायलांवा केर रो लीन पाइ लोयांवा
बाया मे दूरी चौयमा बयाबां ।”

मेबा ने राग घाई "बाबा नू तो बापिया रो भागयो है । बाँरा नालाजी तो भूगडा बैचिया मामाजी बैचिया पुङ्ग तेन । जो पां ने तो घाँतर बायो ठाकरी घसणी न घुला रा पेट काटपां गूमे ।

बाप बिबारो बाई करे, या नामेरा रो खाम ।

बीयो भाई बामणी रा बेटो जो बोतियो

"देयो घाँता घाँछा घाँछा मिहर बपावां देकरा बुपावां जो परबी वे घाँपको घाँ नाम रँ ब । नीतडा के भीतरा ।"

भोका हजपूतानी रो बेटो बोतियो "बुनिया बेबळ इहू पङ्ग नी रँ वमी रँ नाम । बाई घाँ नाम तो नीतडा नू रँ भीतरा नू नी रँ । के तो एक दिन हम न पड पाप । वनां जगां मोटां मोटां मेहल माळिया घर देबळ इहा पडिया है । घाँतां जो नामून करां । जल रा घालर जुना जुनां तब नी जावे । या माया मिली जी ने मायनी घाँर जलरी माज लो । बादळ जनु माया मियां बरवाई जनु पाप । मिछमी बटै ई टिबी है ? बादळ बाट्टी छाया है । हावां रा लावा सगां है जो मिलो ।"

तेबानी बरे भूगी बाज ।

माया ऊ टी गाँ दो बाशा बाळ दुपाळ ।

जातो प्रजा डायगा हागी घमर नाम ॥

देवो बँदे "मी बाया ना बाबा बाबा ई बा बाज देव । माया मन री बोवनी माया जल रा मेन ।

बोवो बँदे

माया तो मारणी भसा सींच्या भसा नीवाण ।
 पोडा ता फेरया भसा स्वची भसी कयाण ॥

वन ता खरख कीमो भसी । कुवा बाबडी मू पात्री गीचियो ई भलो ।
 बोडा बीड़ाया भसा धर कबाण लीची भसी ।

तेजाजी री बात नी भासी । बात री भाजा री धर मेबा री । भोजी
 तो माया मास्हुबा सागो । पोबा भर धर माहुरा सुटावे । जाबक
 घाली हाथ भोजारै धरै धारे ओ माहुरा री भोजिया धरिया पाछा धर
 धारे । इतर में गरबाज रै । रोज पोठ पूपरी भूे । दाया री बाक
 काडे । बाकरां पै भटका पड । मूळ सोपता लाब न पुबावे ।
 नामी नामी पोडा भोसाया । हजारां मायां कांकड में छुठरे । तिसोबया
 री पाळियां कुर्वरा ताई पूजती रै । वही दूप री नरियां बंभे । पी रा
 घाले नाम । घ बला घ बला बंट रा सीमहा बाट्टी मरिया थां रा
 घबाडा बरती रे धड रिडकटी घपी सांभ रा धरे धारे । वही दूप
 रो महपट्ट माचियो रे ।

मिनगां मे धबंभो धारे के पां पुजरां बनें धतरो मायां धाय कटा सु
 गी । जामे तो यो भोजो नाम पहाड में धबांया पगां मायां बराबती
 फिरती । मेबो केरडा बराबतो । धात्र यो ई भोजो धरयो रिके राणे
 राब मे पाछा रागे । जया जया या बरबा क भोजा मे गोता री पारसो
 मिन बियो । त्रिध मे ज्य बाटे क्यु बपता जावे । नाग पहाड में
 भोजो मायां बराबतो बडे एव ओपी री लडा बीबी । ओपी एव दिन
 भोजा मे बियो

‘ धात्र रात कू घाला ।’

भोजो मियो । धावे एव तो मेज रो बहार उरल रियो । इतर धन्तर
 री बनी सायपटी पड़ी । ओपी भोजा मे क्वी

“इस कड़ाह के परकम्मा दे । फिर तुमकू बिद्या दू ना ।

बाबा मे बंन पड गियो खोपी घाटा मे नारेला ।

घोबो बोनियो, ‘बाबाजी घाय एकर परकम्मा देप गूर्न बताय हो ।”

बाबाजी परकम्मा देप मे बताबा मे क्यू घामे श्लिया । मोजे तो पकड बाबा मे लकडता लल रा कड़ाह में ग्हाक हीचा । कड़ाह मे पडता ई बाबो साना गो पोरम भ्ने गियो । उग मोना रा पोरसा मे घोबो ल घायो । पोरसा रा लोना मे क्यू बाटे क्यू ई पाछा बच बाये । घोबा मे मू माया मिसबा री बाठ जया जया रा मू हा र्व ।

बमडाबत माया मानबा लानिया । घ घायु घ हाक में मरल रे । बटी मे डने बटी मे घांभे लखर भी बा मे । रात दिन दाक री आठिया निरळ । दाक रा लडाव भरिया बां बाक रो छांटीं बाय डे संत नाग रा भाबा र्वे बड़ियो । सैग नाम मार्बा बुचियो । बरती पूज उठ्ये । पगनी भयवान रा बरबार में बाय घरदान बीबी । बाबडा माठा बीरो भेनियो “बगडावना मे ग्हुं लपावाने जैळू रो घबतार मू ला ।”

जंबती छानेमेक हीक मे जियो “हीरां निरोठबी ग्हागी लपाई बरबा मे बाय रिमा हू बने बतराई मू घटे बुनाय ला ।”

निरोठबी घाय घागीरबाद हीचो ।

जंबती बोनी “पयां लागू बाजबी । घाय ग्हारे बर हेरबा मे बाय रिमा हो ला एक बाठ ग्हापी मानजो । मा या लरबीर ला हल उबियारा रो बर भ्ने बिग रे लाये ग्हापी लपाई बरजो ।”

बा र्वे जंबती घाय रे हाक री बजापोड़ी लरबीर निरोठबी न भेजाई ।

“घाब्तो बाईजी म्हासु पछेना वठरे घत्तो ई ह्कसा ।

“बरोला री बात नी ह्क बावला । तरबीर रे उणिपारो रो भ्हे जो बावे ।
नी तो म्हारे परबभो ई नी ।”

पिरोतजी तस्बीर त गड बुबाळ मू जागिया । मारबाड रो घाटी पड
मेबाड में घाया । घाबटा घाबटा ढणाला बसता बाग । पय तस्बीर
बस्यो उणिपारो नी जाये । मेबाट म करता बिलोड शानी गिया ।
बठे ही कोई घस्या उणिपारा रो नी गायो । बिलोड मू अजमेर
घाडी मे गिया । अजमेर त टिरामा एकबा सागिया । फिरता फिरता
पिरोतजी बदनोर कने घोटा मे माय निकलिया । चौईस ई माई
बगदावत पोहा दोकाम मे पाछा घाया । गळ म पिरोतजी बंठिया ।
भोजा मे देवता ई पिरोतजी ह्किया क गिया । जंमनी के वाड रो बर
यो । जंमती तरबीर बोनी बो रो बा उणिपारो । ब री ब माडु टरे
टरका करे जमी मुछा सक्का करतो बजाय । पय देता घरती पूरे ।
हंमता बांत मोठी मा बमदे ।

पिरोतजी बिया ‘मारबाड मू घानो ह्क । गड बुबाळ म्हारो रैबाव ह्क ।
बाईजी रे बर ईसबा मे निकलियो ह्क । माजाजी माग्ही घांगळी
बटाई घाय म्हारे बज म बंज गिया । बंजो तो बाईजी रो गळर
भेवाड ।”

देवाजी जंम जाया में माटो । देवाजी रे बाठ बाव घाई नी । घारा
दुज्ज टरिया बा रजपूत री बैठी । सो पर में माडर बळ्या टीक नी ।
माया बादे बनरी हो घारा दुजर रिया पर ये हो गुणाय बाव करे
ई ज । बा ठाकरा री बैठी घानेना जो माये बाबदिया रो रणो घोर
मावे । बा तो नी मोबर बागला नी बागरी करेया । जय रे देगायेन
ये दुजी देराणिया बैठाणिया बाबा पै बंठयो बीजेना वा निबाय । दो

← रगडो घर में बानधोई नीं । या सोब तेओत्री बुवाब हीबो

“पिरोतत्री घाव पधारिया ओ लो भली करी । वंनी बात म्हां लो सपलाई भाई परमियोडा हा । डूजी बात वे रजपूठ म्हां बाठ रा मुजर । ध्याव सवाई धाव धाव री जाठ में ई खोला लावे ।

भोत्रो बोलिबो घायो माळ र पाछा फेरयो खोचो नी सावे बारा ।

तेओत्री कहियो ‘राज भगाव रा राजनी मे माळ र भेसाप देबांसा । वे ई घापां सामे भाई व्यु रंवे ।’

भोत्रे लो भर मोहरां रो बाळ पिरोतत्री री भोळीं मे ऊधो नीबो ‘घाव राव बिजाप बानो म्हुं घावु बठे माळेर भेसाव बो । मोटो पर । राजनी म्हुंका मितर ।’

राव बाबट बहिहार मे माळेर भेसाप सारे रा लारे लगन भेसाप पिरोतत्री नू बाळ घाया । पिरोतत्री घाव मे कियो,

‘माळेर लो राज रा राजनी न भेसापो हे वन बगदावन बगदावन हे । भोत्रो हे लो मुजर वप हीत रो घाण मूछां री मरोड हाव री हागारी म्हुं ला बट्टे ई घनी नी देयो । घाव जुवान म्हुं लो लो भे । राजनी लो नीग मं वे बाब रोचवा हीपा । भोत्रे भर मोहरां रो बाळ म्हुंरी जोत्री मे ऊबो कर हीपो ।

वैबनी मे आव कियो ‘बाईत्री का रो जान हे । म्हुं ना म्हुंरे बाहिर भोत्रो ई बर हेमियो वन वे मानिया नी । बाहू रे भोजा बाह । बां तन्हीर हीपी बो रो का बलिबागे । उम नू नबाया वन पूणो नी । म्हुं लो घनी बबी बट्टे ई देनी नी । राव रा राव ई खोला हे वन उ र में खोडाक पावा हे । माळ र उचा वे भेसापो ।’

७- रमड़ो घर में जानघोईं नीं । या सोब तेजोनी बुबाब बीजो

“पिरोतनी, घाग पधारिया बो तो मनी कपी । वीनी नात म्हा तो सपझाई भाई परचिबोका हूँ । बुजी नात मे रबपुत म्हा बात रा पूजर । ब्याब सपाई घाप घाप टी बात में ई बोखा साने ।

भोजो बोलियो बासो नाळ र पाळो फेरजो बोखो नी साने पावा ।”

तेजोनी कहियो “घाग मनाय रा राबनी ने नाळ र भेसाप देवाला । व ई घावां घापे भाई ज्यु र्बि ।”

भोजे तो भर मोहरां रो बाळ पिरोतनी टी भोळी मे ऊबो कीजो ‘घाप राग मिनाय बासो म्हुं घाबू बठे नाळ र भेसाप बो । पोटो घर । राबनी म्हाका मितार ।”

एव बाबट पकिहार मे नळर भेसाप सारे रा नारे नवन भेसाप पिरोतनी वृ बाळ घावा । पिरोतनी घाप मे फियो,

“नळर तो घाग रा राबनी न भेसापो है पन बपझावत बवझावत है । भोजो है तो पूजर पन बील रो माछर मुछा टी मरोड़ हज्ज टी बलाटी म्हे तो कट्ट ई धनी नीं देखी । घाहा सुवान भे तो एको म्हे । राबनी तो लीळ में मे पांच रोफडा बीपा । भोजे भर मोहरां रो बाळ म्हाटी भोळी में ऊबो कर बीजो ।

वैभती मे वाप फियो “बाईनी नां रो भाव है । म्हे तो म्हारे पाहिनै भोजो ई बर हैगियो पन मे मामिया नी । बाहू रे बोजा बाहू । नां तस्वीर बीबी बो रो बो छपियारो । उग नू सनाबो पन पूजो नीं । म्हे तो घणी सबी कट्ट ई देखी नीं । घाग रा राब ई बोखा है पन उर मे बोहाक पाका है । नाळ र घावां मे भेसापो ।”

बी नाऊ र मे भाटो मे फोड़ियो बसू लीं ।" बँसती रीघ कर मे बोली ।

बाईजी यू लीं बोसती । पोईज गिवा वो मोठी किलीर गिवा वो मेम । बँसाता घांक मे मिस बीको वो कर ।"

"साय सापो बांरी बँसाता री ।" बँसती पिरोतजी ये दोई हापां सु डटका बीवा ।

राम रा रामजी रो व्याज मडियो । बगडाबत रीगां घाले । हुआ गँपि रीने जाप बगडाबत ऊग्याट बरे । मोडा नभाठा बोड़ा दीइता बावे । बगडाबत जालिया चाटी मे सरबड स्मेमरी । बरहुड बगरा पूबरिया । बीको ठा राम मे बनियो कनाली रो घर पूठतो ।

धामा साभ्हा घोबरा मूरज साम्हा पाळ ।

घर दोम बलाळ रो मांडा पर मठवाळ ॥

कनाली रा घांगनां मे भोजा री पोड़ी गूदवा लापी । कनाली रीसियो गाडूक ता मोटी घापा हे । म्हेमा घोड्यां म भाला गाठी बोपी बसू मुदावा घांगना बसू मुदाको बीक । म्हारी दाक मु पा माव रो हे । बां मु ली पीमावे ।"

"हँ लीं ए कनालय बारा दुवारो रो मीव ।" बीजे पुळियो ।

"पां दाव दुवडा पुणिया म्हा रे दुवागे बाई बीकोवा । हूजी मू बी दुवात देगी मावो ।"

मेमा बानियो "पानुरी मे बगरा मन कर । दुवारो रा मुवा घडीने मा । तुवा रा मुवा मीव दे । मु भर भर न वा म्हां बीक म्हाय म्हाय न रोवा ।"

मुनता ई पातुडी भांक री कीकी ने गनग बेथी की केर न बोली "ए, हे मस्या पीबन बाळा सामबा बोड़ी ने नखे मैल पछे बुबारो पीबो ।

'खोल ने पातुडी खोल से बोड़ी रा बळा रो सोना रो सांख्खी खोल से । मोचो बुमठो पको बोचिमो ।

पड़िया है सोना रा सांख्खी । ठीरो म्हुने सांख्खो परखाय न प्राबा हो ।"

पातुडी खोबठा ई सांख्खो पग रे बाब बीसती बर रे बारे ई बाणिमा री बुकान वै माली ।

सबासुख सेठ बैसतो ई बोसियो 'पातुडी ज्मु पायो ज्मु केरबे । मो तो तरख सोना रो है ।"

पातुडी तो छट छठाय बाबज्य ने छठी रे चिपकायो । बीड़ी बीड़ी भाई ।

"बाह मोबाबी बाह । राठ ने बाक पाय न तो म्हुं ठ्यां । पन चिन रा ठमार पं हो । नांती पीठळ रो सांख्खी ज्मरे सोना रो म्हेळ । म्हुने छय रिबा हो । कंबरा बाक पीबो ।" मर री पागरां साम मू बाये मैल बीबी । पातुडी भर भर पाबे बमड़ावत खेबारा कर कर पीबे । मोबे छक न बाक पीबो । राबकी री खान चडिया । चौईछ ई माहयां रे एक सटीचो बचाव एक सटीचा बोड़ा ।

साम गुलाबी पागड़ा, भसस बनाठी बीण ।

भड़ पीबीमू नोसरया कुण जानी कुण बीद ॥

चौईनु ई भाई बीर लामे । मोबेजी धागरी बाबळी बीड़ी ने सबाई । बीड़ी बाबंड रो बबतार । हीं तो पावू रे कैसर काळकी घठी ही कै रायसापीर रे मीलो पीड़ो । बाड़ी तो गावन री मोरड़ी ज्मु नाथे ।

बाकी में ठमका करे । पकन मू बाजा करे । तारा मू बोटा करे । बाबडी रे पगां म बाबनिया बैबर । मोना री खुरताळ । बेसबाडी में जाती । बज्ज म मौमर हार । नाख साख रा पागड़ा । हुरियो बनाती जीण । दुमबी रे पाट रा फूबा । पोड़ी मू ब भूँब बणी । मोना रे पापा री पचरण पाग जिण में मोनेरी तार बमके । लाल गुमाम नाड़ा बाडी छांयानेर री मुनरण । पगां में नाचीपी मोबड़ी । पेचा में पूतडा कडिया में बांगने बटारो । सोरठई गरबार बाब ठैरा लड़ रो ताकनो से हाय में माओ पोड़ी बडियो बरती भेको जाती । जान मू पाळ में पुगी ईहड मोळ नी जान रे माम्हो घायो । मोनाजी री पोरी ठमका बरती नाबती जान री । लमळा रा बिनया जादियो बीर यो है । राय रा राय ताम्हा बोई भाके नी सेव मोना ने ई देस । मोने पोरी रा पळा में बाबा डोर में मोहण पोय राखी । पोड़ी नाथे मू मोहण तिरे । बिनल मोहण मूटे । लुपाया मोनाजी रे बज्ज बचावे बज्जबत मुट्टियां बर बर बज्जया में मोहण म्हाके । मोड़ बाबियोडो राय रो राय पाठे उम ने बोई पूठे ई नी । राय के बडनी लायी । बीर ठो मोत्रो बच रिया म्हाटी पूठे ई नी । मोबदाण मे हुमम रीधो । मोबगर म छडियां हाय में बीडिया "बीर राजा पाठे हाथी री मबार है । बज्जम बारे बचाओ ।"

बिनया जादियो जाती घरया लो बीर बजापा बस्यो भेना । बाक बनीग से म बज्जम बीर रा हाथी जाती बीडिया । राय रा बिनल बज्जया में पाये हो गिनिया के पांथ रिनिया । लुपाया गिनिया में कैदिया बाछा जा रा गिनिया घाँरें रैबादो । म्हाक बोनी चावे ।"

बीर न देस नाम लुगाई बरबा जादिया यो बीर ? म्हुना यो बीर ? बीर लो बाई न हो जो बोरी बचाओ मोहण उपाडनी जाय रियो ।"

जो ए नी बी- ता या ई न बाँधे । हेको ली मोड़ बचियाडो है ।"

ये तो कुटिया बाई बैठ रा करम । वो तो डोकरो है । ई दे बाई
हरियो बीमती बाई रे जोड़ रो तो वो बोड़ी रो उबार है ।”

देख्य बाळ्य घादमी सेव बीह रा हाकी ने जोड़ मोजा री बोड़ी करे
घादपिया ।

रावकी ने कपी रीस घाई । डैरो बीबो । बुघाल रा घादपिया वू
रेवकी नी घायो रावकी ने मोजा उकर पूछ ही लीयो ।

“वे तिरवार कळ रा है ?”

रावकी रीस मे भरियोडा तो हा ही ब ई हुजर तो म्हारो मागळा मार
सीबी । मूडो मघकाय न बोलियो ‘वो तो म्हारो बालीरवार है ।

वा मुनटाई भोजा रे पड़ी पनीठे घान । घाळ तराय पुछियो ‘अई
कियो रावकी ? म्हुं वारो बालीरवार हूँ ? म्हुं तो भाईवारो राखन
घायो हूँ । छाम्ही वारी लोका बढाय रियो हूँ । अठे बाने परवाया
मुन है ? बीमती रो नळ र म्हुं देवामो बाने ।”

रावकी बळपियो मचो हो “वू परणाय म्हुं ? हुजर रो छोरो । वो टका
भेपिया वो भाई ई बढवा लावियो ।

मोबोबी तो रीखान म्हाप ई बाब में डैरा लपाय बीबा ।

खलक री ह्मक मुन पकड ? जया जयो मोजा रा बखान करे
रावकी ने बिसराई । सुपाया मर मर मूडो मोजा रा रूप रा बलाय
करती बाने कुटिवोड़ी मोहरा बघाती जाई । बीमती रीता ई भोजा रा
बलाय मुन राखिया हा । भोजा ने परणवारी मग में घांत ही
पवे जया जया रे मूडे भोजा री बाता सुन भोजा ने देखना ने
पावती भेनी । मरबी राग छोरी हीरा ने देखी पावियो

हीरु बाध रमिया भोज मे देखवा जाना ।”

‘विण तरै जाना ?”

बाहे जा कर । रमिया भोज मे ठे देखयो है । कलाडी रो भैछ कर न
जाना भन ई दुबरी बदन जाना पण जाना ।

जानुडी कलाडि बध जाना म्हारी हीरुं
भबर मात्र मे दाह पावा जाना ए
ई विण विमवा जानाए
घाना दुबरी बध जाना म्हापी हीरुं
रम रमिया मे दहीरो पावा जाना ए
एण विच मुबरे जाना म्हारी हीरुं
एण विच मुबरे जाना ए ।

हीरु बीपी मू नी बार्मा मू विमवा मे टा पद जाइ घावां लो पाणी
री बनिहारी रे बाग री बाबडी मे पाणी भरवा जाना ।

जैकती घर हीरु मापा नै बुनवियो मैतियो । हाथ मे मापी केरु बीपी ।
पाणी भरवा जानी । बाहरी वं मात्र जाउम विछावो खौरिप ई जाइपां
रे सार्प दाह नीप रियो । जैकती भयि जाउम वं भोज मे घोटवियो
जातो बंभो बारी मे केचरो कृमियो तारा रे विचै बंदरमा पु बानियो ।
जैकती तो बलगाव रो व्हे म्मु ऊपी रंटी । घागे पण देख्ती घावे
न पाछी । भोज री निजर जैकती माई बरी । भोजा रे तो होटा रे
माण्डियो प्पायो हाव मे रीपया । या ज्यो बोद न बार् निरव घाई
है के घावाम काद न लीके उगरी है । है कुन ? इन्कर री घाउता है के
कोई बान्ड री पदमव ? जैकती तो टवटवी मण्णो भोजा मे देखे

जोसो घाबिवां प्पडिवां जैमती मे अंक रियो । हीर जैमती रे टल्तो हीसो ।

“बाली नीं घावे । कोई घोसल केई ।

जैमती मे घोसांघ घायो । बाजम पे करी सभा री निजर जैमती कानी । जैमती तो पाछी फिरताई माया रा बड़ा मे केंकियो नीवे ।

“हीर मूं तो भोजा मे परणु ।

“काई करी बाईसा ।”

“करे काई ? परणु तो भोजाजीमे नी तो छटक न पड न मर बाबु । बिस री बाहल बायन मर बाबु । नु बाब भोजाजी मे के मूं परणे ।”

जैमती तो म्हेलां परी सी । हीर बाब में रैबी । बड़ो मावे मेक बाबड़ी में पाजी मरबा उठरी । चुकलियो बोवे खंखोले मरे पीतो करे पाछो मरे । टाळा टूळी करे । भोजो ऊपर नु बेख रियो ।

“बड़ो ऊ बाबजो हे काई ? ला मूं ऊ बाव नु ।” कैंतो भोजो बाबड़ी में उठरियो ।

बड़ो ऊ बाब न मावे मैलावती हीर बोली “जैमती तो बनि परछेला राबजी मे नीं परणे ।”

“बाबी ?” भोजा रो उन नन घांघर नु बियस बियो ।

“ताबी” जैमती कैंबामो हे बा करण न मेजायो ।

भोजो बिचार में पड़ियो परछे किन ठरें ? राब बाबट री बाज घामोड़ी बैठी ; बा उल बाज रो बानी ।

हीरू बोली "या नी परणोला तो जैमती तो म्हेला नू छटक न मर बाप ।

"बो म म्हारा हाप रो घाडो पो खांवा रो क्मान । जैमती मे केरा खुबाय दोत्रे ।"

हीरू तो बोला रा हाप रो घाडो खांवा रो क्मान न मे वाली । जामती लमी बाप नू तुळता रा पानडा तोडती लयी । जैमती तो तुळता रा पानडा मे बीधि राप भावा रा घांवा रे, क्मान रे केर बाप सीपा । पधे हठ कर मे बीठनी राव बाघट नू नी परणू । हीरू मे भेजो "जा भोबाजी न के पारी परणियोडी हू । बो बो रे लारे बिपाव भे काई । राव रे लारे केर नी पानू ।"

भोत्रे हीरू रे लारे समझाई "घबार नू छक रे लारे केर नी जामिता तो रामो भे जायेला । म्हारा बिपा नू घबार केरा फिरजा । राव मिगाव गिपा म्हे भवे लैय जावू ।

पनी मुनजिला जैमती राजी न्ही । राव बाघट हापी रे होवे चड तोरण वे जायो । जान मे बाबडी घोड़ी मे बूदाठा भोजो ई जायो । बीर तारण लारे पटा बीनी तो भाड़ी बूदाय भोजे तारण वे तरवार रो हचको मार बीबी । बापरगे बीर देसना रे गियो । बीर खंकी मे गियो । ईहठ मोळंभी बीटी बरभावा बीठियो । जैमती बूदा राव रे लारे नटजोरो बाप खंको मे बीटी । दुश मे देग देग लारां बरे । केरा फिरवा मागिया । मुदावा जायो ।

पैसो केरो जेळू सिमा ठरो जेळू रो बाप ।

दमी दावद दावजा देसी दोवद दाव ॥

वेळू मन में बनि,

रेज्यो दीवड दायजो रेज्यो दीवड वाप ।
 वूडा ने परणावता साजा मरु ओ वाप ॥

दूजो केरो लीचो गुपामा नावो

दूजो केरो वेळू सियो शेडो वेळू री मांय ।
 देसी दीवड दायजो देसी बील्हुर गाय ॥

वेळू मन में बनि

रेज्यो दीवड दायजो रेज्यो बील्हुर गाय ।
 वूडा ने परणावता साजा मरु प मांय ॥

बळ्ठी बळ्ठी बळ्ठी केरा खावा । परनाय गीज बीची । एव में
 बळ्ठी बळ्ठी जावे । एव रे घोळू बोळू बोडी कुडातो भोषो जाव ।
 एव री बळ्ठी में मू बळ्ठी भळ्ठी । राव भिजाय मजीक धाई । गोठा
 रो बळ्ठी पंढियो । बळ्ठावत घापरे बरे जावा साबिवा । हीक रे
 तारे भोषा ने समीचार भेजिया । भोषे एक महिना म घाय न लेजावा
 रो बळ्ठा बीचो । बळ्ठी राव रे तारे राव भिजाय धाई । बीमणी ने
 बळ्ठा बरे भेजिया । बळ्ठी राव रे सारं म्हेला बडे जाणो दावो पोठी
 तारे जापरिया । राव बळ्ठी बरत रो ओकरो । बांत पांडिया मुळ
 जोडरो मूडो पुटी पोळ । माचो बोळो घण्य । बळ्ठावत उगमग हात
 गाडनी बीं पुचा में पाव । करड करड बोडा करे । ओचरियो म्हेला
 बडे रे रे सोडा रे हाय ।

बळ्ठी बळ्ठी न ब टिको धेवी । मां जावा ने सिराय देवा साबी जणां

घस्वा बूढा ने परचाई ।

बाबल पर पड़नी बीबली
माता ने खाओ नाच
बीरा ने खाओ नोपरो
छोर्नु मरे घनाबस रात
बर बूढी परचाबठा
म्हारी भेगा उछटवी रीच

जमती होकरिया ने देखें खु उच रे डील से घाग घाग भागे ।
बोतनिया मु हो देख न तो घप रे मन से घाबे आछे तापो मेस दु ।
हीरु ने बबि

हीरां म्हने घाबे लेसणो, (ई) डाकी ने घाब मीद ।

जमती भोजा नाक लमक लमक करे । नाबत्रियां नु पांरहिया उबारी
मागे दिन हो नाक हे हो हो भोजा नु बिन घाबु । घांपटिया व
दिन दिन दिन बाडे । एक बहिनो भेगियो हो बहिनो भेगिया । उ
उ बहिनो भेगिया । भोजो घयो मी । हीरु ने दिघो

ऊंधी पड जा टागळे चडु बीबारां नाळ ।
घात्रीबना - भाज ने, भोज बर भरतार ॥

हीरु बोली 'बाईजी घाब ई घाण्डा दुवरां वी रीमया । रात दिन
भोजो भोजो करो । रात रा रात बरयो बर मिलियो हे मुस रो भोजयो ।
मीटा रो बीबकी गेली रो रीबको । घाले पाछे हाबर हाबर करती

छत्तीस छोरियां छिरे । आबा सो नी भोबा न परो । राय रा बनी
वै रीभो बो भसी बेझा न्हे ।

“रीभे राय रा बनी वै ! बोझभिया वै ! म्हारी मिबर में भोबोबी
बस रियो है ।

भोजां री मूछ वै नीवू ठरे सचका करे कबाण ।
घागो घाळो रायने जावां भोजा री सार ॥

हीरू कियो ‘घठे बा रे घमगवती बोझा बंधिया है । हाभियां रो छै
है न पार । लाबो बीड़ो राय । नीसल माळबो बूज रियो है छेंच
मेवाड़ चारै चरे लट री है । बाळ भोबा रे लारे बाळ भोबा रे
सारे । बुझ पाबोला बुझ ।

जैमती बोनी “म्हूर्ने तो मेवाड़ रो भन जावे न कोई माळबा रो राय ।
म्हारी घाडी नू हाबी मरो न बोझा वै पटकी पड़ो ।”

छोरी हाप्यां वै पटकी पड़ो
बोझां रे उठो रोग
भोसल मरबो माळबो
छेंच नरो मेवाड़

हीरू बिड़ न बोली ‘भोबो भोजो करतो रिया ह्यो पल भोजां रे रियां
अबर पड़ जावेसा । घबाक तो दखबी नीर घोळ न होमिया वै बीटिया
हुदम बभाबो । भोजा रे चर रियां रेवारी कझी नू बड़ घोड़बी
पड़ैसा बो मरझाटे पलीनो घाय जाय । वे हाबी हाठ रा नुझा पैरबा
नून जास्यो । वे नूचटां रा चर है हाव में सैर पांच रो नीउळ रो नुडो
पैराय । म्हेसां रा पौडना घर नूरवा रा बीमना बटे नी है । बठे छाळ
सबोड़ज्यो छाळ ।

छत्तीस छोरिया किये । आवा बो नी भोजा ने परो । राज रा घनी
 पै रीन्दी जो मनी बेछां भू ।

“रीन्दी राज रा घनी पै । बोछामिया पै । म्हारी निघर में मोबोची
 बस रियो है ।

भोजा री सू छ पै नीबू ठरे सचका करे क्वाण ।

घायो वाळा राबने आवां भोजा री शार ॥

हीरू कियो घटे बां रे मयमवती बोड़ा बंधिया है । हाथिया रो छै
 है न पार । लामो पीड़ो राज । नीसक मरबो बूख रियो है सेंस
 मैबाड़ बारं करे सट री है । बाळ भोजा रे सारे बाळ भोजा रे
 सारे । बूख पाबोला बूख ।

बैमती बोसी “म्हूर्न ती मैबाड़ रो बन चाबे न कोई मरबोला रो राज ।
 म्हारी घाडी नु हाथी मरो न बोड़ा पै पटकी पड़ो ।”

छोटी हाथ्यां पै पटकी पड़ो

बोड़ा रे बटो रोप

नीसक मरबो मरबो

सेंस मरो मैबाड़

हीरू बिड़ न वाली “भोबो भोजो करतो रिया हो पन भोजा रे गियां
 कबर पड़ चाबेसा । घवाक तो रस्तनी थीर भोड न डोलिया पै बँटिया
 हुकम जमाबो । भोजा रे परे कियां रेखापी कस्टी बूबड़ भोडनी
 पड़ोला बां नरब्यटे पठीनो घाय जाम । के हाथी बांठ रा बूड़ा पैरना
 भुल जास्यो । के बूजटां रा कर है हाथ में सेर पांच रो पीठळ रो बूड़ो
 पैराय । म्हेसा रा पोडना घर बुरवा रा बीमना बटे नीं है । बटे छाळ
 सबोड़न्यो छाळ ।

पुसको पास्यो ओ राणी जेमतो, मत जावो भोजी री सार'
 बंमती पावइ हिलार्न बाबु भोजा रे लारे बाबु

हीरं यो म्हुलां रो पोइवो
 कोही तो पळ जाय
 साटो लागे कुरमो
 म्हुने मीटी लागे छाछ

हीरु बोमी "बाईजी घाण्ठा रीइया पुजरां पुजर बडा मबार ।
 माबल भाइवो लागतां ई मारा पुवाडा मे कीच मच जाये । माछर
 भरजाये । भोजो पुरी पछेरी रो बाबळो पंरवाने देवेना पाव तीन री
 डोर कबर के मार पांटा न बापणी पड़ ला । माये मोबर री हुला
 छटाव न ग्हाववा जावो । बाईजी छटक पड़ ला बाबळो छटक
 पड़ ला रममोळ ।"

जंमती बोमी कोई बात नी । बाबळा मे तो कस न ऊचो बाप मुला
 कचक न बाये मोबर री हुल छटाय है ठोकर री कळखो घोल भोजाजी
 रे लये काम करवाने बाबु ।"

हीरु माचो ठोहियो कूटिया पांच । मोबर री हुलां जळवणी है घत
 से बाव करवो है जावो भोजा रे लारे ।"

मा कलम के बापन निगु बोळ बाये रमिया भोज री ।"

सपळा बायां मे पीळा कर भोजो बंमती रो बापन मु हार्न मेतिवो ।
 जंमती के मैवा जावु ।

सैय भाई बिचार करज सायिबा । सैय भाबां री सुबायां बीरानियां
 बैठनियां भेळीं भूगी । सुमायां बोबा ने बरजबा सापी समझबा लागी ।
 पोबाजेरी परबी छाहू बोसी ।

भारे भागे नवी भवे बे बपू कूडे न्हाय ।

छाहू सरोखी भस्तरी वै बपू पराई साय ॥

भोजो बोलियो म्हाने छाठा पीठा विभसतां बांमठ बरजो म्हारी नार ।”

नेबा री सुबाई नेदू नु बटो खैच न बोली ‘बैठनी बरजबा मान बाबो ।
 एक रांठ रे पू छडे बपू बोठा न ठबाको हो ।

तेजाबी री सुगाई भोजा ने समझबा सापी “देबर, यने परजबा री हू
 तो हुको ब्याव कराय हू । म्हारी सपी बैग ने परजाय हू । एक नी
 बा दो पुजरिया परजाय हू ।”

‘बामी कठै बीमती कठै बा री पुजरिया । काई बात करो ।’

भोजा र एक भाई बीचै ई बात काटी ‘पुजरिया? एक नू एक फूटरी ।
 बदनोर मं काई रूप रा बाटो हू ?’

वदनोरा री पुजरी कड़िया खल्ला केस
 गान्ही वाळी नाक में काय विच काजळ रेस ॥’

तेजाबी बोलियो नू बात करे पुजिया मं काई ।

कन बचरा में काहू

कन पोखळ में पुजरिया

गोखळ बा ी पुजरिया

लियो काहू मे जाय

एक ब्याज करने हो करते हम करते । पराई सुगई जीबता री सुगई
बत ला, पछताप ।

भोजा बोलियो 'बड़ाया मठ करो । बाणु चा री काहू मे मोबपी
दूबरिया मे ।

सोळा आवे सोगरा घड़ी मनेड़े धान
पातो सथोटे राव रो, पीवे मटूगो छछ ॥

तेजाबी री सुगई घायती ब्ये मे बोली "जाबा बे मत परब दूबरी मे ।
देबर, पर पाठि राबी यथो हो बाल दने जाटपी परगाय जावु ।"

देबर, हो परगाय दू जाटगिया भसा करू ब्याव
खारी पै बबरी मांड दू भालाळा ठोरग पांब ॥

धामी म्हने जाणिया भी परबपी ।

कानी परणू जाटणी कोनो करगणा नानांग
ये जाटा पगा का जाटगिया पामे धम धम पास
ऊमा कम मे घाबळा काटे जगळ रा माड ॥

धामी मे रीन घायपी 'धमी का जमती म्हारी शैठ करजोक लंरो हे
बठा री घपछरा हे ।"

धामी जमती री बात मत्र पूछ । जमपी जाणिया भांटे हो बीह
जगट न आवे । का म्हेमा मे बोन जाणे जोपन टुंवा लंघ मापी ।
भी हो मानबो मानर मे धमी घसरी हे भी देबळ मे ई धमी बुरती
रिच री पडियोरी हे । हो हो पडियोरो माबो रजाबा रिचा हे
भववान री मून मे दळ दियो ।

ना देबळ में देवळी, ना मरु में नार
पड़ियो साँचो छळ गियो घूस गियो करतारा।”

देबर बरन बरन छीकी बड़ी प्येका पड़िया नैन । पर नाटी रे चालें
मठ लाया । पर नारी बुझ रे देबळ है ।

पर नारी पैनी छुरी तीन ठौड़ सू जाय
भम हरे जीवन हरे, पत पंचा में जाय ॥”

“भग, जीवन घर पत काई जाये जीव जान तो ई जैयती मे ले न
घाहू ।”

“बा रे धूँ काई गियो देबर । बाँ टा बर में बाहू सपैली घासरी ।

घर कस्तूरी नीपनै पर घर सेवण जाय
घर होस्यो घर होसणो पर घर पोडण जाय
घर वेवर मेड़ा पड़िया, पर घर जीमण जाय ॥

बो बोलियो माधी बाँ बरन तो रिवा हो । पन बाँ ई नैबो डरण
घर रे सुवाई हुआ रे बरे छोड़ बाँ काई ? राखी जैयती जोना
परपनयोड़ी है । परपनयोड़ी राबत भोज रे जोव रियो पड़िहार ।

जोक जमोन जोर रे नी तो धौर रे ॥

नी रे सुवाई नीवालो म्हाकियो

“बरजिया मामो बगडावतां घाँ रे भबें छीस वे काळ ।

जोय वे काळ भंव रियो है । मारिया जावेला । राखी जैयती
ना पड़िहार रे छळ नद बोळ वे घावेला । बाँ जपोला ।

यां ने पायी देवा बापू कोई नीं मायेना । बा बां पांठ बाप मो ।
वेळ साबा ने ठाकड़ा तो ब्हेय रिया हो ।

नी मागिया । भोबो घर मेवो भोडां बडिया । ज्ञाय राघ भिषाय रा
बाग में उठरिया । हीक ने पारती बीबी । घघारी रात । पडोक
रात बी । जैमती घर हीक म्हेमां नीपे उठरी ।

पैरा बाळ पुछियो "हीक या कुम है चारे सारे बडें बाप री है ?"

हीक बोली 'पाबाईबी रा बेटा री बडू है । यां ने परे पुसाय घावू ।"

जैमती खेमकुमळां पैरा चारे निकळ्यी । गांभ रे चारे बाब में पोडां
बस्यां भीजो घर मेवो ऊभो ।

हीक बोली 'बाईया राखचाम छोड दो । संबारी चाम चामो । घने
पूबरं रे बाप रिया हो ।"

"हीरां चाम तो बाही चामस्यां हाबी ठली हिसोर । राजाची रुमना
तो दांभ मोमेना म्हाती चाम पोणे ई खोम मैई । बापु ना तो बा ई
चाम ।"

जैमती ने बेगतां ई मौजो घाने ब्हे पांभडा दो देय जैमती रो हाव
परदिपो ।

घापो राणी जैमती, भोजाची रो बांह ।

जैमती बोनी

"यां ने घावू बाप का घानर घापील्योळ ।
माळी नेरा डोर म्हु, बाप न पाछी बौळ ॥

परिहारों रो बल बहियां या भी खे के बां डर न पाखी मूनी राय ने
सू प हो । वीना ने बचन हो तो पछे घाट ।”

भोजो घाबर सू बाह पकड़ ने बोलियो

घाबो राणी जैमती घाबर घापीस्याह ।
सिर कटे बड़ तड़फड़े परत न पाखी दाह ॥

माया कट बाय बड़ तड़फड़ ला तो ई बां ने पाछा नीं बां । घापी ।”
पकड़ हाथ खेच ने भोजी जैमती ने पोछा ये बढाई नेके हीन ने बढाई ।
नयाई बोठां रे एह । दिन बाय बोठां में ऊप्यो

पञ्जमा ये बाय नेबो हेसो पाकियो जैमती ने बचावा बारे घाबो ।
कोई देरानी बैठावो बारे बचावा ने नी नीकळो । ‘मूहारी बैळ ऊप्य
ने घाई है इन ये कुन बचावे ।’ भोजा री परनिबोडी ताहू बोडो पन
कीचो “घाई है तो मूहारो परनिबोडो तावो है बरी घाई है ।
मू बचाहू ।”

उप घाय ने बचाई घाय मूहारी छाठी ये पन रेय ने घाय ।”

मुई मूलां में जैमती नीं । हाको बियो । सिरधार जटबळिया ।
रापीजी कट ? कं तो कुने बाबड़ी पड़ ने मरी कं भोजो लेव बियो ।
बोठां बळी चाटी में खोज कळो ।

भडो बडो ठाकरुं, घाटी काडो खोज ।
कं बैळ कुने पड़ो (क) नेप्यां गूजर भोज ॥

राय परिहार ने बचर बीची

कनक महल काळा पड़घा, सीसी पड़गो छांह ।
राणी ने भाञ्जो से गयो, घास गळा यिच बांह ॥

हाको बूट गियो । मोळं रा गूजर बड़ ने घाया पणनम्हेलां रा
कटेडा नू राणी ने बहार से गिया । राणी ने गूजर ल गिया । कुच
बरबास्त करे ? किच तरं करे । कुच है राणी ने सिजाबधियो ? पाठी
लाबां सोस ।

तेरा दू ना बळ बेडो भे गियो । नपारं पै हंको पड़ गियो । सिपूडा
बबीबग लागिया । लड़ाई रा नू ता फिरण लागिया भारत में बेपा
घाबजो तट घाटी रे तीर । बैजू बास्ते पुत्र मच गियो ।

बदनोरे केसर बटे गावे संभवा गीत ।
तुज्ज गोरी रे नारणे यात्र रहिया रणनीत ॥

मोळं रा गूजरं रे नाम बरबानो नितियो

“हें तो बाबनां नू राणी ने लाय नू ब जाञ्जो गीं तो नाम बबडाबनां
रो नीं रैना । मोळं रा पर बबीबोट भेता बीतेना ।

सांडीबान बरबानो सेव बीड़ियो । रैना में रायज्य गांभ । पानी भर
जोत्रात्री री बेटी बीपबंवर घाय री । ठाना लड़ता सांडीबान के रोक
के पुष्टियो

“बडे बाब रियो है ?”

“मोळं बापरियो हूं । लड़ाई रो परबानो से जाय रियो हूं ।”

“ता बरबानो मूने घेना । इहे भारत भेतियो ।”

‘बाईं काँई मसखरी कररी है । भगड़ी कयी देख्यो नीं है ।’

“मसखरी कियरी करे, ना परवानो भेला । मूँ सोबा पूँजर री बेटी हूँ । मूँ माख मिस री हूँ ।”

माया रो बैबड़ो उतार साँडीबान रे घाडी दीपकु बर फिरयी ।

“ना परवानो भेला नीं तो बाप मार परवानो जोस लेहू ।

। । प्रसी अपेहू झाप की सूँखो राळू फेर । ।

। बावड़ पाछो जावजे, कै दीजे समचार ॥

साँडीबान परवानो है मखरख मरियो राज मिजाब में सिरखारं मे जाब समचार सुगामो ।

मूँ सड़ता देख्या सौग ने सडे सुगायां घाज ।

कँवरं रायळा मांयनें, भारत भेख्यो नार ॥

बीबकंबर घानती घायली बरे घाई । मूँ माया रो बैबड़ो उतारियो । घुरीघुरी खेव री उजरे लोव देख्यो कठ ई पनघट पे किज सू जड़ भगड़ न घाई है । पूँछियो “बळ्ठी मळ्ठी बैबड़ो मनु उतारियो घाज ?”

“गुहारो बाप राज मिजाब री राभी मे ले घावो । तो तू बा बळ कीज बड़ न घाय री है । बळो मळो किज पे है ? लड़ाई रो परवानो भेस भीषो मूँ । म्हाउ बाप पे राज भजाव री तो तू बा फेरनां बड़ी है बापो है काँई करेला ? मड़ाई खेला माया टूटेला । है पोछं री बुबरियां मे घपुठी बाँब बाँब राज लेजाय । बाबकिया बनावेला पाभी भरवेला । बीबता बीब या बसा देखणी घावे कै ? मूँ भगड़ो भेस भीषो है ।

तू बनी धूनी है के बाबली धूनी है म्हारी तिरिया । बट्टे ई चाबन
 की नृत्तियोड़ी भांग ठो नी सायपी है ? भारत तो भासला ई करेमा के
 सब ला बाकइनी मूछा ए निरवार । एग भाळ में बारी म्हारे
 पाय नी ।”

दीरबंवर ए रीस मू होठ-भुजबा सागिया कइक न बोनी

बाबर ए बादे बाळबा
 रंइया ए पूरे सरीर
 उर बीजे माया री पावड़ी
 उर के एग बारी तरवार
 बब बप भारत में भासा बाबू सा
 बब बप बाळ मोरठरी तरवार
 बनी बनी री उठार मू ना पागदिया
 बनी नरी ए लोहू सा बइ मू सीस

दीप बर भापए मोटवार मे बियो 'तू बा टिन न बँठ जा पर ए
 गुना में ।”

घाबठी घोडा रे घाबी किरनी दीरबंवर । एग भासा में पोवा हो हो
 मु छाया उबरार । दीरबंवर ए भुजबा पुरजा बट पडिया । कैसाबठ
 बापनी ।

घोर बदा मइ लोग छपटा में मइ गुणाया ।

पड़हार ए मो मू बा हल मोठा ए दुजरी मे बाब बरिया । बबबाबन
 ई तरवार मू ठ मइदिया । बटारिया कुछल करे परदाटे बोले

बाहिरां छी तरवार । भाला बावे घबिया टूटे । लोवां रा द्वियता
 भावबिवा, सोहियां रा बाळ बँबबिवा । खारी नही लोहियां नू साल
 झेपी । छैव घाई कट कट मरिवा एक ठेबोनी भाव निकझियो ।
 बरझावतां ऐ फोई बापी देवबियो बीं रियो । बँयती छती झेपी ।

थासो ढाभी

वाटियाबाद में बाळ पढ़गियो । आरु बिना पाणी बिना बाहि बाहि
मखणी । नाहा ताहा में पायी नी । रोई में आरु रो ठिरवतियो
नी । पेट मू पसबादा मिलविया । गायां री घांस्यां में गीह भरिया ।
त्रिनाकरां री हाडियां निबळगी । होपी पत घापरी भेस्यां साम्हो अंके २
बाळको बटवा भागै । पर री सुमाई जळठी बँठली पूज्ठी रै ।

यां हांकरा री बाई हुसी ।”

छोनक रूपत बैठियां फिरती फिरती करे “बाबा, घांस्यां भेस्यां माई
माई लामे ।

ईकोणी बस्या सीपाने हाप में पकड़तो होपी निमासा भरतो केवतो
“माई बाई हे बेटा हाडविया टिपवा घांरा । भीक्यां मोरां री मासी
रा पप ठिलळतो अठै बोरो घामहो मटक रियो हे ।”

बाळ में रंजन बोई बन मे कारपो बोहो ई हे । होपी अठांरा ताहा
साव बीमी हेरा मे आरु बापी री अया दिन बाडवाने जानियो ।
हजारों भत्यां री हार जानी । भत्यां निबळगी जटी मे बरती काळी
पडती जाती । मोप सुमाई छोरा छारी भेस्या मे हुनकारता घबकारता
पाईया बादे । भीकमान घायो । बहुरो सुबाळ । नाहा बाही,

भाङ्गियां री तरवार । माता बाबै धनिया टूटे । लोकां रा दिवला
 लाननिया, लोहियां रा खाल्ल बैयिया । लारी नरी लोहियां सू मान
 खेयी । रीन माई कट कट भरिवा एक ठोखी भाव निकळिया ।
 बलदावलां री कोई पायी बैयियो बीं रिमो । बैवली सरी खेयी ।

धासो ढाभी

जाटियाबाड़ में बाळ बढ़िबो । जारा बिना पापी बिना बाहि बाहि मचपी । नाहा नाहा में पापी भी । रोई में जारा रो तिरनियो भी । पैट मू पसबाड़ा मिलगिया । दायाँ री घाँस्याँ में भीड़ भरिया । जिनाबराँ री हाडियाँ निबळी । होभी जत घापरौ भैस्याँ लाग्हो भकि र बाळजो बटवा नाभै । पर री सुपाई पळ्ठी बँळ्ठी पूछ्ठी रै ।

“माँ हाँपरा रो बाई हूँसी ।”

छोमल रूपस बैटियाँ फिरती फिरती बँवे ‘बाबा, माँवभी भैस्याँ बाड़ी बाड़ी नाये ।

ई बोपी बस्या सीमाने हाप में परइतो होपी निमाता बरतो बेबतो “मायी बाई हूँ बैटा हाडबियाँ रीमिया माँस । बीरफाँ मोरुँ री मायी रा पप तिमळ्ठी बँठे कोरो घाल्हो कटक रियो हूँ ।”

बाळ में रियन रोई बन के मारयो बोड़ो ई हूँ । होपी बराँस नाहा बाय बीणी हेरा के बाय पापी री बया दिन बाडवाने जातियो । हजारों भग्याँ री डार जानी । भैस्याँ निबळ्ठी बटी के बरती बाळी पळ्ठी जानी । मोप सुपाई छोरा छोरी भैस्याँ के हनवारता बचवारता राडियाँ जावे । भीमबाल घायो । सहये मुकाळ । नाहा नाही,

लोहियां पी घरवार । भासा बाबे पबिवा टूटे । लोधां रा द्विपला
 बालपिवा, लोहियां छ सल्ल ईबबिवा । जगरी लही लोहियां सु लाल
 झेपी । ईव जाई कट कट भरिमा एक तेजोबी जाव निकलियो ।
 बपडावटां रे ओईं बाबी बेबाभियो बीं रियो । बीमरी सती झेपी ।

आसो ढाभी

बाटियाबाड़ में बाळ पडमियो । बाळ बिना पापी बिना बाहि बाहि
नबयी । तादा सादा में बापी नी । रोई में बाळ रो तिरवतियो
नी । पैट नू पनबाड़ा मिलपिया । पायां री घांस्यां में नीह भरिया ।
जिनापरां री हाडियां निरडगी । होपी जठ घाररी भैस्यां घाम्दो अकि र
बाळबा बटवा लागी । घर री मुसाई जठरी बँठठी पुछठी र ।

‘या बांदरा रो बाईं हुयी ।’

घोमन काम बैटियां फिरती फिरती बँबे ‘बाबा, घांरनी भैस्यां माड़ी
माड़ी लागे ।

ई होपी बत्ता बीपाने हाप में पडङ्गठी होपी निगाछा भरतो बैबतो
‘बारी बाईं ई बैंग हाडबिया रीपिया सांघ । बीरणां मोछं री मापी
रो बप तिमडतो बटं बोरो घाम्दो नटक रियो ई ।’

बाळ में रीपन बोई बन मे मारलो मोड़ो री ई । होपी बजांघ बाळ
बाळ बीडी बैंग न बाळ पापी री बदा रिन काडवाने बापियो ।
हजारों घैत्यां री बाळ बापी । भैस्यां निरडगी बटी मे भरती बाळी
बरती बापी । भोग मुसाई छारा छारी भैत्या मे हलबाएडा बचबाएडा
साईया बाबे । बीपवान पापो । नहुणे मुबाळ । तादा बाळी,

छात्र लाल पापी सू पूरा भरिया। सुबार जानरी रो रंघट
मापरियो। पापा माभा बाभो बारो ऊनो। अठ बोधिया "दा जया
है पापनी मस्या बापे बसी। बाप पापी रो सब सुख। कर्म भीमसात
घर। श्री वैभवर्न ई दुरो नी बाभो पठ।

बाप रो मुझियो होषी कचेई मे जाय - राजा भारमल डानी रे हाथ
बोडिया "कच्छ सू काल रा मारिया घाब घाठ बीछी डैरा घामा हा।
घाप मेहर करो ठो भैस्वा बीवरी रं बाभे। बीप च दिन घापरे
दोतां मे काल ला। जराई घाप बीभो जो जया करठा रैबाबा।"

भारमल बोधियो "अपई ठो बायदा री लाने जो रे बीभो। बा एक
बाठो बही रो रोच राबळ रसोवक दे बाभो करो।"

एक माटा नी रो माटा। बही रो कई। घाप रो मुझियर बाई।"

अठ घाटा राबी बोधिया। डैरा बाधिया। रंस्वा अउने बिलोवर्ना
करे। बही रो एक माटो रोनीना सोनल से जाय राबळ रसोवक
मैल घाभे।

इमाबोन री बाठ। सोगळ रो, पट घनी घायो। होषी रो सुपाई बोधी
"रुपल रोनीना री रोनीना सोनल बही रो माटो मैमल मे बाभे।
बाय सू पटी बा।"

रुपल जो मटो मैल माभे राबळ बाभी। जाछे ठरवे री मोडियांघ
मरुपनी घायरी बूँ। रुपल रो तो बरबाजा मे बळमो गिह्यो। भारमल
रो मोएडा मे घाबयो गिह्यो। निजर ही बठे ही बमपी बा कुच ?
हाय काम मोचनी विद्यायन रा भाभो सती रो मारळ बुवना री बंन
है बरं री गाथी। पट्टियोई भायन सी या कुच ? पटां री छोटी ?
बने ई इनुरियो ऊनो जय मे बहियो।

"इस में रोहड़ है।" रूपल भाषा पर मू माटो की उठारियो बठा पैता बाच्छी छाबळ सचक बेनी की सापपी ।

होपी बाट देख एक बड़ी शूगी बो बड़ी शूपी तीन बड़ी शूपी । छोटी नीं घाई । भागियो । राबळ बाप न पूछियो । बठे कुम कंबडो के रोहड़ राखी है । ईं के किरियो कीं के किरियो बठ ईं बड़बड़ो नीं । हीपी बाप पणपट वें बठिया । राबळी बाबड़ियां सोबनी मोबनी पानां, पूसां पापी भरवा घाई । मांय मांय बाठां करे ।

"ए बाटी किछीक पूटपी है।"

'पूटपी नीं शूपी तो रोहड़ता ही क्यू ?'

देतिया ए छोटी रे पापो बस्योक है । मूने तो कीं फरलेंटी देबाप बीपी ।

जोर शूे क्यू नीं बेटी जतारी है । दूय बही री बापियोड़ी ।"

हापी रे तो गुमताई भाळ जगी । काटा री पू छड़ी माये वय पापो के बाटो बाप रे जोरो तमापो

"ईं राजा रा ये बरम ? शूपी छोटी रे तारे जबरजस्ती ? बरबार है दिवरा जमारा वें जो इज्जत मयाय पीबता रैबां ।"

साहा साठ बीनी हैरां रा जत तगरारां कुल घबानबक मारमल के बाप दरिया । भाबळल में मारियो जो तो मारिया बण बीं रा बंय रा हापी बाप ने बीब ो नीं रागियो । भारबल री एव दुहरामी साडीजी है घाना मू । बाठपीं गिरवी मू दिवळ एव साह वें बंठ पीहर उबरबोट बाप घावा । जनां ता भीममान वें बबजो कर काटियाबाड़ घाररा गंभ रा बपी रे तबर भेनी । "धीनकाळ मे शूां बीपी । घाव

घाबो घटे राज करो ।”

भीममाल बस्यो राज । कियो मन राजी नीं न्हे ? काठियावाड़ सँ
बायेबा घाया । भीममाल दे घांन बुवाई बाँटी छिरली ।

सोबी बी जमरकोट में घाघा सुषां क्यां को बैटो बिबो बीं रो भाय
राखियो घातो ।”

घातो बापी बघो घचपळो रोक राव लाये । बोड़ा बड़न रो छीक
बघो । मामा ए बैटा ठो घाघा घोडा पावे नई घाघा नै देवे रोड ।
घाघो रोक सोबी बीं सँ राइ करे “म्हारे मां घाघो बोड़ो जा ।” नां
बिछायत में । काई बैटा नै केवे । घाघा ए काम सँ एक लखी बज्जारो
बटी नै न्हे निकळियो । बीं रो बोड़ी ठांन दीनो । बछेरो लाईं ।
बज्जारो बांन बोटी रो मान लैजाब रियो को ककन रो बोय नीं ।
बज्जारे सोबी बीं नै कहियो

“बाईं तो बछेरो नां राखो । नां को बैटो नईमा । घाघी एख
उठेरको नीलखा बोड़ा रो है को ।”

सोझीनीं तो पछेवड़ा में बांन बछेरा नै बरे लाया । घाघो ठो बांटी
निहाल न्हेपियो बछेरा नै घचट्टां घुस पावे । बछेरा नै रास में काडियो ।
बछेरा नै कूदाबा बापियो । को कूदे तो घस्यो बांसे कळेर भपियो ।

एक दिन घाघे मामा रा बैटा नै हैसो पाड़ियो “घाब घापां पीड़ा
दोड़ानां बुघरो घाये निबळ ।”

दोई बघां घाप घाप ए बोड़ा दीड़ाया सोबा रो बोड़ो ठो छळीनो
छेरियोडो । घाघा बापी रो बछेरो तो नबो घतल बछेरो ठहरियो । मदीं नै

बढ़ीने डोहो मोहो धावतो रुकतो बौड़िबो । बोई बोड़ा बउज्जर पुपिया ।
 छोहो लो कबि म्हारो बोड़ो तैज । घासो डापी कबि म्हारो । बोई
 भाईयां टी थ्ही लड़ाई । घासो लो से लाजयो मामा रा बैटा भाई रे
 मार बीया हो बार । छोहो रोवतो सवो मां कने गियो ”

“मां मां म्हारे घासे मारी ।”

घासा टी मामी बोली ‘हां बैटा मारेला क्यू नीं । घरे राखिया पाल
 न मीटा बीया हू जो लो मारेसाई । घासो घस्यो कवां मइब हू लो
 बाप न क्यू नीं घापरो दाब के । बाप के बां बतीं काकड़ी टी नई
 काट केगियो जो खैर लो मने ।”

मामी रा बोम मुजठाई घासा रा हाब रो लाजयो बठे हू पड़गियो ।
 सुबो छोड़ीजी बने गियो ।

“म्हारो बाप कुष ? म्हारा गांभ कस्यो ? बठा सवार रो सवार ।”

लोड़ीजी बिस्तार मू छागी हरीगत बही । घासो लो मां मू मुजरो कर
 सीयो “मां भीममाळ जापरियो हू ।”

“बैटा उठापळो बठ थू ।”

“नीं मां । म्हुने रोक मठ ।”

वही डूढ़ मू डा वें देव छोड़ीजी घाना मे छीर बीबी “बैटा कूष
 उठापळो ।”

घाने भीममाळ रो गियो बबड़ियो । भीममाळ रा बाप वें बोयसां बूढ
 री । बाइम दाग बीबोरु माप रिया । घाने घाप न घाम रा गोह
 रे बोरा के बापियो । छामा वें छामगियो । बाडियोहो मोबती ई

नींद घायली । कभी वो एक घुं घाँस चुनी तो कैसे चुना ही छावड़ी
सीचा एक सुपाई ठकी एकटक बीच साम्ही भोक री । उन री घाँसियां
में घाँसु भरिया ।

घाँस ने घायली घाँसो या नु घाँसियां पढाय म्हुने न्हुं बार री है ।
ई री घाँसियां में घाँसु न्हुं भरिया है । घाँसो बँठो न्हुं पूछियो

घाँस का कुन हो काई बात है ?”

“म्हूँ तो बाव री बालन हूँ ।

बा एक टक घुं न्हुं बोव रिया हो ? बा री घाँसियां में पावो
न्यु भरियो ?”

मासघ निघासो न्हुंवाटी बोली “बीच कँवा री बात है न कोई
कुनवाटी । घायली कोई चुनी बात मार ।

बाव काई मार घाँस का कँवो ।”

“कहियां बीघ कटे ।”

“ये म्हुँने बीरो कहियो है तो घाँस ने बात कँपी पड़्यी । घाँसो
निर बड़ियो ।

मासघ घटीने बटीने मारु बीरो सी बोली “जाने रैनियां म्हुँने म्हुँरो
ठाकर मारमलजी मार घायलियो । ये ही बाँरा कसी ता घोटी घोटी
छरखी घायलियां । योई मूँज रो मारु । घस्या ई बीया । पनो
गुन बीबो म्हुँने । हाय नन में बापी रो बीन ई नी रियो । बाँरी
नवापो देव बापी मूरठ मार घायली ।”

घामे माफण रे काल वने मुंडो सेजाम बोलियो "मुं माफणजी रो बेटो घामो बामी हूँ ।"

"हूँ ?" माफण रो घाणिया बमक्या ।

'तोही जी घागा बिन बवा घठा मू बो ।'

माफण घाघा रे बुडा वें हाथ मैलियो "पीरे बोल कोई मुछेमा तो मारियो जावेना । बामो ग्हारे बरे ।"

बालक घामा ने घावरे बरे स घाई । बोडा मे पर बं बाय हीबो । बालक पूना रो बाम्नी स बालका लागी । घाघाजी मे बहियो "रज्जा रो बबरी बापेनी रोजीना पूना मू तुमे बा जाबू पून रे भाबू ।"

घामे पूछिया "घम्ली बमीर हूँ बा जी पूना मू तुमे ।"

माफण बोबी "बीं रा हर रो बाठ तो पुछो ई मनी । फुना मू ई बा जोपी हूँ । पतर रो बावरो बात्रे तो रिमण मे मुठ बात्रे । रिमण रो बामरो बात्रे तो पतर मे मुठ बात्रे । बाफ बूट रो बावरो बात्रे तो दूफ दूफ धूे बात्रे ।"

"बाबी ?"

'बाबी बाई । घागा बा परणमा बें पबाम बोल जात्रे । घमणदार रे घमके बड़ तो बाबा मे ई गिट बाव । घम्ली हूँ बा ।'

माफण तो ब प बामनी हूँ । घाघा रे मन में बांटा दाहनी । बीं रे बड़ नी बर । मूनां बीं रा मना घात्रे । बट्ट बिबट्ट जीव बरे ता तर देगु बीं मे ।

एक दिन घाघी बोलियो "म्हारे रोटी छट कर दे म्हर्न बारे बाबको है।"

मासक कहियो "भाई, मूँ तो बाबेतीजी रे लखरो पूच री हूँ। फूल सेन बाबा री बैला भ्येयी। बोझा ठम बाबो।"

घाघी बोलियो "साबो लखरो मूँ पू पू ना रोटी पोबो।"

लखरा करै ई हुबिया ई है ? माझण मुळकी।

'देख सीम्पो घाघार कस्तोक पू पू को।

घाघे तो लखरो हुबियो। फुलां रा काबा लयाया, फुला लयाया। बाबो हुबी। पू लख ये हुबो लिखियो। मासक लखरो देखरो रीपी के घाघी ऊपर मूँ लखरा ई हुबिया लख घली लखराई करै ई नी देखी। रसी हरबी बाबेती रे बाय लखरो लखरी को। पूरै दिन मासक लखरो नी तो बाबेती लखरा भियां बैठी। रोख तो बाबेती फुलां री लखरी पू तुये बी दिन बाटा लख गिया।

बाबरा ई मासक ने लमकाई, "सांख बटा काले लू लखरो लारै बिच के कुच हुबियो?"

मासक लखरी "बापजी मूँ हुबियो घोर कुच लखरो?"

'बै हुबियो? मूँटी कटा री? देलां लू लख न बटा तो घस्यो। सांख बटा नी तो लामड़ी लखरा लू सा।'

मासक बोली 'म्हारे लखको घायोड़ी है बी हुबियो।'

ल खारी लखकी के घटे म्हारे लनी सा।"

मानस घरे रोबती रोबती घाई । घासे पुष्टियो 'काई म्हुयो ?'

"ये घर म्हुं बोई मरिया । ब्हेमा काई है । बाईजी रे तो कुना रे
जना घास माटा बडिया है । मजरो मुष्टियो जिने घठे लाव । म्हुं
तो दरपठी बँय हीबो म्हुारे पावणी गुष्टियो । घब किण मे से जावू ?

घासो बोलियो "कोई बात नीं, डरे क्यु है । म्हुने जेना ।

"ये बारे, बनि जेजाय न म्हुारी घाल छिबावची है काई ?"

"म्हारे बास्ते घनं रुप में क्यु म्हुाष्ट । बीतेसां जो म्हुारे साथे बीतेना ।
म्हुने पावणी बघाय मे घाल ।"

घालाजी मे साड़ी घापरो वँदाय घु बटो बडाय राबळ भेयी ।
बापेनी मे सोळा ई घाला बिसबाध के पो घादमी है मुपाई नीं । बापेनी
पुष्टियो "मजरो धे मुष्टियो ।"

घागे घु घटा के 'हूँ' रे टबधारी बीधी । घु घटा मे घासा रे घाधिया
तो लौदापर रा संन रे नाई भटवा करे ।

बापेनी घापघ मे बहियो "घु का घारी पावणी मे घठे म्हुारे कने
छोड़ का । या तो पनी बठर है म्हुारे कने बँटाय मजरो घु घावू ना ।"

मानस बसाई घोला लीका । बघ बापेनी नीं मानीं । मानस पावणी
मे बापेनी कने छोड़ पर घापघी । मन मे मरदान घु घरदाध करे 'है
मरदान घु है । लाव रापने ।"

बापेनी बोनी "घादी घासां बीडक नामा कना ।"

दुकी छोटिया मे तो काव रे बिज बारे भेत्री । अवे बापेनी घर कामी
बीडक नामा लपका बीटिया । बाजी घुरी ग्री । घालो बोलियो "म्हुं

एक दिन घासो बोलियो "म्हारे रोटी घट कर हे म्हुने बारे बावनी हे ।

मासप कहियो "भाई, म्हुं तो बाबेसीनी रे पबरो बुन ची हूं । फूल सेम बाबा ची बेजा ब्हेयी । पोका ठम बावो ।"

घासो बोलियो "सावो नजरो म्हुं बुनु वां रोटी पोवो ।"

'बबरा कई ई बुनिया ई हे ? माळम फुळकी ।

'देख सीगयो घवार, बस्वोक बुनु बो ।"

घासे तो नजरो बुनियो । फुलां रा काबा लमाया, फुला लमाया । बाळी बुपी । बुनन में बुको लिबियो । मासप पबरो बेबती रंपी के घासी ऊमर म्हुं पबरा ई बुनिया पन घसी बतराई कई ई नी बेवी । हरबी हरबी बाबेसी रे पाव पबरो नजर नीवो । बुई दिन मासप रामळ नी तो बाबेसी माराम बिबा बंटी । रोज तो बाबेसी फुलां ची घाली सु तुसे बी दिन घाटा बड यिया ।

बावता ई मासप ने बमकाई, "सांभ बठा काले नु बबरो साई जिन मे कुन बुनियो ?"

मासप डरपयो "बापनी म्हुं बुनियो धीर बुन बुबतो ?"

'बे बुनियो ? फुटी कळ ची ? देसां बुन न बठा तो घस्यो । सांभ बठा, नी तो बामकी उठार हु सा ।'

मासप बोली 'म्हारे बावनी घाबोकी हे नी बुनियो ।'

"घाटी पावनी रे घटे म्हारे बने सा ।"

बीतिया का हारिया।”

बापेली घासा की धाँधिया में धाँधियां बाल मुझकठी बोधी “बे तो
मकरो पूँचियो भी बयत है बीततिया। जोषी रा धेप धनेक करो
करम छिपे नीं भयूत मयायां। बठानो कछा रा विरवार हो ?

“नाम बाबिबा पिछताबोला तो नीं ?”

धरँ पिछतायां धेँ काई ? खुडी जो कांटी पर लीपी।” बाह में
देरियोड़ा पकरा साम्ही देखटी बापेली बोसी।

घासे बापेली रो हाव पकड़ता पूँचियो ‘धेँ म्हाप ?’
‘हां कांटी।’

हुबी बाजी रमक ने बीठ्या तो देखे बारे बीक में धोड़ियां पछबाड़ियां
ठोड़ की कुर की हलहूबाय री। पाव रो लोन पैठो धेँचियो। धोड़ियां
दटायाड़ी बटे नीं। हांतां खाने साठां मारे।

घासे पूँचियो ‘यो काई ?’

बापेली बोली ‘धेँ भारमल डामी री धोड़ियां है। मां डामी सिबाय
करँ ई बीं मे पूठ रँ हाप मेलबा बीचो नीं। डामी रा बच्चा बच्चा
ने पठां मार बीचा। धोड़ियां मे धनी हेरम री धोड़िस कीबी पप मे
धोड़ियां बाबू धाई नीं। कोई कने जाने ती हांतां खाने साठां मारे।
यां मे तो ऊमी ऊमी मे बाँधरा नू चारो पापी देखता रिया। धरँ
बकर कोई डामी बंठ रो घायो है जिबरी बासना मां धोड़ियां मे धाई
है जो पछबाड़िया मुडाबा लागनी।”

बा रँव बापेली घबाल बरी धाँधियां पू घासा साम्ही धरँगी। धाँव

ईडर जाये री त्याठी करे पय बापेसी जावा देवे नीं । बापेसी ने तो भोळाय राखी 'प्रवार नीं जातू नां कबोला बरी जातू ला ।' सुहाटां ने बुलाय भासे कहियो रतू राठ बोझा रे सुरताळ्यं बडो बोभियां ने कहियो बस्ती छाव बाळां रा कपडा नीय तयार करो ।

डावडी सुजरी वीं भाय बापेसी ने कहियो 'बाईसा बाईसा घासाजी तो ईडर भाय रिया है, बारे त्पारियां भ्येरी है । सुरताळ्यं बडीबन ताय री है ।'

भावण सरसी बादळो बुगला उडिया जाय ।

सोह भाळो बापेसी भासो ईडर जाय ॥

बापेसी सूजठाईं बली जाय भासा री बाल पकडी । मळगळीं भ्ये बाव में घर लीबो 'नीं जावा हु ।'

भासो कहियो 'भोडी बाटां करो । जाकरी पिया विना घरे के ? रजपूत घर सिपाही री सुनाईं ने तो मळगो रीबजो ईं पईं । नीय काठो राखो ।'

सज्जन मन में माठ कर पिठ नितप्रत न पाय ।

रजपूतां र सिपाहियां, धळगे सदा रहाय ॥

'बाहे जो जो मूँ तो नीं जावा हु । नां ने बडीक नीं देणु तो म्हारो पिठन बबटावे । नां विता तो मूँ भूष में हुक न मर जातू । बाजम में पिठक न मर जातू । पूनी री प्यंसी जाय न मर जातू ।'

बापेसी तो रुदन करवा लागी । भासे कुपट्टा सुं जातू पूछ नजीक बोलीया । भासो विचार में पड़ियो । भाज ईडर छाक' विना भ्येपो र बकर भ्येपो है । बापेसी जावा देवे नीं काई कक' ? या सोय जावे

न परो जाय पन या लोके बठे ? सकुको बाजियां घांस खोले । नी
 धुंतो दाक नाय न सोबाय दू । घासो छठ न मंडारिया सु सीसो नाय
 प्यालो भर बापेनी साम्हो शीबो ।

“म्हारी मनबार”

“घाय धरोपी ।”

“या मीठो कररो ।”

घामे तो मनबारां देनी बांही । घाय तो पीके घोड़ो न बापेनी ने छोड़ी
 घांस के पावे पयो । बापेनी रा डाबर नेमां में नना रा राता बोरा
 पड़बा लागिया । हुबारा रो भर प्यालो घासेबापेनी रे होछां के नमायो
 नटती नटती रे दळे ऊंबाय दीपो ।

मा मा बरतां मार मे, प्यासो दीघा पाय ।

बापेनी ने ती नमो घायदियो, घामे म्होड़ा रो नको नमाय बापेनी ने
 सोबाय दीपो । घानो बठे ई परो नी बावे पो बापेनी बीरो हाप
 पकट रागिया । बापेनी री तो घास बिलपी । गुहार गुरवाळ्य बके
 पो एरव तपाय घन माररिया । एरण रा नटाका ऊपर सुपीत्रिया ।
 मूती नगी बापेनी चमकी नीर घर नना मे घांसियां बुजरी गेच न
 घांसियां सोल र बोली

देख छटवरा म्हें मगिया बार्ई पक गुदार ?”

घानो बट बोलियो “बंभरां पहीके मूदरा बां बग्ज नीमर हार । ये
 तो बार्ई नी बांरा नाक हार बड़ीय रिया हे । सोप बाबो ।”

बापेनी ने सहारो देव पाठी सोबाय दीबी । नीर घासा देव बापेनी

ए हाथ में घू हाथ में घड़वो कर घासी तो बोड़ बड़ियो ।
 बड़ीक घाँक मिली न बाबैली बमकी घासा ए हाथ में काठो पकड़वा
 ने मुट्टी बबाई तो मुट्टी तो खाली । बमक न बड़ी हेजा में घायवा
 ने हेरियो । सुटी के बाकक साम्ही निकर बी । माळिया में पसाप
 साम्ही म्झकी । ठावा में बोरा ने देखवा भागी । पन बटै तो काई नी ।

सू टी नाहि ठाबणों पड़वे नाहि पलाए ।
 सेजा नाहि घायवो ठाणा नाहि केकाए ॥

घासा ए घाबीड़ा बाबडी वे हाथ मुडा भोय रिया, कुच्छा कर रिया ।
 घासा री नकर रैप रैम प्रीपमळ रा रैसा साम्ही जाने । कठै ई
 बाबैली घाव नी जाने । रैसा में प्रीबी प्रीणी खेह बडती बीबी न तो
 घासा ने रैम पड़ियो । बीमी बीमी बटिया री म्झकार मुभी न तं
 घासो बाकयियो बाबैली रा एव री पनबी बाब री है । बाबैली तो
 घबार घटे घाय ब्यी रैप । ये घाबीड़ा रोज करेता । म्झ हाप में लीटो
 लेप बड़ियो "हाथ मुडा भोय घबार घानू । पछै जासा ।" बाबैली ती
 एव बीहायां घाय री । बालै घाफाघ में परेवो बड़ियो के घाटियां
 री बाबोड़ी बालियो । घासाजी ने देखता ई एव घू कुची "घासी कीबी
 म्झारे सारे ।"

बां घटे क्यू घामा ?"

"घानू नी तो । बां म्झारे सारे बी क्यो क्यू कीबो ? बालो पाछा ।

"पाछा बालछे री बाव म्झुटी । बां बाबो म्झै पाछो बरे म्झ घानूला ।"

बाबैली ने कभी समझई एवपूठ री क्कर बीडा बीडवा घू बडै बरे तो
 करवा बीठिया बोळा लाने । बबां सोयन बीबा । बाण म्झ घामा ए
 बीपन बाबा ।

'करी घासोना ?' बापैनी जीब बाडो नीबो ।

'नाबध री तीत्र पै ।'

'बबन हो तो बाबा दू ।'

करी ई तिक संकर री देवरी हो । देवरा में बाप घासे बबन हीपी
"पा संकर री घासे देवु तीत्र री दिन बहर बा बने बाप पूत्र ना ।"

गिव संकर री देवरे, घागळ तिया घीत्र ।

में गौरो घावस्यां, साबण पैसी तीत्र ॥

बापैनी बोमी तिक संकर ने नाभी देव नेवु जे पा मोत्र री दिन में
घाया हो नुं बीबनी नी रीबु । बाटी बडु बाडुना । संकर री मीगन
जे बीबना री बाडु तो ।"

पकरा बोल नेव बापैनी रय बडी । मापीड़ा घोड़ा रा मु बा ईहर
छागहा बीबा । घोरा जातिया जावे नेंबा बाब मारे घुटना बाव
ये घासे बहियां जावे ।

छोड़या छोडा टोरही छाडो ननी बनाम ।

घामस बहे री यलियां छानी घट गी घाम ॥

बर घंत्रनां बर कृषा ईहर बाप भूमिना । बाबरी रो बाव मुबरो
बीबा ।

ईहर घांवा घामसा, ईहर दादम दाग ।

ईहर गड रो बाबरी रिदमम शरह माग ॥

घावा बी रा बांरिना घीर घवा ई निरदार बाबरी में बडे रा बांरिना

रे तारे बोझा बोझावे तिकाचं रमे बाया बावळिया सैना करे । घोट
 वृहा वस्त्रां घुसे । रोझां नीजां करे । घु करटां करटां तावच धावयिचो
 घासा रे लो चित्तां व्हरवी । एक बायेली एक एक एक मिळे । धारवियो
 बोधे कावला व्हाये । बावळ्या घर बावळियां वे देख देख वृहा बोसे,

बिजळियां हळ मळ हुई, धाभां किया बण्णाव ।

घर मंडण घर धावियो, घर मंडण घर धाव ॥

धावै धावे बावळी नमक री है । एकर बडक रिचो हु । घोर पांच
 वसारिवा नाच रिवा है । उज्वाव नळ हलकाम न घर मिवा । बावळी
 पळायो जायो । घासा रे घु डा लू निचळी 'घाव ती हैस घाही मे मेह
 वृठ रिचो है ।' जागे री साये बावळी रा नळका मे बायेली री वृरत
 नचर घाई । घासा रे कळये कवां छोड शीची । म्मक न कवा
 म्हे मिचो ।

"धाव तिय काई है रे ?"

"जावच री वृच ।"

जावच री वृच रो नाम नुचटाई लो घासा मे नाचियो वे धाभा मे
 नमचली बावळियां बी रे बाये पक री है । लीज कासे, भीजमाळ वृरो
 बायेली री प्रच काळां चववारो । घासो लो ह्ये वृ' री वृ' बोझा वे
 जीव काडियो । बीं जाचीवा मे कहियो घर भी रावाजी लू बीज
 नापी । घरमर घरमर छांटा पडरिया घासे लो बोझा रे एव समाई
 "बाजी घारे हावे है वाच ।"

वृच वरचो घाकाळ म्हेरिचो । नळ्या काळ्य बीज रिवा । वरका लो
 कं म्हे वृ' घोरो कं म्हे धावे वृ' । बोझा रे घर मेह रे होबाहीव
 नाचनी । एकर वाच ई मेचवाळ्य मे मे धाव मुचियो । वळ वळ

एक धुँसिया । गीता चाटा ही खबर भी पड़े । जानता जानता दिन
 घाबलियो । घासा रा बचड़ा बोड़ा रो नीच बानी में तर धुँसियो ।
 बोड़ा रे फुलका में लाम भी माये । बोड़ा गोड़ा लई बादा में पप
 लपप धुँसियो । बोड़ो ठो बचड़ियाँ पैसा सामलियो ।

तन भीजे टापर पूबे, खबर भीजे खबलाळाह ।

धुना बैर भीतारिया, बैरी बरसाळाह ॥

भीगलाळ बोझा दुरो । पीड़ो बाकलियो । बनी बचवान बोझी बमाई
 नाच मे हीबो बल्लो हीनियो, हीबा रे छंनारो छंनारो घाप एक
 हबेली बने बलियो । बचलाई बोड़ा ता नीचे पडलियो । घासो
 बाई बर । हयती रा छाजा नीचे घासा रो बाग मे ऊभो धुँस
 यियो । बल्ल बल्ल बानी पड़ रियो लल्ल लल्ल नर लल्ल बंध रिया ।
 घासा मे बटीये बकि बटी मे बापेली हीजे । निब संकर रा देवरा
 रो प्रप मार घायो । “वे भी घायो घर धुँस जीवती र बाबु ठो संकर
 रा छीगन । वे लबह बाद घाबलाई घासा मे तिबाळो घायलियो । घासो
 गाडी बचड़ हीम लंबालियो । बापेली बर ई जीवती नी रे । नाजे
 ई बैला ठो पोरी बमभी लापेला । बापर नी बळ । घासा र बम में
 घासा खबरो । बम नी बटी ठो बाई ? ग्हारी बरतीती ठो भी नु
 पठ बापेला । बं बळगी ठो ग्हारी शिम्पली बळगी रं रेपभी ठो प्रीठ
 टुटवी । होई बानी नु ग्हारी प्रीठ ठो न्ही खलप । मोरळो ई बरमो
 बैह बर । दुख घर बिराहा नु बरिवोड़े घासा रा घुहा नु निजळ
 लियो ।

गई तो सनेही गई, रही तो टूटा मेह ।

दोनू बानां भए गई बरस सबाया मेह ॥

ऊपर ऊंची बैठाची दूबो मुलियो बो फुल ? ऊपर नीच बचवां नु

रे नारे मोडा शीकावे बिकाप रने बाबा बाबदिया सीता करे । बीत,
 बुझा नाना सुखे । रीभ्य नौबा करे । मु कट्या कट्या तावक घाबदियो
 घासा रे तो बिली पतरणी । नन बाबेबी एक एक पन मिले । बाबदियो
 बोवे कापला बडावे । बाबदिया पर बीबलिया ने देख देख बुना बोले,

बिबलिया हल मल हुई, घाभा किया बरुआव ।

वर मंडल पर प्राणियो वर मंडल पर घाव ॥

घामे घामे बीबली बनक रो है । हवर बहक रिगे है । मोर पाव
 पसारिया नाच रिजा है । तलाव गल्ल हलफाय न भर पिपा । बीबली
 पलायो खायो । घासा रे मु डा बु बिबली 'घाव तो देख घागी ने मेह
 बुठ रिगे है । घामे रो घामे बीबली रः पलाया में बाबेबी रो सुख
 नवर घाई । घासा रे कल्लमे बना छोड़ बीबी । बनक न कया
 भू दिगे ।

“घाव तिम काई है रे ?”

“तावक रो बुज ।”

तावक रो बुज रो नाय मुनताई तो घासा ने ताबियो ये घाभा में
 बनकती बीबलिया बी रे नावे नक रो है । तीव काले, भीममात्र हुरी
 बापिसी रो प्रक काळ बडमारो । घासो तो हुरे न्नु रो न्नु मोडा पे
 बीब कलियो । बी ताबोडा ने कहियो पर बी ताबाबी नु तीव
 नापी । हवर हवर लाटा बडरिया घासे तो मोडा रे एड तनाई
 “बाबी नारे हामे है बाव ।”

बुज बायो बाकाह भूबरियो । नाटा लाटा बीप रिपा । बरसा तो
 नई नई नई घोड़ी नई नई घामे ननु । मोडा रे घर देह रे होशहोश
 नावनी । हवर बाप ई देवमात्र ने नै घाय चुकियो । यल्ल पल

बोझो देखता ई तो घासे लगाम घाम टप्पो मात्र न ऊपरे बहियो ।
 धोड़ा री धेबी रास ललकारियो तो बापरा मू बाला करवा मायो ।
 बाले छहिया जाय रियो है । मुसल्लाबार बरसा भू री । नदी नाझ
 बळ बळ वावा कीबट मे उसाबना घोड़ा मे हवाया बाय रियो । घ बज्जा
 संबळा मारय डाकनो प्रीठ मू भरिनो राजन दड़ाछंट पोने बोका ।
 बालियो ।

जळ नदिया कीजा जमा गिणै न जळ घळ घाट ।
 घावे राजिद प्रीठबां राजिद गड़िया बाट ॥

उजड़ घाम उतावळा राही गिणे न गिण ।
 जावे घरती पू सतो घघ हो घाटा घन्न ॥

बजान देभो रोहियो । बीरन मू बाही छिरी । नदी बोराट कर री ।
 हावा पुर बैव री । पग बमे नी । टोळ रा टोळ पांभी रा उठाऊ
 घाय रिया । नाबड़िया लागवा री पाहू नी ।

धगगां सगगां नदी बहे नदी न सागे नाव ।

“धो लो घई । घामन बहियो । ईं हाकन मे ईं घात्र ईं घाकपा हो ।
 देवा बाळ बीर मे हेभो पाहू बा बार उठार रे ।”

घामन तुम मू हेना बरे मुगजे बाडू कीर ।
 पग न ठामे पाबटा नदी उठार नीर ॥

बाळ घामन रा हेभो मुप न उठिया । बाळ री मुमाई नूछियो
 “बडे बाधो ?”

बाबलियो ह । पूंपोडां बोडां ताई पाणी में ऊभो ह, बाबा सु पाणी भररियो ह । बीज री ई' के सुब नी । बोडो मूडागे पडियो ह । कोई ह भसी मगज । सेठानी ऊगर सु म्ठ बाळ पकस छोका सु नीके सतागियो । पूंछियो सिद्ध बापरिया हो ?

‘भीममाल ।’

घासाबी हो काई ? बाबेली बी रे बचना रा बंभिया पबार रिया हो ? घाप बीमो फिरर मठ करो । पबार बोडा रो परबन्ध कर । मूई ई भीममाल री बेटी ह ।

रोटी किसु खाईने । बोडा रा परबन्ध रा नाम सु मन में पोड़ी तनस्ती घाई । बाळ में मोहर घाल बीबी । सेठ बी व दिन दिसाबर सु घाबो । बी री घांख सुनी देखे सेठानी भरौखा सु झुक भाबी रात रा किस सु ई बात कर री ह । नीके छोको टाक राखियो ह । सेठनी पसबाडो केरठा बोलिया “घाबी रात रा किस सु बातां कर रिया हो ? मूई ठो घडे घकेला पडिया ह । करो जि मू बातां करनी ह । बां बाबो र बांरो परम बाणै ।”

सेठानी बीबी ‘बरम काई बाणै । यो बोड़ी बां घाज मोल मेन घाया बो ठो चोरी रो ह । बर घनी लारे रो लारे घाबो ह । बरवा मारना के ऊभो । घाबो देखो हबाळी ई' बोडा के । बोडा रे पूंछइ बीज देय बींसा ।’

सेठनी बरपिया “दे दे घाबी । रियिया बुदिया ही बही । घापां ताहुकार ठेरिया किसु लइठा किये ।”

सेठानी हिनो पाडियो, छोपी दे दे पनेको खोल बां खिररापं के दे दे ।”

घोड़ी बैलगाँव ई लो घासे लगाम भास टप्यो मार न रूपरे बहियो ।
 थोड़ा पी राखी रात लसकारियो लो बायरा मू बाठा करवा सायो ।
 बाएँ बहियो जाय रियो है । मूसलाधार बरसा छै री । लही नाटा
 जल पल काबा कीचड न जलायन। घोडा ने दबाया जाय रियो । घ बजा
 संबला मारय डाकनो प्रीठ मू मरियो राबन बड़ाघंट बोटी रोटा ।
 बानियो ।

जल नदियां बीजां जमा गिलीं न जल पल घाट ।
 घाव राजिद प्रीतवां वाजिद गड़िया बाट ॥

उमड़ पम उठावला रोती गिले न रित्र ।
 जावे घरती धू सतो पप्र हो घोड़ा घमन ॥

बनाम देतो रोहियो । ईरम मू घाडी किरि । लही कोघाट कर री ।
 हावा पुर बंद री । पप बसे नी । टोड रा टोड पामी रा उणाटा
 साय रिया । नाबहिया नायवा री बाह नी ।

घगम्यां सगम्यां मदा बहे ननी न सागे नाव ।

“ओ लो घबं । घामन बहियो । ई हावप ने ई घाव ई घावपा हो ।
 देयां बाटु कीर ने हेनो पाइ लो पार उगार हे ।”

घासन तुम मू हेना करे मुलाजे बाटु कीर ।
 पग न ठामे पाबटां लनी उतारे मीर ॥

बाट घामन री हेनो मुप न उठिया । बाट री मुबाई पुठियो
 “बटे बाबो ?”

“भासाबी ने बार उतार, प्रवाह धाव ।”

“या तेबार री राठ बरि बारे बाबा री हू ?” काळ री तुपाई तकफ ब बोबी ।

“भासाबी प्रापय तुपाई रे बचवा य बंधियोडा जाव रिवा हू । म्हेने बाबा रे बाने उतार धाव ।”

“भासाबी ती धाप री तुपाई रे बचवा य बंधियोडा प्रतरा डुरां मूं भापता धावा । बां बांरी तुपाई ने धाबी राठ रा छोड़ न बारे बाबो । क्यू ? बापी तुपाई ने धासाबी बरहा लागे परमा म्हेने ही बां बरहा मानो । बस्वो बी तुपाई रे बीब हू बस्वो म्हारे ही बीब हू । जो बा प्रवाह बारे पब देव दीपो तो बरि म्हारे भरनाछो नीं । म्हाप ने कठबा ।”

काळ रेबिबो ‘बाप बरसां नू तो धाव म्हारो पीठ नीठ प्रबबोलनो तुटियो । धाव ई पाछा हेठ भिधा हू । म्हुं धासाबी ने पुपावा ने गिवा तो धा तो पाछा प्रबबोलना ने लवा । म्हारो तो म्बियोडी बर भाव बावेला । मामने सुतो ई बासियो ‘भासाबी म्हुं तो नाबो हू । धासय कोयनी । धाव री राठ बव जावो । काल उतार हु ना ।

धासे बिबापी “म्हेची म्हेसा बी म्हेला । ईं तो पार उतर बावेनी कर्न जाव ऊमो रेवू । ईं बा बासबी यें तां म्हुं नरी नै ।”

रे बापी बोडा ने उतार बीबो पाड़ी नरी । बोडो तो पापीपबो बड़ड़ करतो बागी ने बीरतो र्वनी पार बाव उतरियो ।

सांभी प्रीठ समेह गत, बिस में द्वित छामोह ।

धास्य भण रे कारणे, काछी बड़ धामोह ॥

दफ्तरी दफ्तरी काम भीषणान्न पूरिया । काम धायो । घासेत्री केबियो
 मूझे बोयलु कुट्टा करलु । काथा घरियोका पावा बदललु । ठेंबोर
 रो दिन । ई वसा में सहर में बढ्या बोयो नी जाये ।

पीडा के घाथा रो डाळ रे बांध पसीमो मुवावा लायिया । धी कौस
 पड़ न धायोको बरला ए पिटयोको । डील बढेला लु लुर लुर
 धुंमरियो । भपनी लाययी । नीर घाई तो घठी घाई बाणै धीरुठ
 शियो । काडी नीर में घबेठ बड़गियो । बटी ने बापैनी मूरज
 ऊपियो बिनु रैना ई ऊठ भरोसा में ऊना ईहर ए रैना में घाथिया
 गहाय रापी । हीडा रो तयारी कराय राकी । बढ्यबंठ नपाएनी
 पैय भुंयगिया को मारगिया ई पत्र पुनाय रिया तबला ई ठाना ठीक
 रिया । छोरवां मान रा नसाला बाट री । नोटवाडिये काठा काठा
 बापरिया छांट न एरा लीबा । एक नोहर बीयो लुको नोहर बीयो
 घर तीमो नोहर इटवाने धायो । घामोत्री नी घाथा । बापैनी नाबेर
 ने ऊनी री "बाटा बडला बातो ।"
 हात ताई दिन है । टको, धाय रिया भूला ।

बुरज रं बड़ बड़ न घांतिया बड़ बड़ ईहर रो रैतो देख । बदास
 बट्टे पूरो उफनो रीत । नोसा ताई बटे ई रकी उठती नी दीकी ।
 बापैनी बट्टे "दबे काई ? बातो । घामेत्री घटे धाय दिन ऊगांटे
 रो बहियो दबे ती तीमो नोहर ई इटगियो ।"

निकसा बहियो "दमी काई बड बाबो ही । बीमाठा ए दिन है
 घबसा रैना बाटा है । नोत्री घायो हुयो होकेला । बर्राई बापरी है
 बीष दे नी दे ।"
 बरकोरो बोन ने पूरो नी बरं को घालु ई बरको बसा

रवाना खेवी । बांरो मरबीपाल डाही पाबो फिरियो "एक बीत म्हाये सुन न पछे पवार बाबा । म्हुं गाबू बतरे म्हाये बिलासोबी पवार धाबे ।"

ते सारंकी घोळ ही गाई । घोळ ही रो एक एक बोन बापेली ए कळ्या में कटाका मारे । घोळ ही रा सुरां सू भरिया बायरा में घासाबी री तस्बीर ऊमो हीचे बर बर प्राक्षियां में सू बीबारा बीबन सापय्या । बटा रो हार काळ डाही लाग्हुो कैकियो

"घासाबी म्हें घुलप्या धर्ब बीबता रैबो बोन मीं ।"

बापेली तो निष्कळगिबा कोट रे बाटे, बळ्या मे । काळ बुधाय लीबा । काळ बढ्या साविया बासभां हाथ में पळीतो लीबो । बोली मे धबकाई धाई मे कामापिया तो लागो मैरुवाने घायला खेयरिया हे । म्हाारी घबियाबी ई बांरी रा बरसता बाळक मे धबक से बाळ म्हाबेला । ये बळपिया तो भासोबी बस्वा बीबता रैबाने हे । हे ई पिराय से बेला । बापेली रा मू बाने हाथ बोदिया

"बगियाबी ई छंली बैज घासाबी रा दूबा नीं सुसेला काई ?

बापेली तो एक बम फिरी "हां सुभा घासेबी रा दूबा सुधायबे । परती बैजा म्हाय घासाबी रो बाब तो मुलु ।"

डोनी लंबा लंबा बधमन बांरा दूबा बने बठपी बैर लाई बठपी ई बोली, बदास भासोबी घाय बाबे । दूबा सुपती सुनती काळी बही बाबन मे बहियो, 'म्हायब बांरा बंधरा मे रेबा बी । बाळियां मे बहियो बां पाबो घासाबी ए दूबा बाबा । म्हुं बळगी रेंदू बां म्हाय घासाबी रा नीव गान्ता रीबो ।"

बाग में घासोबी सैरी नींद में सोय रिया घोडो हूपहूपायो पीड़
 पटबिया बो घाल चुनी । देख तो लम्ब पटबा वाली । पजब ब्ही
 घासोबी तो नुदयो घोडा री पूठ वं हो ब्यु रो ब्यु । घोड़ा ने दोहायो
 देत तो मिनक भेला ब्हेबरिया तीत मबीज रिया । "बापेली तो बडगी
 बाटां ।" घोडा ने दपटायो । घठीने तो लापो मेस्यो घर घठीने घासोबी
 बाय पुपा । घोड़ा ने नुबायो पकट बाबटियो खेबी खेच न बापेली ने
 घोडा री पूठ वं ग्हायी । घोडो बीहायो घर लाग्गो । पीर लारी बसक तो
 देखनी रैसी, बी बाडी तो गाडी घोडा री पूछ पकड़ लीपी । घोडो बीड़तो
 बाय रियो घर लार बो पूछ पकड़िया लटकतो बाबे घर हुआ देखतो
 बाबे । पदु बठरठां ई बापेली धारती लबाय पैसा घोड़ा री धारती
 उठापी ई रे पत्ताय भरतार नू भेट ब्ही ।

"सौसा धारे पाब ने सोने री नुरठाळ ।

पग पूरू रंबंत तणां, भेंटाया भरतार ॥

घाने बी बहियो ' ई बाडी रा नीत बाने बबाय लीपा ।"

दीप्यज घाने बाटी ने घपी रीक बोपी ।

आभल खीवजी

घाडू री उरभंज नवरी । आठ अठक रिया । भरवा भर रिया ।
 केतरी रा बाडू ठमा । भरवा भरवा वे जमेती भोला बाव री ।
 घांगडिया वषु घांवा रा गोड केरियां लू' लडागु व लू रिया । अठ अठ
 वे भंभरा भभके । कळ कळ वे मोरिया घबद करे । महुडा री अठ व
 पार । घांगडिया रा कळ दू कळ घांगर री लली रे घडे । घांगरी
 बावरी बावडिया ठमा वे घोडणी रा पला रा माला रीती निवळ
 बावे ।

घांगरी रात री बगत । तारा टम टम कर रिया । ठंडी नवरी पवन
 बाव रियो । अंध अंध रात कर री । अंध अंध तीतरिकां बोव
 री । एक एक मूबर घांगरी मू अंग ने से भंभरा मू नीचे उठरियो ।
 कळकळ कळकळ ठोकर मू नांवरियां कुडती बाव री । नाक रा फुरवा
 बाव रिया बांधी बोरा हनमाटा भर रिया । बोड बोड विलांघ रा
 बग बावे निवडिया मगा । वेद बरती रे घड रियो अनीन मू आली
 चार घांपळ कळो । बो बाकर री मोमियो बीघो बचरो कळकळ
 करतो नीचे उठर उठाव वे बायो । ल्याई वे मोठी री बाव वाणी
 भरियो नमावरी छाई नयो । वाणी कने वाव एकन फुराळी कीची ।
 काडा वे लवपव व्हियो पाणी में उठरियो तारे री तारे मू अंग उठरी ।
 बोई पचां वाडा में लोडे वाणी में उठरे बारे निवळे वाणी फुराडियां

करे फिर लौटे । छट्टाई रो पाणी हूबहूबकावणी धाय गियो । काही ई काहो भूँ पियो । एकम घर नु रन तो बारा में भुगडियां कर कर पाणी पडुळी कर बीबी । धडी में छोनेरी नाहर में नाहरही पाणी बीबा में छट्टाई ये धाया । तयन तयन नाहर ही भुँडियां तन ही । बायरा मु मुछां रा ईक तयन तयन बानठा धाय रिया बाणे ठितार रा ठगियोका ठारा के धांपट्टी धडी भूँ । धांजियां ध धारा में बमन ही पाणु बो जमजगाती मतालां बड ही । धाये धाये नियोजिया नु बडियां मापी धाय ही । भु नाहर धाने भु बरती पीळी भूँती बाये । नौहलो इस्तमालो छट्टाई ये धाय न पाणी बीबा लावियो । छट्टाई रो पाणी पडुळी भूँय रियो, काहो भूँय रियो । कडुळो पाणी ईसता ई ठो नाहर में रीम धाई । हेने तो छट्टाई रे केने कनारे पाडा सुरो एकन पाईयो भुगडियां कर रियो । सुबर ही तो धारठ पाणी में कडुळय में बीबा ही । नाहर में बिद कडुळय कापी ही । कैरी कैरी धांजियां मु सुबर साम्ही नाजियो । सुपर धांज कडय ई नाहर धाही भी धांजियो । नाहर 'हो हो' कर के बरजियो । सुपर हूब पियो । बंदरा रा बडां मांय नु पाणी धावान निचळी 'हो हो' । सुपर तो धाररी नु रन रे नारे भुगडियां करा ये बास । उन रे काज में ई बाणे नाहर ही नरजना नी परो । नाहर धाय ही ना ईकजत बेध बड न बाटियो भूँ पियो । नाहर रीक में हाथक मार के हेको बाटियो 'ए रे काटी बाजियां नुरका ।'

"काई ई रे, काही बाजियां नाका ?" जाड़ी पावड में ऊबी कर एकन पाणी भुँडियो ।

नाहर रे मज बटी । धांजियां ही बगजगती मतालां ये बाणे ठेग भुँडियो "पाणी में कडुळो भु बीबी ?"

"छट्टाई बाघ बाघ ही ई काई ?" छोटा छोटा वन में बनी के बाघ ठेर सुबर बोजियो ।

सूचना ई नाहर रीस में भाव डककर बीबी । डककर समझे बाहरा रा
काठवा जया छोड़ बीबी । कक माथे बीठिया बाहरा बडाकपडाक
नीचे घाब पड़िया । बन रा मोर कोकाट कर-उठिया । ३

“ठर ठर गुरडा एक बाप री सावनी लो बुझी चाटलो सीखेता।”

“किस बे ई घोर मे चढायो झूसा कुली । काई प बस बरे सीपडा ।
छल कर मे ई लो बापडी नाका मे मारी है के साडिया मारी हैं । काम
नी पड़ियो है मीबस्ता नू बनै । म्हे म्हाए मोरा वै नचकाय बना रा
यासा बांग म्हाडिया है ।”

सू नू घंजसे सीपडा, बे छत्र कर मारी गाय ।
कै के यासा मांगिया म्हे मोरा सू मचकाय ॥

सुबर लो कानी बीच पैतरी बरत घाब में घास मिलाव मोहुर मे
बधाव बीको ।

इठमल्लो सीमेरी हाथलू बाबा मे घाप री जुआ किरखवा सावियो ?
बजबन्ती सुबतियो घाप री बातलिया मे बैखवा जामियो । दोई एक
जुआ मे बटक पड़बा मे कटकटाय रिवा पन बीचे पायी ली टगई ।
नाहर हाथलू मे बीम नू चाटे । एकस बना मे भाटा वै बिले
वीली करे ।

“काने कारे म्हारे बाठ म्हे । बरभादे घामू त्पार रीजे । ई लो पारी
सावनी बोनीसर बिछाय ई म्हाए साटा छिरबार बीमेता ।”

म्हे घाबा परमाठ रा सू ही न बाधे घाट ।
का घतीना सासडी, का सिरदार साट, ॥३॥ ३३ ॥ ३३ ॥

यू र्दय मुद्रा ने से सारे पी पापी मपरो मपरो सीमा करती सुधर मपरे बड़ दिवो । डूने दिन का ई ब बैद्य थी । एकल से मुद्रा ने मपरो उठरियो । पापी पी बमोटा कर बचता रो बचियो मुषो माहर पी यह वे पुवियो । घाने माहर तो मुठो बारे माहरकी बँठी पेहरो देप री । सुधर पाछी फिर मुद्रा ने किया 'माहरकी ने ई जो इन च आवम्भ ने बारे देने ।'

मुद्रा माहरकी ने बठसाई 'उठ माहरकी माटी ने घांपने घाल ने काई छिपल रासियो है । बाड़ बारे म्हारो एकलवल्स घाय वियो है ।'

माहरकी हूमी 'आप एकममल्स ने साई क्यु गघाट ने से जा पाछो । म्हारो सोनेरी नी जाने पठरे ही ब ठाक है । पी बन रा रामा हावल्स सज्ज ने उठियो है तो बारो पाद्यागुरो जागतो निजर घाय । कैमरियो बारे लही एते ही ब मलाह ।'

'नीपधी काई डोकर कर री है वो आगर रो भोवियो दे उरह टूड री बारे बर हापी उमल्ला निजर घावे । उठा पारा माहरका ने । सोरो श्येप रियो है ।'

माहरकी बोधी 'म्हारो निप मेहंमत्त शिद्यों रँरी भील में गुनो है । परे का बारे मोटियार ने क्यु बगल री है ।'

ग्यागे भीग निदाळबो गुनो है महंमत्त । परे पधारा पदमणी क न मरायो बठ ॥

मुद्रा जाने ? कहे ई ब रँदयो लपन घाारी लप ने आटा रँ चिप सीसी कर रियो । मुद्रा माहरकी ने मलवापी ।

मू डक री बलकार मुन सोनेन श्री घाब मे ई ताब घामगियो । रीस में बाय पलटो सोनेरख सोनेरी मे बजायो

हेइ मीद उठो हर्मे, हापिया भाबरा हार ।

हाकिबा मे बगासिबा बल रा ताबा उठ । नीर छोड़ । बां मू डक कपल्ल संपल्ल बोल बोन री हे । उठ एक हापल री पछाट । एकल री खोपड़ो खोब हे ।”

सुपतार्डि नाहर घाब बीबी । घाटस नरीइ उभो भियो । साम्ही निजर पड़ी एकल हाठल्ये बिसरो बाय रियो कीरो कीरो म्हाकती जाब रियो । नाहर रे पड़ पनीता घाय । बककर रे नारे नलकिया मुबर री । एकल ई साम्ही लपकियो बाणै रोप रो बीजो छुटियो । नाहर री हाबल्ल छुटी जो एकल रा मोंछ र्वं बाखे बजर बदिबो । एकल री बरती मे बीड़ी टिकनी । पब संपल्लियो हे म्हाटका उठो खे बाणी नाहर रे हाठल्ये बाणी जो बरइदेभी तो नाहर री पेट बीरबी घाय पियो “मुबर बाही हाठल्ये बाय बटुक्की इहु । पंउदिया री कियली खे पियो ।

एकल री बंपाबरधी हाठल्ये नमुमल रा में रंपबी । नाहर मे पाड़ मुबर बाबो किरियो । मोहिबा में बरकाब खेबरियो । नाहर रा नगां मू बापल खेगियो । बून टपक रियो । जठी मे एकल बाबे जठं मे मोही री बीरी बबती बाबे । एक हांय हुटगी । खोडाबतो खोडाबतो बाल रियो । खोटाज्ज नाब कर्ने घाय निकलियो । पनबट री बाबडी बीबी । बापल हो जो तिल बबरी लापटी ब ही । मू डक तो बरजती री एकल हो पनबट मे बाय पानी पीबा लापदियो । पनबट री बाणी बप्ली मुबाया हाकी बीबी

"सूकर सूकर । गांव में जाय कैंको लकन पायो एतल । परे यो लो सोरो रे सोरो ।"

मुलता ई एतल मुयायां मे कियो गने लोरो जाय परे जाय मत कैंको । नीं ता इल सोडा रे हाज मु या । नाबन्द मागिया जाय ।"

सोरो सूकर देगके मन कहूआ जाय ।
इग साडा रे बारणो भवर मरेमां घाय ॥

मुयायां रा पेट में पके ? पागी लयी थी । "सोरो सूकर नामो एतल । पबाल पपपट पे पायी वी रियो । ये मोटी मोटी दागलिया । गृही या घस्या बबरो सूकर गृही लो कैं ई नीं देखियो ।"

नांर रा बबान भेजा भेगिया । "कैं कैं ? कटी ने पिया ?"

यो पबाल बाबरी ये बायो वी न घटी ने पियो । सोहाय रिया घोत्रु लो जात घाने ई कोनी विरलियो भूेता ।"

एतल रा नाज मुनिया पउ मोटयाग मु रैंकयी पार । बरछो हाज रियो ता बरछो उटाया । नैंक पबल पतिया सो गन उटायो । घोडां कोप मादिया । किमूई घायन म रैंग नीं बाह्यो घायो लो हाटी रे बोके बहिया । सूकर रे गोजां सोजां मोत्री बरतो जाय रिया हा जो मोरिया मोदिया दादा बोधा । एतल री टाग जतामायम ही जो मुकल लो जान रियो । दाटे पादा री बरगाट मुपी न एतल बागिया

"मु इल लदरा री केजा घागी है । गृनें ता घरे गन रैंको ही न है । मु जा वरी ऐबहिया ने भोग बग्ने ।

बा रैंक सूकर रहरता रैं उका बहिया । बइल बाउ हाकि

रुकड़ती दे बड़िया एकल पै सबाय री निजर पड़ी न लो बोड़ा री बादा ड्यई । बादी घाड़ी नू सुबर मे बेर सीया ।

सुबर बोलियो "भूँ बाँ पबिहारिया ने मना कीधी ही के मत कीजी माय न बरे । मोटयारा ने मराबोभा पन मानी नीं । लो घाय बाबो ।

नू कँता ई सुबर लो साम्हा लबाय पीडिया । सबाय ने बर्षी कळी पड़ती बीसी । या मारी दू डरी बराक सुबर नीचे । या मारी स्पट ने पोहा रे जाली बनी रे डोटो मारियो । तरबाय री घड़ी एकल रा मोरा पे मागवा लापी बरकिया रा बटका खेबा माया । बाब मे घाय बाबे लो कई ई बादा मे हूँ न वारे निबळ बाबे कई ई पाहा पर न । जोबा जंग मच गियो । बोरा रा पुगवा बाप रिया एकल बुरदा कर रियो सबाय री छाती मे लात नी माय रियो भाडकिया री पबर पांग निबळ रियो, घोहा पमीना मे जगम्बोळ भूँविया मोटियारा री लकाट नू पमीना मर रियो । घतराक में तो एक सँन ऊबो उटियो घोडो मपकियो फिरदा में घालो म्छुनियो । सँस रे पडिया एकल रा मोरा पै लो जमी में परक । घाला मे एकल पाबधी घायवियो । आले साट पै सुन्य री बूब पौई ।

घाबान लाकात लीबकी" बूबा घाय घाय लीबकी रा मोर बैपडिया । "एकल रा सँस मारियो । घायळ चार बरती में बंत गियो ।"

बोड़ा नीचे छतर पमीना पुछ एट भाटवा में सुबर माय नू पाडो खेच न लीबकी मसहा न काड लीयो । बादा घायनु लाकरी काडी भूँ क्यू ।

"बुबान ई मे रँके ।" जीब मोरा स्थीरा बूबजारी बैरियो । घोड़ा

ग पगीना सूजाबता मर्न मर्न पाछा पिरिबा । पाछा पिरता सीबरी
एक सारणीम मार परे सेछा घाया । बर मे बल्लता हेको पाइयो ।

“भाभी भाभी बडे हो ?

“बाई का ? हेबरको या रणे ।”

“तो भाभी यो सारणीम लाया हू । घबराऊ रांपो । हाथ मे मटकायोहो
सारणीम मे सीबरी भाभी रे घागे बीयो ।

बरनास देसलाई भाभी तो बांछे बमकी मागो बाटो फरो ई मुसिया
मे । ग्हांरी ती ई जिनाबर वे हांग उठ ।

“बबू भाभी ?” माग बबू बड ? बरको जोमळ जिनाबर हू । गाम
देसा देसम बनीती । सीबरी सारणीमिया री घाम वे हाथ फेरना
सागिया ।

है बाट्यम जोमी देसम मरीगी । घना ई जोदा घानिया हू । भाभी
बू हो ममबाप न बाभी ।

“बर्सा नरम भरम ते ।” सीबरी सारणीम रा पुछई । एक-एकान मु
पुछ भाभी रे हाथ वे फेरना सागिया ता भाभी भ्रमर न सारणीमिया मे
दूरी टल्को देय बीयो हो बांछा ई मुगिय री सारणीम । बाई ई
रा लाह । घामम हे रे मुगिया री बेम मद गियो । बिछाना ई
बडी री ।

बाई सग रा गान्ठी बाई सगे रा पाछ ।

घामम तए बिछाबण मटकया घागा सान ॥

“बाटो बीयो । बाई बिमो भाभीत्री । मुसिया री केम बड बिमो

बिछाणा वै पड़ी री ?

“हां ग्हारी बिन धाममदे रे एक बाण सुसियां रो केस पड़वियो जो बर्नाई हुक पावो । बाबर बाबा मीना बिछाणा वै पड़ी री ।”

“हो हो हो खीबधी जोर सु हुंसियो । मामीबी घापरी बिन घसी नावक । नाई कभी बात । खीबधी छुटा मदाय हुंवा साबियो ।

मामी बिदगी काई छुटा नगाय रिया हो । झूठ बोड़ी बोसु हू । पूछसो वां वांम में बाव किज मे हू ।”

“नी मामी वां झूठ कपु बोसो । वा री बिन बाव मांयनु खीर न काबी कधी हू ; कप री करी हू ; पबमधी हू पबमधी ।

“हां हू हू क । पबमधी तो घामन रो पबबड़ी री होड भी करे । घामन पाभी पीबे भी पबी हुक मांयने पाभी उतरतो बीसे । वा बाले नीं जद एबी रा रंग सु बरती गुलाबी गुलाबी बीसे ।”

“रैबाहो मामी रैबाहो । बगां बखान मत करी । हू तो घापरा हू क ऐ छिपीहा कुसियोड़ी । जस्यो घाप रो कप हू, कस्यो हू घापरी बिन रो खेला । एकघार बखान कर रिया हो ।

“बखान तो सांवा कर । देखो तो खबर पड ।”

“खबर नाई पड । काले हू क बायन बांटी बिन मे देखु ।”

“ग्हारी बिन मे घर बांमे बोई देलवा दे सपना देखो सपना, देखरती ।”

“नपना नाई देखु । घामन सु बावे हो बात कर न घाडू काले ।”

“नींवा बाव । ग्हारी घामन री गुलाब तीज हू । बात करवा रे केर मे

बट्टे ई बबरा राय न मत घाबरो ।”

“या बाठ हू ? तो लो या जानियो ।

सीबजी लो घोड़ा पे जीण दाड मीपो ।



घाबू रे मड् भ्येनो ई सीबजी बाटियां रा गाबां में जाय निबडियो । घामन बटियाणी रा बाब में जाय बुगियो । नाम रे बारे बाय में जाय घांवा री राड रे घोरो बाधियो । बरलो उठारवा सापियो । घाड़ा रो जानियो बिठाय न घारो भ्ये गियो । वमक भरणी । घामन घाय री मान बीभी नाबपिया सारे होइवा न पाम न घाई पया । वमयो रा घनबोई मू पवन भरारतो । उममण छामन दुपरा मू बाय पूज रियो । बीठ दाठी घारनरो मे हुंनरी सेमती सापनियां पुनदा ठाडती घाय री । बीनारो मुपना ई सीबजी री घाय गुर्मी । देग लो घाये घागे घाजन लारे सारे लापपिया । जाणे बीररायां रा भू बरा । बुजां रा टोडो बं सरेनियां रो हबोडो । बाडवा मे बीबडी रा मडवा भ्येय रिबा बू घटी न घु घटा मे टीभी रा बडवा पड गिया । हरी मना में चिखती बजर मना पो दरमाई । गापनि-। म घामन मू बीनी जाणे मबारी मे आला रो कोनम । बरम पनराक री पाब लीनेव री । तरब घय लोना री नाट । बीबडिया नैनां मे घपियाडा बाजड नागिबोरो । हुंनरां बुन भड आलना रमभंडी री भमक बड । बीबजी लो मडाउ नाय न घरपो गियो जाणे मीउंद रा आला घाया । घामन री मजर सीबजी री बरो । बीनजर गिमा । जान मू बाग बिली । बीबजी रो मजर बाई बिनी घामन रे घार पाय निबडयो । जाणे घबरनिब री बटारी बंदमी बरवा री तरवार बामदी न राबनिब रा मैनबो बुड गियो । बाडवा दूब दूब रहे दियो । बाई बाहन मू दूबवा लाग दिवा । बार लो मैन री दिरो पाठो न बीड ।

सारे बानी बूढ़ी मुगामा ही बो धागत करवा सानी "बालो बालो पाछी बाला । बारबो बड न पायो है । समान् बीबली बनक रो है । मैह धाय बालो है । भट करो भीन बाबाला ।

भटपट रबडा मुगाम मांवनै बंडाय हीबी । रब हक गियो । धामन धन में धनमर्वा नी नाम पुछियो नी नाम पुछियो । एक मरो नीसासो मुक बोरे बीरे राबबी करवा बायी "परदेसीहो बंन भुकोइ नियो रे ।

बीबली जाण गियो ही धामन नी धामन । नाम रा ठावर रो बेटी सिबाय मा बूबी भूे नी सके । उमगावोडो बीबली मोडा पे काटी मेती । बामा धामन रे बर कानी ।

ऊडो गात्र रियो बराऊ भिन रियो । धमना रो खड़ियो बाबलो धाम चुकियो । मोटी मोटी छाटा रो मैह धाय बड़िया । बारा ई मैहमाइय धाय मटी । बीबली मुक मुक मीबनिया जेले । डेहरा बहूके कोमला सबह करे । बाघर पे ऊपरा नू बानी रा काळ खलके । नाम पी धाबाज पे मोर बहुका करे । पापस री सभल छोड्यं पड बी ने खबीन भेदे । पहरो मबरो गात्रे ऊबा धाबाम रा गरमाइय गात्रे । बसाइली ने कर्वा बाम मुबन मड पवन पान बनो बिजोबनियो रा हिया में लील भ्यु लाल । बगला में भीबना नीबली धामन रा माडिया रा छात्रा री छाया धाय ऊभा रिया । ऊपर नू परमाइली पड । बर धर ध बर एक बार ख्येय रिया । नीबली मोडे बड़ियो मीब रियो । माडिया रो माडी लीबली रे माबा री पड । नीबली लो कोल क्यर रो कभरबको भाला री धनी रे बांन बाला में पाण हीयो । माडो बरको डक गिया । मैह री लो ऊबी नाम री । माडो परको बंड ख्ये नियो ली ऊपरे छाह में हबबाम पाधी बर बियो । धामन हेतियो छाह बर पाधी माडिया में बस्या मरती जाय रिबा है । बडे ई मारली बर

गियो बीसे । माछा रो पाणी पडे के नी देगवा मे करोगा मू नीची
 झांरी । घटी के बीजटी रो निबणो घियो बटीने घाभम रो भ्रांरुको
 भियो । बीजटी रे भबका मे एक बूजा मे देगिया । घामम जागियो
 नीदान भूगी नीबजी देगियो पुरब भमम रा गुन पळ गिया ।

घामम ऊपर मू वृष्टिया

परनाछा पाणी पढ़ घर भवर इवघार ।
 बाग गडा रा राजनी गुग छे राजभुमार ॥

नीबजी बुब ब दीयो

पिना भूहारा परताप मी, गढ खोटाछो गाम ।
 घाभम निरगण घाविया गावो भूहारा नाम ॥

घार लो गारा घामपा हा । नीच भीज क्यू गिया हा ? ऊरे
 पधारो । या कता ई घामम ता होगिया री निबार मे खीरना क
 नीचे भेभाई । नीबजी निबार पकर ऊचा खड घापा । घामम छारा
 मे हुंकारा "बाव बाती

गात्रम घापा इ मगा बाई मनवार करीह ।
 मन मुछा मन मायता ऊपर नेग घरी" ॥

भाबको बियो "मनवार बा करो । लारो वारा हाव दा । बचप दा
 के पू बटी भूहारे घरे घाय न गोता ।"

घाममटे हाच घापा कए रीचा । घामम री पमवा भावे भुवदा
 कपार गता पट गिया । नीबजी न लोदियो झाक । ना ब राटे
 उवाती भूे विबो ।

“बरला बमपी । म्हुं बाबुं ।” लीबची बाबा ने ऊना श्ले विद्या ।

“बाकिपोडा हो म्हुं म् बारी राग है प्राज घडे ई बिराबो ।” घामल सरमाती संमवार कौपी ।

म् नी पार रो नाई घटे नी रेवु । हुबाय मे हाज पकड धा मे से बाबु ।बच दिन रेवु ता ।”

लीबची थोड़ सवार श्ले पिया । घामल देखती रैबी । छोटी ने फियो कि तो बरला मे जाय रिवा । म्हुं होमिया पै सोवु ? म्हाक आपसे ही घामले बरी म्हाक । नीबे ही पडा ।

लीबची तो परो निबो पब घामल रो बल्लजियो तोड़ भेतो नियो । घामल ने राठ ने नीब घामे बी दिन मे बाल भावे बी । घामल रो बीच छाड़ातोड करे । लीबची रो वाद करे हुबा बोमे पीठ बावे ।

छावची छारक पोर, मन हूँइधा मारु ठणा ।
सग्यो बाळजियो ताड, सांडी बरम्यो लीबरो॥

सांडा बरम्यो पीवरा, घाडा दम्यो वल्ल ।
रास न घामे नीदरी विम न भावे अम्म ॥

घामल एक छरबीब वाडी लीबची नू पिलणे री । पैठ हुलाबो । पैठ मे बाड बाल तो बसी के बङ्गनी म्हुं सीटे । भाडो फुकां मतर तंठर, दबा दाक लमथो बीया पण बाई फरक ई नी बड । लैपीडी घामल पडी अभाळ मे एच मे हाथ न भासा लीबा लीला पोडा पे सवार हीतियो । “म्हारे देवरे बोबबा ने घाब ।”

घामल सपनो मुद्यापो । एवम्यो नियो रामसापीर रा बरसाव है । देवता

रा हूँ बड़े के छल । मानता कौसी लाली बापी, "हे बापजी बाह
 कामती दूक जावे तो बाँ रे देवरे कोकवा के धाय । टप देवी री बाह
 दगगी । धामन मे भीर घायपी ।

बाप बियो "बाई देवरे बाक धावो ।"

घामन मेट घाम माघो बोसो । यली धी मेट रो बीच बच गियो ।
 -टा पै भार बलियो । बचभुष बचभुष करती घुपरा बाळो रपड़ो
 जोनायो । घामन री बाभी नमद रो निमगार देसियो तो भीरेवरी
 घारग मोटयार के बियो "बर्मी राम देवरे बाब घामन । बा ठो बीबा
 बाळ बा रे बाद ।"

घामन माघो घोइयो कडियां रळयया केस ।

बुगु आव जमदबरे, जावे बाळोबाँ दम ॥

घामन जनाळो घामिया ऊण बलियो भार ।

बुगु आव जमदबरे जावे बाळया मार ॥

नांर री बही कुडी मुनायां बानोबान बरो देतोबी घामन घ रंग
 धरबाळ घोर दीस रिया है ।"

'धीबो बाळोबो घायो बँता । घामन रो ई बाई रोत है । परमावे तो
 है भी । पीबर मे ई कुडी बरेना बाई ।"

'बा भबुना रे ठो राम जाले बाई रीत है ।"

पाली मायसा टीबरी पिस पिस पतळो होय ।

रखनुना री होवरी पीयर कुडो होय ॥

‘हां घाबलदे उषा री बिन मु विमल न घावा है । रामदेबरे दरमम नाक बाय रिया हा ।’

या मयता ई लीबबी तो बीहियो । बबबबबबी मगा भी बरे घाय ऊभो रियो । मान तो मरगिया । नुबो भोजाई बने गियो । गुगिया गुगिया लाई हाब जोर लीघा न ‘भाभीमा हुबम भाभीमा हुबम’ बरे । घाने बोम नी निबळ । भोजाई बानी बाउ बाई है देबरबी ? एक ता मर रियो है न एक बट्टी बां बापिया घावा । बाभपी घाय भी रियो है । धियो बाई बंबो तो मरी ।’

‘भाभीमा हुबम के पवार घावा है ।’

‘बुध ।’

‘घापरे बिन ।’

बुध बिन ?

‘हे ई न घाबलदेबी ।

‘या गोज री गोज बाई बमगरी । मन बग मगाग मु । बाई ई तो घाय न बबो घायरी बिन मु विम घायो । बागे मगरी बिन तो एरिया बाबां बाबर मे जावे ता बाबे बाई विम घावे । रंवादी घारी ममगरी गहन बाय बरबायो ।’ नू बब भोजाई ता मेनरी मब हरीरी दोडी मे बमबबो घायो ।

‘नैबा बाई नू भाभीयो के मां मग घावाता मगाई के बंघिया है । नी मतो तो घ बा देबलो बा री बाबबी घायरी है ।’

भोजाई बाबां के नू दो बग न बांबो तो मबे ई बाबरी बाबरी । हुब

मीनाई खु गटिबो भरियो "काई फूड़ राख री नाई पू बटी छीरो कर राखियो है। सुबो संभाला।"

छीबजी पू बटो संभालीं तो टैमको छिटक आवे। टैमको मधेरे तो पटली उड़ आवे। घामस रो डैरो नबीक भायो। घामस रा गाय बाझा घाबसी बैले "या सुमाया मे एक सुगाई पू बिल तर नाम री है। घमक घमक इस रा पक पक। मीगरी बस्वा पप।" रीता म बाझी घाई। बुजी सुमाया तो बीरे बीरे पग के बाझी लीबी। छीबजी तो पकड़ बोई हाया पू बापरो बाझी कलांबी 'बम'। घामस रे रीरा बाझा के बक पड़ गियो। घामस रा डैरा रे बारभा री रीरा बाझी बंठियो। बुजी सुमाया मे तो बाबा बीबी। छीबजी रे बळ्या रा बाबाटियो पकड़ियो "पू कुच है?"

छीबजी ली बती ई भ्रमको। दुहावता ई बाबटियो रीरा बाझा री बुझी पकजी बी कप बीपी है तो मोवरी सु माको प्येड़ देकु। सै या सै। पापली रो मु बरो बाह रीरा बाझा रे हाप में बीबो जालीमानो री।"

बीं तो रीरा बाझी उरप गियो घर बी बरो रो बहा सोला रो मु बड़ो हापे घाय गियो। डैरा माय न बरी बिजाप पछेबड़ो लनाय घामस बींठी। उम् ई बम घाई बोड न लऽ लान न गिमी। रीन घामस मे छाती रे लनाई। छीबजी पू बटो बाबटियो छालाकाला ऊका।

घामस बुछियो "पू कुच है?"

"घामस के गहारा नकबघाई है।"

घामस तो रीन पी बटाया जटा रीना ई छीबजी मे घोळप छीपा। "या घ्याबजीमा गहारा मु पा सपा। घामस घागठी ओ पूंवा घ्याबजीका मु बिलबा मे बाप पतारी। छीबजी के बाबड़ो बाब वाली।"

रॉबर्टी घामस नै बाब दे बाल पाड़ा मिलिया । सागो छाती रा पोर ।
भीबती री काबली रा भरकक बैबी रा सोपरा भापा ।

भरकक भागा ग्यापरा भरकक फाटो चीर ।
घामस गीव मेळा हुआ नदया सलबया मीर ॥

मिलिया जूतिया है बीम्बा जूटपा है बाठा चीता बीपी है ।
बैब घामस री मन्वार बीबी "घापा हो तो एक दो दिन ठी रैबो ।"
घामस ई हो रात रैबा रा हुंवार) भरियो । नाऊ बटी न पाठा बरे
पाबा भापा ।

घामस बोनी "भोजा बाल तो घरे प्यार रिया हो पस छाप रा या
नपरबाई न घडे ई छोड़ पवार । म्हा बाता करताता । नापे पाठा
मे पवारबा । म्हारो ई जीव लाग जावेना ।

भोजाई दू ना बरे बटा बैला तो नपरबाई रैबा रो हुंवारो भर लीबो ।
भोजाई ठा बरे घाय गिया । सीबनो बठ ई बिदा । घडे डेरा में बोई
हो भीबती न घाम । । चीनर हाट्टी गनबा मे । दिन दिन बर न
राग बीग री । घामस बोनी

म्हें पीरट ये मार एरगन जाइम शान्तिया ।
हाजर पानो रवार मसा बसु नी गीबती ॥

म्हें घामस थ गाबतीं घापा दाय घटेह ।
मसा बसु नी राबनो दिन दिन रात घटेह ॥

जें घामल म्हें खीबजी घापां दोम घठेह ।
कबारी बतळावटां, (म्हारो)कत्री पर्यो बटेह ॥

खीबजी रात रा घामल रा डेरा में रिया पल माचो म्हारो हाळ बीबो ।
मेव रात डेरा मे बीबा बळतो रियो । पांच हात दुगे माचा री पदियो
खीबजी घामल मे देख । घामल खीबजी मे देख । ती घामल ई
देखती पाके नीं खीबजी देखतो पाके । घामल री घालियां सु घमरत
म्हरे चिय मे खीबजी पीयलो नीं घावे । खीबजी रा मीनां रा नसा सु
घामल घापी घुलवी । पाळे कोई रात रे पांखडा साप पिया खे
ताळीं देतां रात बीतपी । दुवे दिन मीजाई घाई देख तां खीबजी मु छा
तायतो माचा री बँठियो । मीजाई रा तो पत ह्य जठे रा बठे बस
पिया "खीबरा भां काई बीबो ?

"मापी काई नीं बीबो । दुनिया री खेती रीत बीपी । घामल सु
व्याव कराव हो ।"

घामल ई घालियां में घरज भरियां बीज घाम्ही घांकी ।

मापी बोली "घाडी बात ह्य घाई र समाचार मेज देवु । पल घामल
री सपाई री बात म्मनां र घटे काम री ही । नाळ र तो नीं घेजियो
ह्य हात ।"

खीबजी बोलियो "पल बल काई नीं मापी । नाळेर तो घेजिवा ह्य
नीं । बात तो छी बसां कामे ।

दुवे दिन घामल दिवा म्ही । खीबजी बोडो घस लीबी ।

मापी बोली, "खीबजी दो काई भां कठे बाबा ?"

धातु बडे ? घामन न एकमी भेज हु बार्दि । र्बसा में मुटा कोछो ।
या मे देबरे बोचाय धातु संपाय हु ।

“गीबजी बां री बिन घाम नामर बाय रिया हु बनि सीख देनी
क नी ।”

मीग देनी वनु नी घाम्छो सगोपाव दे मीस देबो । मे बिन रा र्बसा
रगडा । म्हे जके दिन वैर्या जो पादा देय दो ।

लीबजी मुगाई रो भेग बरियो वर बिन रा बपडा वैरिया के मुपिया ।
घामनदे रो रपडो बामियो । नाम रो सामे गीबजी रो घोडो । रब
री बाङी ५ नू घामन लीबजी मे निरपनी बावे । लीबजी रो बाङो
बने बावे अर घामन रब रा पङ्गा मे ऊ जो वर के उठाय दे । घामन
रा होठ मुङ्ग जाव । लीबजी री घामिया में नमो बड जाव । घामिया
ई घामिया में जीव हिलाबां बिना ई मबडा री बाङो भे जावे,
हिबडा में हेमाम्छो हुअ जावे । बारबाङ री तरती भरती रो लाना
बावरा सीछो पङ जावे । रैत रा टीबा री महुरां में समंदर महुराबा
नाय बावे । बांरजिया री छायां में दुपरी पाटबा मे बँटे लो बां क गा
में मरगबन बीत । उभां रा बांटा महे लो लोप जाणे वृन मरिया ।
गमदबरे बाह बाठा बरिया धातु रो र्बसा मीबा । म्नु धातु घाव
म्नु दोबारो ई मज बीबो पव । धातु री घ बट्टी ऊ बी मीबी भरती
घाई । घाबा रा गाह र्बसाबा माविया । कैर, बोर बांरजिया बाउं
रैगिया । तरना टीबा वृटविया पापी रा लडाव बजर घाबा माविया ।
लीबजी बोविया “घामां घामां री भरती मे घाव दिया हा । घामां रे
घर म्हारे बाट बां रे बँर जान । घां ई व म्हारी बिन माङ्गु घामा
मे बरसाबारो है । घामां मे र्ब म्हारी टा पङ्गा ५ जो म्हाव ५ जो
वर बँटे ।

हा । बाट पी खु ।

'साँच बतावे के । या तरवार' तरदु कण्य करती नाइ ब्याव बारे तरवार बारी । बाट पी प्यमी बँके तो दुग भी बँके तो दुब । 'बोये क बायो पड़तो बीसेना नीच ।' कया पे ऊनो ब्हे अये बारस बीधी ।

बाट पी हाय जोइया, "धीबर्जी पीरवा हा । उगा रा बमौना पी बाजना बं मो बमौ घोर तो मूँ बार्द नी जाणु ।"

"सीबर्जी ? बापरो पैरियो ? घोइसी घोडी ?

"हा बाट पी नीचो बायो बाज न बानी ।

"बनु ? राइओनिने पापरो बनु परियो ? बडा खुबामो दे ।"

बाट पी मागी बाज नाइ न बँय बीधी ।

'टीब ई बाज दे उग के घटी के ? आना पी बरती में कोई बाट जो नाबोगामो निबडियो के ? बो पापरो परियो घटी के बाबा पी छाडी बरे ? छाजन के बरबाबा । हाइको राग ? बाजन पी मदाई पी बाठ आना दे बाज पी ही । नागा बिठ जाय नागा ।

बाट पी पी हागी बट बडु बरे बर् ई छाजन दे नारे सीबर्जी घटी के बान न भी 'नबडु बावे । घगी के बाप दिने तो मरब ब्हे जाय । पे बाण तो बाट ना बाये हाबा दे बटना बरे । ऊह'नुना बीर गबा ? का उगा पी केटवा पणना आना बरबनो तो ई बीर बाजो बवि ? ई बीर गगबा मे ई कोई रज्जुती है ? पाप मे बरे बट बट न । हाँबर्जी हाँबिया पी मराई में आइरिबा पी कवरबाज । नो

घासमी बुझ उठावा म्हा सुवावा । कौतो रांड झेवो हे के माई विना
 झेन री । बाळोची बेची देवता मनाचे हे ठाकुर वी खीवची इत बेचि
 झे मत विदळत्री । निवळी तो या के खबर मत सामबो । बाळोची
 के नीर नी धावे ।

बही बो एक रात विद्या हरिबो चारण भाय पोळ वे हेसो पावियो ।

साळू बुछियो "कुप हे ?

"म्हू हरिबो चारण ।"

साळू भयसो कडून पुरो । चारण रो नाम सुबिनी न बांटी घावा रे
 नाटा की बीची झे । मायनू सुटे सुटे ई सुबाज बीची "घबाक बां काई
 घावा री बनत हे बांठ की । तुर्ब घाबबो घबार जावो ।"

"घाडो खोतो रात बडिबा कठे बावू ।"

साळू भासे पडिमे परिचे ई जाकर के कियो "इत के घाटो हे हे खो
 पोम रोटी घाय ल ई बठी ई ।"

बाई ऊर्मे हरिबे चारण सुचियो । पड पनीठे घाय । घुरवार हे बने
 केबतो ई घामो बां पया ई पालो किरियो । वांघ बाई निरुझियो ।
 वांघ रे बाई लडाई वे उजाळी बीखिनी । हरीबो बठे पियो । भावे
 लडाई वे रम लुग रियो । घोडो म्हा रे बचियो भीबो भीयो हीसरियो
 घासमी रसोई पाची कर रिता । पाजब हळ री । बाजम वे एक पुवान
 बीडिया विष रो घ घाट मं ई मुडो बय बय कर रियो ।

पुवान बोनिबो भेटी री घबाज गु "कुप हे ।

"म्हू हरिबो, चारण हू ।"

‘चारण ? यमारा चारेठनी नपारो । बिराजो ।

‘घाव रो बिराजबा ?

‘भैनारपु हा भैल बबता ठैर विपा हा । घाव जीमो खु ठो”

‘यु नी जीमू । घाव घारो नाम नाम बत्राको हा जीमू ।”

‘गुहारो नाम तीबरो है । चोटाओ नाम है ।

तीबरो बाळेंको ?”

‘हां ।”

‘जरो ब । यमगो छानो चोरो ई रे । “ओपी के भेल घनेक करो करण छिन नही मभूत लयाया ।” यु नी यमगा रो छेक बा रगत भीक नीक घरती के रगती है । ई एक म यमगा बूळ है पा रे माके ।”

चारण के दूबरो बीको जीमायो खु टायो । घाण्डो छरै भाबाय बीपा । दिन गुमगाई चारण निरदार हा गांव के गिया । गांव रे बिर्से ऊमा रैय यमगा के भाइया मांगिया ‘चोट जाना एन बाळ बा चोट यमगा एन बाळ बा ।”

चारण बाडे खु यमगा मन के करमटाय रिया । “बन बाळेंबा” गुमगाई हो नाक यमगा जंगनी “कटे बाळेंको ?”

‘ओ बीरग भाबना दाब बाटे छटाई के या भाना छे नाक नाळ न भेल बीपी ।”

बा यमगाई यमगा न के मरवाता रीदिया । बाबन न देत नर दिया । बाबन नी एव यमगाको कहे नीबरी बाब नवार । गाल

झमे हुनो पाड़ियो “कुक कुक बाझेवा जाये कटे है ? घामल रे बारे कटे जाये ? झमा बीबता बीठिया है मरिवा नी है ।”

बीबनी पाछो अकियो । देखे तो झमा तरबारं सू ठिया घाम रिया । बीबनी पाछो फिरियो न्यू हुकनाक गलि जासता रपड़ो करो ? म्हारा हाथ में ई तरबार है मू अकिया कळ्ठी निबर घाय ।

साळ म्हमी बीलियो “नू मु अकिया कळाय ? कुळ री लोबनिपां चंडोलिया । बाबरो पैरौनयो हाथ में तरबार उठाव ?

लोई कुळ री साज मर पसट नारी हुबो ।
इए हापां इए वाज लाग न बहुसी बीबर ॥

बीबनी बाबो वागठो बोलियो “म्हने अकेनो बाज न टांड मत । पा पांच छी नै पाङ न मूं घापछे पड़ुवा । घाम था ।

साळू मत रहे उठाबळो सबळो साथ न देल ।
झमा पड़ुसी पांच सौब, जठे वळ्ळ थो एक ॥

नू अ पड़िया । माये माला टूट पड़िया । बीबनी अकियो । बाहर न्यू घड बिबो । तरबारं री झटां पड़ुवा लागी । बरछिमां रा बटका खेनिया । नूटे पूटे फिरियो बीबनी झकाक निय रियो । घामल पड़ुते केंड रव नीचे उतरपी । बीबनी तरबार री भाट मारठो घामल साम्हो अने । घामल री नजर में नजर मिलता ई बीबनी में नी हाथियां रो अड घाय जाये । घामल नै बो पां झमां रा कैंवा नू छोड़ है ? हरनिब नी । बो बटका बटका खेनियो । बीबनी जासपारो बीबनी आमा न्यू फिर फिर न पड़ गियो ।

तरबारा अ ग तरसिया भासा अ ग मिडियोह ।
 पाळागारो खीवजी खाजा णू खिरियोह ॥

पाजस खीवजीं री अ ग अ न बटियोडी हेहू नू खिपटपी । “खीवजी
 म्हारा खीवरा बारा नू अळगी म्हने कुच कर सके ? खीवठा खीव म्हें
 बारी हेही रे हाव नी अडावो । आत्र मरिया पठे नू म्हारी छाठी नू
 खिपच रियो हे । पार मापे मिसबा री अजडा री मनडा में रंयगी अरें
 मसाणा में खीरा माने मिमूसा । मिसबा नू म्हने कुच रोच सके ?
 म्हेता में नी मसाणा में हे छही ।

मनडे री मन मांय, ख्यात करे मिसिया नहीं ।
 मिस्या मसाणा मांय खीरा मापे खीवजा ॥

मूमल

बद गयो घर घांपणी उजासङ्को कवाह्”

मयन भिद्योङ्को हमीर घड़ी बड़ी रो हुआ पी इन कड़ी ने बीन रियो ।
 कड़ी बीमती बैला मस्ती सु जय पी घांभियां पुन्नी बाग पी । घांभियां
 रै घांभे राठ ने देखियोङ्को उजासो घीर ई ऊजळी खे बाबे । मन पी
 बड़ी खुस खुस बाव पी । हमीर बाईंको लोही के परबना ने उमरकोट
 घांभोङ्को । परबिना बिन रे हुनी राठ ने खुल सु लोय लुभाई सुठा हा ।
 राठ ने बोड़ा ने घास नीरवा ने हमीर घठियो । उन रा बोड़ा ने मो
 राठ ने घांपरं नजीक बांभतो घाप रा हाक सु बास हापो बेतो
 हावरे घायो तो ई बोड़ा ने सुठो उन घोबरा रे बारे बांभ घठियो
 हमीर घठियो तो सोही घुठियो

“कठे बाबो ?”

“बोड़ा ने बाग नीरवा ने ।”

घाप सुठा रबो गृह नीर घाडु ।” या क्ये बीनपी सोडी हीं प्यु
 ऊ पाबे हीन बासी । बांभती लोभिकोड़ी ही भीचो नीर हीन नै गृहक
 बारे निबळ पी । नेह घ बापी राठ ही । छाटा छोटो खेप रियो ।
 हमीर हाक बांभने सु मो बाग न घांभिको घ बापी राठ नै प्यु सोही

बास री झू घागे उजास भेसो जाय रियो । हमीर बेबियो सोही री कचन देही रो परगाठ पड़तो जाय रियो है । दूबा री कड़ी घपले घाप मू हा मू निक्कली,

बांद गयो घर घापणे, उजासड़ो कवांह ।

को उजासो किन रो ? बांद तो घापणे परे गियो घाब गियो । हमीर सोही री देह री कांठी बंध मतरियोड़ा नाम झू भोला जाबा साग पियो । मन री लैहरां रे सारे दूबा री या कड़ी मू हा बारे निक्कली । दुजे दिन परभाने बारे घापणे । छाटा न्हेंहरा रे सारे बात बरतां बरतां हमीर घाबियां बीच मगन भेन बोसियो

बांद गयो घर घापणे उजासड़ो पवांह ।

या कड़ी मुनतां ई न्हेंदरो बासियो

घाग उळ्ये कंचुवे घाड़ा मीरे घाह ॥

पच उपांचे डील बोहा मे पास मीर री है झू ।

मुनतां ई हमीर कचनियो "या काई बात ? बँन री देही नी कांन " बात माई किच ठरें जाणे ? "

कठरी तुमी भेयरी ही कठरो ई दुग हमीर रा मन में भे दिवो । एरर तो मन में घाई धु रो नू मोडी मे छोड परो बाबू । पच माथी एरर माथी मे दूए तो सरी । हमीर रे ता डील रे जांठे बीदिवा जाय नी । बँठयो नी घापणे उठ न जापने लोडी कमे जाय दूदियो, "या काई बात कां रा देही री कांठि कां रा घाई न्हेंहरा काई जांठे ? एग काटी बात री उज मे काई हा ? मानस मे कवाई घावे "

घल साजिमां सज्जाहेतिमां सहेतिमां तो छिप न देखे कोई बात भी । पम भाई किम ठरै देखिमो ? देखिमां किना बेन रा भिम्ह भाई किमां बाछे ?”

सोखी बोली “बीप मत करो । नाचम होछे री काई बात है । म्हाछ भाई म्हेहरा में भावा कहिबोहा बुवा ने पूरा कर देवा री छिपल है । भाप कोई मजुरो दुबो घबसाबी बात पे पूछ ने देखतो मो एकरम भुरी कर दे ।”

“मूठी बात ?”

“बठबाज लो । भाप मल बाम्बोला के म्हुं सांभी हूं ।”

दुर्ब ई दिन हपीर बाढ़ेके म्हेहरा ने किमो “तिकार बाबा ।”

“बाबी ।”

बोई रबामा बिहवा । हपीर बोलिमो, “मठीली बिसा में बां बापो मठीली बिसा में म्हुं जाबु । तिकार नाम बापां इन ठग्याई के भिसाता ।”

बोई बाबा बोई बिसां बाबिमो । हपीर रो बीब तिकार में नीं । मो तो देखतो बात के कोई घली बात बीचे तो बापो दुहो बचाप म्हेहराबी के पूछ । कहां नु बुरो म्हे के नीं । बोहा री बात लो बीमी मेरह बीपी प्यजल मू देखतो जाये । देखियो बन में बापो लाग रिमो है । मठी ने ई बच न भापवा रो गैतो नीं? एक साप भाप न कस माये बहिबो ऊपरे मोर बैठियो । साप ने घालो देग मोर नीची दाबड़ कर बीं ने बकड़वा लावियो । साप लो लपक न मोर री दाबड़ के बूछ रो बछेटी देव बीचो । हपीर या पनट्टेनी बात देख बुहा री एक कड़ी जोड़ सीधी । हपीर मोहो पाछे मोड़ियो । बाबता ई म्हेहरा ने बिपी,

सही बिलगो नग, तै उन कठ कसाप रे ।

म्हेंदरे नुरता फुरती बबाब दीबो,

माजरा बोई न मग, सागो साय ज दव थयो ॥

हमीर ताज्जुब नू रात बागडी देय सीधी । पन केर ई भरोसो नी
घाया । रूजे दिन केर सिवार वी निरुद्धियो । बाबड में घ्याल नू
देसती बाबे । काई देले एक जरा मूख न दूठ श्येय रियो । पन पूजा
नू मर रियो । एक बैनडो पन मापे बडगी ओ पून महक रिया ।
हमीर पाछो घाय म्हेंदरा ने मुणायो,

घुड तो सुकोड़ाह, ऊपर पूस बहुकडो ।

म्हेंदरे म्ठ लमस्या पूठि बीपी

घासो घाय घयाह, बैस बिडीणो गहकियो ॥

हमीर तो म्हेंदरा ने छाडी रे लमाय बीबो । पनो राबी श्येयो । मन
रो बँम जायो । पीर में लम्याघ घायो । सोरी ने बाय न दियो
'बां रो भाई ता पनो बनुर है ।

हमीर मादियां ओड ओड म्हेंदरा ने मुणारे । म्हेंदरो पनो ने नुरता
पुरती पूरी कर दे । हमीर रे घर म्हेंदरा रे बसा हेंठ बच गिया ।

हमीर म्हेंदरा री बउछई रो कायल श्ये गियो । यो सोडो मुबान हवात
में नी लागी घे एक है । मानरा नू बीय न घावरे बरे जारा मागियो
तो म्हेंदरा री पनी बच न मनवार बीबो "गाड्याबी जात ई ना
बानो म्हाग दजा री मानन रा बार दिन ई टैरयो ।"

“घाय मुमल ने नीं जाबो ? मुमल जग ज्वाली मुमल रो नाम नीं सुनियो ? मुमल रा गुला री महक सु ठां लारो माड बैस महक रियो है । मुमल रा रूप रा या काक नबी कथ्कल उरती बजाब पावती फिर । या मुमल री मंडी है । मुमल घाय री गहेसिया रे लारे घटे रें ।” पूं र्दय सहेली लो परी थी ।

बीमाबा ने घायोको माई बोलियो ‘बड़ा सिरबारां मुमल री काई पुछो । मुमल रा रूप घट चुक रो लो पार ई नीं । काई लीभन है । मुमल री मंडी मांवे क देको बसता रें जाबो । भीता रे हीगळ् दुखियोको कपूर कस्तुरी सु घाघाठ लीपीबोड़ा । कांज कड़िया घायबा में बाजबिया किराक है । बैसर कस्तुरी ऊंलखिया में कूटीके ।”

हमीर बुझियो “मुमल परनियोकी है के कु बापी ?”

यजन कु बापी । रात बिन राय रंग में बीमी रें पल करण सु बळगी रें । घनां बनी कूटरा करी बोच जमान बादां बहावर घाय बिपा नण मुमल लो किरारे छाग्टी नीं जांबी । काई बाय घायो ई क नीं । मुमल रे लो प्रण है गांठ जोड़ना लो घाय रे मन बीत्यां लारे । नीं लो यजन कु बापी रेंबुला ।”

घठराज में लो मुमल री सहेली पाछी माई “मुमल बुलावे घाय में सु कोई एक पवारो । बैस री बार्ता पुछ ।”

हमीर बोलियो “गूँदराजी नां जाबो ।”

गूँदरो बोलियो ‘नीं नां जाबो ।

हमीर जांबी पावड़ी बांध बाबो वीर, सहेली रे लारे भ्रियो । घावे घावे सहेली न बाटे बाटे हमीर । मुमल री मंडी नाई ही बूल म्येस

हो । घरेला घादमी ने छोड़ दे ती निबळणा बोरो भूे वाये । घटर री लपटां घाय री । मुणप री घोरां उडरी । चौक में बाळ न सहेती ती घटीने बटीने भेयी । हमीर देगियो सामने बाबो काडिया इत मन्पो मोनेरी उभो । हमीर री घागियां जरी घबराय न हुमी घाडी ने काडियो लप लप बीज करतो घजपर निजर घायो । हमीर सीधियो पो हा बोबो । यां तो मारबा रो मोची जांरी नाहर यां मे गाय बाब गांय इत संय । घायां यां रा बाबा हबियार परा लबा । पप म्हूँ पद्दो छत्राऊ नी । बो तो पाछ पदा बायो गुं बाये मात्र निबळ यियो ।

सुमन सहेती ने पूछियो "गुं उगां ने माई ने कठं ?"

"गुं तो चौक ये तो उगां ने बाळ न यी । पाछा कठं यिया । ये तो नाहर गुं उर न घपूंग यिया बीते ।"

सहेती बाये घाय ने यियो "घाय में गुं पाका भूो आ घायो । बा जयां बाबां री ती ।"

हमीर बोभियो "म्हूँरघाडी यां जाबो ।"

म्हूँररो जानिजे घाने घापे सहेती लारे लारे म्हूँररा । चौक बांय मे घाया सहेती तो घटीने बटीने भेयो । म्हूँररो देग इतमरपो मोनेरी नाहर बाबो काडियां सामहो ऊभो । म्हूँररा रा हाव में घायो वज र नाहर रे लाम्ही छानी ठरबाई । नाहर री लाम्ही कुनो निबळ घायो । घटीने काडे तो घजपर बीज लपलपार यियो । म्हूँररे तो छटाप जाना मे घजपर रे बबोरी । पण में गुं ई कुनो निबळ बाबो । म्हूँररा मे हुंमी घायबी । म्हूँररे बोबो बजर घांग गुं हमीर पाछा किरियो हो म्हूँररो घापे जानिबो, बीज ये बापी काियो । बाये यिया ? घटे ई म्हूँररा रो जानो बाब घायो । म्हूँररे जाना मे बापी कपबा मे

बातियो । भाला तो बाबियो 'सट' काच रा पाबसा ये । म्हुँदरो मचड़ मचड़ मोपड़िया बबाबतो मुमल री मेडी मे परी पियो । भावे मुमल बँठी । बाणो काळी काळ्ड में बिबळी बनयी । कड़िया कड़िया ताई तो केस रजक रिया । बापड़िया गाळ र जस्या छीस मू सटकता केस मू नाम रिया बाणै बासक नाप मू ब रिया हे । उम मादेची रो नाक लांबा री भार जस्यो । रंगभीनी रतनळी घालबसिया मे काळी काळी काजळिया री रेकड़ी । रेशमिया तार जस्या कंबळ्य कंबळ्य ह्योठी बीचे उम उमळगळी रा बत बाडम रा बाबा म्हुँ बमक रिया । पेट ? पेट तो मुमल रो वीपलिय रा बान म्हुँ पाणळो । हिवडो तो पांचा मे ई ब इमियोडो । देवळ रा नांमा बसी बाबड़निया । पाठळी पीडी सनीळी घाबळ । तपायोडा कचन सो रंग । घग घम मे मर लज्ज रियो ।

मा कोई देवळ पूतळी गा कोई राजळ रज्ज

नी तो कोई देवळ मे ई एकी पूटरी मूरती नी कोई राजा रा रजबास मे ई वो रूप । म्हुँदरो तो ठबियोडो रं पियो । मुमल रा मुडा म्हुँदरा रो घालिया बडबी । कडी वो घमी गडी के मुमल रे हिवडा मे बाब घडी । नीचा री ज्ञाना नीच सभधे । मन घधो डाबी म्हे । मन मे मन गुरत घोळ्ये । म्हुँदरो मन मे कंचे नीमाता बाई रूप सिरजियो हे । मुमल मू जिनिया बिना या घठरी डमर मे बरपा ई गमाई ।

म्हुँदरा मे देवळ मुमल बन मे कंचे "बाईं लेज हे । नीच बाईं हे सबर रो बार हे । नीचा रो जो बानी बडे ई नीं देलियो ।" मुमल रा नीच म्हुँदरा रा नीचा मू जाप जिनिया । मुमल रा नीच नीचे मुक पिया बच नीचा री कुगनी बन खाम जियो । वो ई जो बट ई जो बननीत्यो नी हे जिज रो घाबा मे म्हुँ टन मन मे घबेरिया बँठी हे ? म्हुँदरो

तपस्या सफल रहे कारि ?”

मूमन उठि रहे साम्हा हो पांखडा भरिया म्हेंदरा मे सागियो हुंमणी घटे बठा मू घायगी । रागा पतळा हीठ मळरिया मार्ग बोन निजळिया पयारो । म्हेंदरा मे सागिया बठे ई बीजा रा तार रे पांगळी घडपी । म्हेंदरो बँडियो मूमन बठी । मूमन बुमायो तो देस री बाठा पुभराने । भूलगी कारि पूछे । बाठा पुछयो भुनी के तो भुनी पय सार्ये ई मनको भूलपी ।

बीतरा सको गोरिया सोडा भंवर मुजाण ।

माइबी मूमन घर सोडा म्हेंदरो एक दुखा वें लट्ट रहे पिया । मुळ मू बात ता भौ निजळे पय मन मे राम ग टटवळिया उतर रिया । म्हेंदरे देतियो भीत मे मारंगी टप री हे । उठे रहे न मारपी पनारी । सारंगी मे गज वैरियो । माइ राग ग मुळ निजळिया । मुरा के माले राय री रानी मूमन री पाबड हाणी मणियोडा हायां छाड बीबी । म्हेंदरे पाबड रो भोरु देना गावो

म्हारी जग द्हाणी ए मूमन जामे मा ए घमररागे र मग ।

मूमन रे कारवा मे परमानिया पड़यो । म्हेंदरे माइ मजार्ह

म्हारी पय बीगी ए मूमन
 हां हां ए म्हारी हरियाली ए मूमन
 हां हां न जानु म्हारे देन ॥
 म्हारी माइबरी ए मूमन
 म्हारी घमरत भर ए मूमन
 हां हां ए म्हारी हरियानी ए मूमन

हामे नी रसिया रे बेस ॥

म्हारी माकूची ए मूमल

हामे नी ए धमराणी रे बेस ॥

म्हेंबरा रो नील ई ख नी उल री कबाग ई ख नी म्हेंबरा रो कम कम मूमल मे घालीजा रे बेस चासबा रो मुत्तो बेव रिबो । उल री प्याला बसी मोटी मोटी घालिया लु नेहू ठम्बळ रियो । मूमल मुटम्बळा धर भर उल रल मे पीय री । क्यु पीबती जावे क्यु तिस ई बबती जावे । तुप्य रो काम ई काई ? खंदप रा कल रे बिलप्यी नायर बैल क्यु मूमल सहसाब री । हिबडा रो हेत नैना कळक रियो । म्हेंबरो घाव रा भाग मे सराय रियो । घसी घस्वरी भाव बिना नीं बिले चीडी छाती पाठळी कमर मे म्हीनी म्हीची पाठळिबा । कं तो बगबाल लूटे तो बिले के पुरबता बनम मे ठप कीबा । पूनम रो चाद मबारे घायबियो । ऊपर लु सोळाई कळम लु चाब धमरत बरसाय रियो । नीचे धमरत भर मूमल रा मीठा मीठा बंध म्हेंबरा रा काना मे धमरत जोळ रिया । मूमल रा गज गज लांबा केसा वे म्हेंबरे हाव फेरते पुधियो 'मूमल बांरी जिनाबरो लु संव बरकी हू ? यां नाकियां मे वां कर बिताची ?'

हिरनी बसी घालिया मे घमी भर मूमल म्हेंबरा मे बेसियो । नैना मे नैच पालते म्हेंबरो मुळक न बोसियो 'तू भंङको मृगसागे वा ई पियामो दीख ?'

लांबी लांबी केरी री बंध बसी पलका नीचे धुरगी । मूमल धर म्हेंबरो बोई रल रा माधर मे बबनियां लनाय रिया । रात छटका मानी बिरनियां नह रा बांवरत वे मुक घाई हिरनी मुबा घाबा लागी । तारां री जोत मंड बडवा लागी । नूबडा बांनका लागिया । घट्टियां फिरवा लागी बिभोबका रा पपडका बाजवा लागिया । मूमल धर

शुद्धरा ने हाई नीं बड़ी के रात बीतणी । के तो जय प्रीत नयणी मे
 बेटा जिय में तापी मुना ई सीतल मंद तुबाबणी सामे । जटा रा
 नाटा में ई पुना री गमबोई धावे । पीडा में ई धाबंद धावे । हार
 में जीत रो मत्रो धावे ।

बटी के ह्यीर के नीद नीं धायरी । जीव में तादा तोही लाग री ।
 बरुटा केर रियो । एक बोहर, दो पोहर सीजी बोहर रात बटला
 बटला तो जम रो बीरज छुट गियो । गबाम के नारे घडी पड़ी री
 धागत बराबा नायो शुद्धराजी के बसो बारे धावे । अब तो समाचार
 नुगाम दिया खुला ।”

जम री तापीड शुद्धरा के नाम में ई नीं पुन । पुपी के मान मोना
 धावे जो शुद्धरो पुम रियो । बटरी बजाता गल बीतणी । एक एक
 नर तारा धारै घरा में जाय लुबिया । बारदलो तापी रात धाररी
 संवदा मुटाय धरै बीरो पड़ मुझे टिगना मे जमा हेरबा नावियो ।
 बिदिना रैहबाबा नादी । शुद्धरा री निजर जगु य दिया सागही की
 संदुरी पृठ री “घरे दिन न्य धायो । धारो मट ?”

जम में तो नीं जायो जम जठ न बारे धायो । मुमन री बबाम ता पुप
 जम जय री धागिया शुद्धरा के पाटा धावा रा धामगन्य देव री ।
 शुद्धरा री धागिया ई पाठो जमा री बोमी में बुबाब देव री “गुहारा
 मे तावन नीं के जो रा धामगन्य मे इनकार नर हु ।”

शुद्धरो बारे धायो ह्यीर तो मज बरगियो “ई शुद्धराजी मे नाई
 बागा बरपी ? दिन उम धायो ।”

श्रीर मड शुद्धरा के गवर ई नीं पडे दो न नाई गियो है । गवर नर
 बटा मु शुद्धरा रा बाला ब लो बृवन री धामगन्य बापी पु बरी धामगिया
 य मुमन री मूना बगिबानी टिनरो तो समाचार धायो ई ब झे ।

हमीर खिड़ बियो "वा मे पँह्ल बड रो हे के गियो बाई ? हातो । बोरे बडो ।"

गुँदरो तो मुस पड़ियो उतो । बा तो कोई हाम न बावे । हमीर मे एस बाई काबो पकड न मँदेइयो "बाबो के नी ?"

"बा बाबो गुँ तो घडे ई ब हूँ ।

'कठे ?

'सुमल कने ।

राज हमीर हेमियो गूँदरा रो बीब बस में बोवनी । हण मे संमाझी भी तो यो नतरस गियो । पकड गूँदरा रो बाबटिको बोडा र्व बीझयो । हमीर एह हाक गूँदरा रो पकड राखियो के कठे ई बोटा नीचे कूद नी बावे । गूँदरा रो बोरो बालियो गूँदरा रो बरीर पोक़ा मावे पप बीब पाँटे मँडे न । हमीर बोसियो "गूँदराजी गूँ तो बानि स्याभा घादमी समक गिया । यो काई गेमिको बा रे ।"

गूँदरे माबो बुलियो सुमल रा नैबां री चोट लाय न कोई बीबतो रँ बावे ? माँर रा बसिया बच बावे पप सुमल रा नैबां रो बसियो बाबतो की रँ बे ।"

गूँदरो चोडा मे निहळळ म्पल बँडी लमाम धीमी छोड़ रायी । सुमल रा बलाज कगठो बावे "सुमल ? सुमल मे दुग ई कुच है । घुदगरी रा ताँटे म्पु मीटी ई मीटी । कठे ई तो गारी भी । पां देगी नी रँ म्पु ग्यारी हुनी करो ।"

हमीर बोलियो "म्पु बाबड्य म्पेरिया हो । बरियो बाई है सुमल मे

माधन खे डीरी बटी है।”

गुहरो ठमक न बोलियो “माधन खे डीरी बटी है ?” बा ने पाह म
 मुण री परीछा भी । मुधन री मुधरी कुधरी मुन मुन ता ठपणियां
 रो ठप छुन बावे । माडेभी रा रागा पाठछा हाअ में बा रम मरिना
 है के बनि देण देबता धमरन रा बरिया प्याता ने फेर दे । गृहो
 घादमी है ।”

हमीर हारो हे भी दे पम गुहरो मुणन रा बगान बरना । ब भीगना
 भरलो बावे । नीटा नीटा गुहरो ने हमीर हेरा म पाय पाबियो ।
 राउने मुणना वे बीजजना गीबी । हमार बाणिया गुहरोरानी म
 दिजिया बटी ने गीब री है ।”

गुहरो बज्जना वे गीबना है । वनु हा भला वे मुण गगार रिजा हा ।”

राम गुहरो बटी गगार । ना । के । गगार री राउ हा मुण ।
 भीगानी घाउ म दा । न । गगार मु हन गी है । म उम बिना
 ममकांग मु । गगार म । ग । ग । मु गु दिव गगार । दि ।
 गगारि गगार ता म गगार गी मग मी । हमीर एनी मनराग
 बोधी वन गुहरो मरिना मी । गगार मु गगार गगार बर न दिवा
 मियो । घरे घाउ घाउ मरिना म री । मुधन ई मुधन ई न म
 ने मागे मो बरे भी म न ने मरिना ने मो मरिने भी । घागिना मो
 मो घावा री घागणन देण मुधन रा मरि ई मरि राग । उम बागणन
 ने मरिना री गगार गुहरो ने बटे ? गुहरो । मो बरियो राउरा रागु
 ने मुणयो । राउरो घावो । गुहरो गुहरो “घागो उम रा घाग

टोळा कतय है ?

“बीस ।”

‘रामुदा, या टोळा में कोई एको ऊट है के नीं को छनू रत सुबे वाय पाळो धावे ।’

‘अस्यो ऊट तो एक है बीसल । को धलवला सुबे वाय पाळो धाय लके ।’

‘अस्योक है रे बीसल बालवा मे ।’

“बीसल री नाई पुळो ता

‘किरकिरिया कलां रो
 धावपी पूछ रो
 भारतीय ईड रो
 कोटपी नटो रो
 ना ना कण्ठां मालीर बावे
 भे भे कण्ठां नैवकमेर पुवावे
 बरो एक मोहरी छीपी छोड़ी भेटो
 दिल्ली री सहर पलक में लगे पावे ।’

“ना ना, बीसल मे पलांथ बाड व भट ना ।”

रामुदे नरो बाहरी लवाय धरण्ठो बसांथ बांड बीसल मे लाय हुअर बीसो । मूँदणे बडियो ऊट पै । बीसल बालियो बाणै पाणी रो रेना बडियो । बी रो बरियोडो बटोणे हाथ में के बँठ वावे तो टीरो

जीबे नीं पड़ । एक पोहर रात दिया नुसबा रा वीरबा में बीघस घाय
 हुआया। म्हेंदरो सुमन मू घाय निमिया जांणे बळ्ठी भरती में घणबीर्या
 बळ महिला में पावम री छोळ घाई पही छे । मूरज री किरण परता
 ई कंबळ बिपमे ज्यु सुमन बिमसमी । पर में उजळ्ळा म्हेमियो बांणे
 पुनम रो बाद उम घायो । मावण रा बाटळ मे देव मोरडी माथ ज्यु
 सुमन रो मन नाचवा नागियो । मन ई वाई माथ सुमन री म्ही नाचवा
 नागयो । पामा हसबा साम दिया राट अमच नागयो । बिमळिया
 नैना में धनियळो बाजळ सारिया सुमन म्हेंदरा री पागती म जाय
 बँटी । म्हेंदरो धोनियो, म्हारा जस्यो भागवान घनवान परती रा
 पट्ट वे घाय दूजो बोई नी ? सुमन जेवो ग्गन जिरे बन छे उम मू
 बतो भागवान कुम ?

सुमन बँडे "पूरवसा जमम में म्हें जाही देसर मू महादेवजी री पुजा
 बीबी बो म्हने म्हारी बोड़ रो म्हेंदरो मिलियो ।"

सुमन निठार ल ल नायो सुमन रा मशानी घा दिसरी रो कुजा
 म्हेंदरो ।" बांणे म्हेंदरा वे नामण कर बीयो । नामणगारी सुमन ला
 म्हेंदरा रे बाजळ ज्यु घुळयो मेहरी ज्यु रचयी । तीन पाहरा घण
 हट्यां हट्यां म्हेंदरे बीगम वे सवार भू एव सपाई जा लाण रता
 उमरपोट में जाय न नागनियो । रोख री दिन चर्चा केबी । बरोव
 राण दिबा म्ही रा बाजळा वे चड सुमन मिलार रा लाण वे हाथ
 केरे । मारे री मारे मर मारी छे । टरी गण वे बाक नरी री
 मेहरां के परमता बनराय के बीरना बट मर न ज जाये ।

म्हाण घसन हेताळू म्हेदरा बरे घाब
 मूमल रो बुलायो रे
 म्हाण बघना रो माघो रे
 घसन हेताळू म्हेदरा बरे घाब ।
 मूमल रो लोबाबु रे
 बाणा रो मेबासी रे
 म्हाण घसन हेताळू लोबा बरे घाब ।

अटी ने गितार रा तारा पे मूमल रो हाथ फिरतो । बटीने म्हेदरो
 बीजम री माहुरी खीचतो । मूमल भिसरी रा कुंवा म्हेदरा ने
 घाबा रा लाबा लाबा हेसा गितार पे मारती । घसन हेताळू म्हेदरो
 बघ मीटी मूमल ने बाब म बालबाने उताबळी धे जातो । गितार
 रा तार इत पे बाबता बीजम री बाब इत म्हु जाटी । मूमल
 डेर मती घसन हेताळू म्हेदरा परे जाब । घतराब में
 बायनिबा" म्हेदरा री घाबाब घानी । हरियात्री मूमल ने
 देब म्हेदरो हरिया धे जाता । हेताळ रा नेत देल मूमल हरी म्हुजाती ।
 मूमल म्हेदरा रा हेत री कृपां बाब मदा री महारा बरबा मण गी ।
 क बाडा बेलदिया मे बापा मे बदाय बाणा मे कंबता 'घसन हेताळू बरे
 बाय गियो हे । रेबड बराबठा पुबाळिया घळलीला मे माबा लाब गिया
 'मूमल रो बुलायो रे घसन हेताळू म्हेदरा बरे घाब ।

म्हेदरे री परबियोडा मुगाया घाठ । म्हेदरो बाटसी राज ग मुद्रबा मु
 उबरबाटे पुने । पुगठा ई छोटी बहु के धाळिया म बाय माय बावे ।
 पागु ई बहूबा मना मे बरी माराब । म्हेदरा मु बात कीया मे छ छ

महीना खेगिया। अमरोठ मूं बरी बँटी। एक दिन छानू ई बहुवा
नातू रे कने छोटकी दे पुकारू मी

‘मूां तो मातू ई अगिया बँटी रेवा। यां रा बैटा छोटी रे पीडिया रै।
मूाने पुटे ई नी। या बठा रो निपाव।’

सामू माजबदे छोटी बहु मे बुनाप तमझई “बू यो बाई करे।
छपळा रा ई काटजा मूबे या बात जमी नी। मे हुमी बारा मू परम
मे रैना घाई है। यां रो हक यां मे मिनजो बाईने।”

छोटी बहु छानू रे पनां रे हाव सगावती बोली “दे बरि पनां रे हाव
जगाप मे मनु जो मूं बाई जापनी बू। रात बीत्या पाछनी बोहर रा
घाय मूारे घटे मोरे जो बरी हो दिन अगिया उठे। मूने बतळायां
मे छ छ महीना शूिया है। उठे बाबे घर बठा मू घाबे नां छ बैटा
मूने लबर मी। बारा बैटा न नां सजाओ।”

माजबदे मे बिठा जगजी मूहररो बठे बाबे बटा मू घाबे। घाय रे
साबरा राणा बीनळ मे बाप माजबदे दिया “दे बीनपियां पुबार री
है मूहररा मे मूां घाठिया ई नी रेवा।” माजबदे लारी हवीदत
गुबाई जाछनी रात रा घाय परे लीबे। कजायां बठे बाबे।
बीनळ घाय रो तो घांभी जप हिया रो घाल गुनिघोही। बीनधी
मे घ हनाप पुठिया “घाय न लीबे बर रा घ हनाप बना।”

छोटी बहु बोली “घाय न बाबे बर जनां रा बाबा रा केन लीला
रीब वनां मू बायो पुर्वे।”

“मात्र वनां रे नीब बरीरी माह गायी खेजने।

म्हारां घसल हेताळू म्हेंदरा वरे घाम
 मूमल रो कुसावो रे
 म्हारा बचनां रा सांचो रे
 घसल हेताळू म्हेंदरा वरे घाम ।
 मूमल रो लोकावू रे
 बावां रो देवाती रे
 म्हारा घसल हेताळू लोका वरे घाम ।

घठी मे बितार उ तारां ये मूमल रो हाप फिरतो । घठीमे म्हेंदरो
 भीसल री नाहूरी खेचतो । मूमल मिछरी रा कुसा म्हेंदरा मे
 घावा रा सांचा लोका हेमा सितार ये मारती । घसल हेताळू म्हेंदरो
 बम मीटी मूमल मे बाब मे घामवामे उठावळी धे खालो । सितार
 रा वार हुत ये बाजता भीसल री खाल हुत धे जाती । मूमल
 हेर लेली घसल हेताळू म्हेंदरा वरे घाम । घतराक मे
 घामवामे म्हेंदरा री घामाज घानी । हरिवाळी मूमल मे
 देल म्हेंदरो हरियो धे खालो । हेताळू रा हुत वेल मूमल हरी धुजाती ।
 मूमल म्हेंदरा उ हेत री बाठां बाज मरी री सहरा वरवा लाग गी ।
 ह लोका वेलदिया मे बापा ये बहाय बाजां मे खेचता 'घसल हेताळू वरे
 घाम रियो हे ।' रेवड चउवता पुवाळिया घटगोवा मे घावा लाग रिया
 'मूमल रा कुसावो मे घसल हेताळू म्हेंदरा वरे घाम ।'

म्हदरे र परनिघोडी मुबाया घाठ । म्हेंदरा वाठमी राग रा मुद्रवा मू
 वमरवाट पुद । पुमला ई छाटी बहू रे माळिया मे घाम गोप भाव ।
 बाहू ई धहवा मना मे घनी बायाज । म्हेंदरा मू बाठ बीवां मे उ उ

महीना खेपिया। समरोह नू जरी बँठी। एक दिन सानू ई बहुवा नामु रे कर्ने छोटकी पे पुकार नी

“ग्यां तो सानू ई बपियां बटी रेवां। बां रा बेटा छोटी रे पीठिया रै। ग्यांने पुठि ई नी। यो बठा रो मियाव।”

सानू मापवदे छोटी बहू के बुलाय लमभ्यरै “बू या बारी करे। सगला रा ई काटजा मुवे या बाव जनी नी। ये डूमी बाव नू बरन के बीनां घाई है। यां रो हक यां मे मिलयो बारी है।”

छोटी बहू सानू रे पनां रे ह्याप लजावती बोली “ये बारे पनां रे ह्याप लयाय मे न नू जो गृं बारी जावती बू। रात बीरवां पाछमी पोहर रा घाव ग्यारे घटे सोरे जो बड़ी बी दिन बड़ियां उठे। ग्युंने बतलायां मे छ-छ महीना बहीया है। इठे बावे घर बठा नू घावे बां रा बेटा ग्युंने खबर नी। बांग बेटा के बां समझो।”

मापवदे के बिता जपनी ग्युंहरां बठे बावे कटा नू घावे। घाव रे खावन्त राणा बीमल के बाप माभकद बियो “ये बीनपियां पुकार री है ग्युंहरा के ग्यां घावियां ई नी देयां।” मापवदे लारी हवीमत बुलाई पाछमी रात रा घाव बरे मोरे। कजावां बडें बावे। बीमल घाव रो तो घोषा वप हिया री घाल लुनियोड़ी। बीनपी के घ हनाम पुठिया “घाव न मोरे खर रा घ हनाम बता।”

छोटी बहू बोली “घाव न मोरे खर जपनी रा माया रा केन नीला दीप देना नू पापी पुरै।”

“घाव केना रे नीवे बटीदी माह पापी केनदे।

महीबा झूँगिया । घमरोध मू मरी बँटी । एक दिन बाबू ई बहूवा
सामु रे कर्ने छोटकी रे बुबाक नी

‘गुहां तो सामु ई कनिवा बँटी रेवां । बां रा बैटा छोटी रे जोडिया रँ ।
गुहाने पुठे ई नीं । यो बठा रो नियाब ।’

सामु मापकरे छोटी बहू ने बुमाय समझई “यू यो नाई करे ।
सबझा रा ई काज्जा लुबे या बात जनी नी । ये हुनी चारा मू परण
ने रँनां घाई है । यां रो हक यां ने निनयो चाईने ।”

छोटी बहू सामु रे पनां रे हाय मदाबती बोली ये बारे पनां रे हाय
मयाय मे बबू ओ गृहे नाईं जापनी मू । रात बीतनां पाछनी बीहर रा
घाय गृहारे घटे सोरे जो पटी हो दिन अड़ियां उठे । गृहने बठझायां
ने छ-छ महीना गृहीवा है । उठे चाये घर बडा मू घाये बां रा बैटा
गृहने सबर नी । घारा बैटा ने यां लंजाळी ।”

मापकरे ने बिठा उपनी गृहरो घटे चाये कटा मू घाये । घाय रे
गाब-राया बीमळ ने जाय मामकरे दियो ‘ये बीमळियां बुहार री
है गृहरो ने गृहां घातिबा ई नी रेतां ।’ मापकरे सारी हधीगठ
मुचाई पाछनी राग रा घाय परे सोरे । कजायां बईं घाये ।
बीमळ घाय रा तो घांवा कप हिया री घांस मुनिघोड़ी । बीमळी
ने घ गृहाय पुठिया, “घाय न माये अर रा घ हनाय बना ।”

छोटी बहू बोनी “घाय न सोरे अर उवां रा माया रा कैय नीला
दीघ बना मू चानी कुर्ब ।”

दात्र बगा रे नीये बटोटी बांड पाकी जेकरे ।

दूजे दिन केला रो बुबली पाणी मैत्र कटोरी बीरुळ रे घाले येरही ।
बीरुळ पाणी बाप न बोलियो 'यो पाणी काक नरी रो हे । म्हेंबररो
मुसल रो पीडी बाये ।'

भाट्ट ई बहुवा रे बीच में लाङ्गठोही लापवी । सपळी मिल कल्पा
बीधी मुसल मे निमा ई छाडावणी । राज मुहमे बाप न पाळा घाये ।
उच ऊट मे ई मार ग्हावा ।'

सांझ पही एक सेमू लपाय बीधी कस्या ऊट वे चड न जावे वो बतो
नवा । बीचच ऊट वे चड न जावा रो खबर छापी । दूजे दिन वा
भाट्ट ई मुनाया बीचल ऊट मे ठोक ठोक नीचे ग्हांक बीधो ।
म्हेंबररो बेक ठो ऊट भाड बसबाड पड़ियो । पना में बीला ठुकरिया
नया में बीला नड रिपा । म्हेंबररो रामूडा रीबारी रे चर बाव हेतो
पाड़ियो 'रामूडा बारं भाव ।'

रामूडा रो सुपाई बोली "घाये काई वो ठो घाडी कड पड़ियो हे ।"

"क्यू ? काई बिहो ?"

"वा रो मुपाया तिरोबाव बीधो हे । घास राबळा में बापडा मे ठोक
ठोक नीचे ग्हांक बीधो ।"

म्हेंबररो मे पीब तो पनी घाई । सुपाई मे कियो 'इस रे वादा पीड
कर । रामूडा मे पुठियो घाई हुनो ऊट ई घस्यो हे के नी वो म्हें
मुहमे पुनाये ।

"ई रो भावनी एक राती टोरडी हे जो वा मे मे बाव लके । नग वा

वेरिखोही बोयमी । धां नाबड़ी ऊधी मठ करव्यो नीं तो बमक बाबेता ।”

राठी टोरही वी पलांम कर म्हेंदरो बडिया । सुखे रो वंसी पकडियो ।
 मारम मे म्हेंदरे भुग नू नाबड़ी री टोरहा र दे पाड़ी । टोरही ता
 बमक न भागी जा दूजे गेले पसमी । वंसी पकगी म्हेंदरा मे ठा पही
 नीं । मना मे बुबा बासबा री घाबाब आई । म्हेंदरा नाबियो वंसा
 मे ता बोई बुबो बाबे नीं । बकर दंसा भूमिया । बुबा प भाय
 मे टोरहा मे पाणी वाबा सादियो । पाणी रे म हा घटाणा ई टोरही
 एवदम मू हो केर लीघा । म्हेंदरे बुबा बाळा मे पुणियो टोरही पाणी
 वनू नीं वीयो ?

‘घरा रा पाणी सारो है ।

‘वो नाम बस्यो है ?’

‘बाहुमेर ।’

‘मदक व्ही । म्हुं बट रो बट घाय निबडियो ।’

म्हेंदरा मे तो मुदक पुणबा री उगावट माल री । अट टारही मे वंन
 ग्हाबा । उगा नू टारही न रबाई को वा ती पुण्ड घाय निबडो ।
 बनीब वा भें मू पुण्ड रा घावमी बाग । तासा री बासी मुदा ता
 म्हेंदरे बाबियो, दो मा वा तो पुण्ड । बरं मुबा बरं पुण्ड ।
 घई बनी पुण्ड ।”

वंसा पुण्ड घाये भिया । बम क पाणी उमरबोट नू बाहरबर

बाहूकमेर सूनू पुगळ भटक न फिरतो फिरयो । धर्मे जो वीतो चुक विवो
तो सुद्धे पुसबा ने ई नी । एवडू फूट रियो पुगळ बीठो । म्हेंदरे
जुवाठ ने हूसो पाडियो "म्हूँ दिसा भूम खेप रिवो हूँ । धू म्हारे मेडी
घाय ऊट रा काना कनां सूनू दिसा बठा जो म्हूँ पावरे गेने वीवू ।"

पुवाळियो ऊट रे वनें घाय ऊ जो हाक कर दिसा बठळावप लावियो ।
म्हेंदरे तो पकड पुवाळिया रो हाप ऊट रा घागला घासक पे म्हाक
टीरडी डीघाय डीघी । पुवाळिया ने दियो 'हाको बीवो तो माग
म्हाकूँ । म्हेंनें वसो बठळो जा । जानी पहिचाबी बगठी घाता ई वन
घतार देवू ।"

पुवाळियो घेसो बठातो बाभे म्हेंदरो टीरडी मे खडियां बाभे । सुद्धा री
बरती मोळनी । पुवाळिया ने अतार म्हेंदरो घाग बडियो :

मूमल रा म्हेंल मे बीवो बळ रियो तीवी पोहर रात डळपी । मूमल
बाट नाळनी नाळनी सोयबी । उज दिम मूमल री वैन मूमल घायोडी ।
कहेनियां घागे मूमल बळ री । मेल मे मरदाना कपडा पीरयोडा ।
बाळां बरती बरती मूमल ई मूमल रे सागे घायपी बरदाना कपडा
पीरयां ई ब । म्हेंदरा मूमल री मेडी बडिया । उठावळो मूमल रा
बोभिया वनें वियो । नजर परठा ई म्हेंदरा रे ता हजार बिष्पु साथ
ई डंक मारिया । मूमल एक बरद रे मार्नें घायरी ? हठ बारी बी
मूमल ? जिण मूमल बाभे मूँ घाय देवू । वा मूमल घमी ? जिण मूमल
साक मूँ घबार तो बोघां नू भटकना घायो वा मूमल घागे बुजा
घारबी मार्नें सोय री । म्हेंदरा री घांगियां घानें ता बाळा बीळा
घाय गिया । नी ती घागे देवनी घायो नी मोचनी घायो । हाक

मूमल घोष कर कर बुझी घुंघरी । माया में ठेक बालियां ने महिमा
 भे पिया । खीरा नैनां मूमल जैसे देखती री । बरती बुझी जाये ।
 धारसी ने गाथा सू डाँड़ हीची । धरत री सीसीयां ने काक नदी में
 ऊषाय हीची । मंडी में नी रंग न राम । बाई एक पड़ी रात बाई न
 मूमल डागळा री बड़ गितार बजावे । धरै गितार छ ठार ई गाथे नी
 मूमल रे मारे मारे रोवे । गितार पे मूमल मूँदरा ने धावा रा हिला
 बाँड घोळ भा हेवे ।

बारा लो बिना रे मूँदरा सोडा रावा बरती बुझी
 बारी मूमल रापी रे उबाव
 मूमल रो बुलायो रे
 प्रथम हूँदरा बरे धाव ।

मूमल बाट गाठी पपी माली । बापज मिल न भेभियो ।
 मूँदरे पाछी कंबायो 'मूँदर रो सोमी बागला रो कीहो नी हूँ ।
 रूप में प्यार नी करु बरिन नै करु । उम राठ में मूँ म्हाटी बालियां
 मूमल रो बरिन देख सीधो । मूमल ने कंबीचो जिन साथे बारो नन
 लागियोहो उम साथे रे । मूँदरे मारे मठ पड़ ।"

समाचार मुष्पां मूमल रे जवां नीचसी बरती गिनट नी । धरै समझी
 मूँदरो क्यू नी धायो । गपला में बाग नी बापती जो बोल
 धायो । मूमल ली जगी न बेला उमरपोट वाली बाय म्हारा मूँदर
 रा पन रो ईम बाट । मूमल उमरपोट पूपी । मूँदरा ने समाचार
 मैया । मूँदरे देख्यो ईज रा हूँ न ता पठबाणां । मूँदरे बाहर न
 गोतायो । बाबर माया कूटतो कूटता जगत रे डेरे पूपो 'मूँदराजी

मे बाबो नाब डस बियो ।”

हूँ करता मुमस रा प्राण पसक उड गिया । गरर मागता ई झूठरो
 बरकर घाय न बठे पड़ बियो । पण सबे बाई ? झूठरो गाबा खादवा
 नाबियो मुमस मुमस करतो फिर । तमह में जठरी सँहरा रेन में
 जठरा बच माया में जठरा बाळ जठरी दाभ दिन में कमस मे पा
 बरे ।

मूमल छोक कर कर बुझ्ठी खेयी । माथा में तैल घालिवां ने महिना
 खे गिया । पीका नीचां मूमल गीतो देखती री । धरती बुझ्ठी लाने ।
 धारसी ने पाबा घू डांक बीबी । धतर री सीसीयां ने काक नदी में
 ऊ बाय दीबी । मँही में बी रंग न राय । बा ई एक बड़ी रात बाई न
 मूमल डागल्य री बड़ सिठार बजाये । धबै सिठार रा ठार ई गाये नी
 मूमल रे सारे सारे रोये । सिठार पे मूमल म्हेँहरा ने घाभा रा हेसा
 पाँड़ घोळ मा देये ।

बारा ठो बिना रे म्हाारा छोडा राजा बरती बुझ्ठी
 बारी मूमल राजी रे उबास
 मूमल रो बुलामो रे
 धसस हेठाळू म्हेँहरा बरे घाम ।

मूमल बाट नाळी धनी लम्बी । नाबज मिल न येबियो ।
 म्हेँहरे पाछो कँबायो "म्हूँ रूप रो सोमी बानना रो कीड़ो नी हूँ ।
 रूप न प्यार नी कक बरिज नै कक । उण रात ने म्हेँ म्हाारी भाजियां
 मूमल रा बरिज देख नीबो । मूमल ने कँ शीको बिज साथे बारो मन
 लाजियोडो उज साथे रे । म्हाार सारे मत पड ।

समाचार मुख्या मूमल रे पनां नीचसी बरती भिनक नी । धबै समयी
 म्हेँहरो रूप नी घायो । सपना में बाग भी बानती भी होत
 घाबी । मूमल ती उधी अ बेळ उमरपोट बानी बाय म्हाारा म्हेँहरा
 रा मन रो बीय बाडू । मूमल उमरपोट पूनी । म्हेँहरा नै समाचार
 भेग्या । म्हेँहरे देख्यो ईज रा हेत न ता पठबाना । म्हेँहरे बाकर ने
 नीतायो । बाकर माथो कूटवा कूटवा मूमल रे डेरे पुगो "म्हेँहराजी

शब्दार्थ

बेहर

बेवधी=	होर	५
दुस्ती या १७ बाब=	दस्तिवाब सोबान] कुची टाम, प डंगा इफर्मवी भइर्मबळ बळारब । पंडपोह अरदति बोधी पछाड सगी भूच मावा मबाठी बाब डंडा दुसमप गुम वमारो पोठी बुर	१
मात्रर=	जवाना म्हेमा में रंवा बाळा ही बडा	७
बाबाता=	मोटी मोटी बाबा बाळा	८
बीप्पा=	बैगिनो	
बभो=	मोटी दूनो बीपप बभन देवा मे	
तरवार या बाब=	बभनमगानी दुदद, इनुबळी गोबन गदूरगानी	९
बिमोटा बाब=	तरवार मे तरवार मू पटवाना दे तरवार मे बमान मू पटवान द तरवार न हाव मू पटवान दे बमान टी बामो बमान हाव दे	

बबदाद = हटाव

भगईत = प्रयादा में कुमती करणियो

केहर री हाबल = नाहर री भुजा

२१

नागली

भूरीयो पबन = पुरखी हवा

२३

बमर बायो = बमर बमर ताई

२४

काडियां = लयाया

कागरो = नी जवान

मांघरके = गुई

बही = बम तैर

२७

कावदिया = रईं जमावा र हाडिया

रोट = हनी

२८

पाजी = घन री पाटी

३०

घोटा = नु तरा

३१

घबन री (रथी) = घबन टागवा रो टपवावा रो बरतन

गोवा मे = हदेटी मे ऊ री बर

३२

बाई = बाटे

भोबो = भोबो

३३

बीमो = लनो बारबो

३६

बीघडिया बंदा नु बिघडन हथेन

३७

बोमरा = बोबारा घानु

बागाब = बाटी

बाँधसे पर बार नीं खेवा है ठरवार	
बसाबसिवां री सुसकां बाँधसे	९
परवाटियौ साँप= बिना बहुर रो छोटी साँप	१०
पौउ खे नाम न= मारन घायबिबौ	
पाल= भीला रा गाय	११
दू बीबा= भीला रा माँबा में रीला में दु पीरा	
देवाबाझ	१२
दुग्गरबरा= दुगराठ	
धोड़ा री फिरत= कदम साहामास दुगाम रेबाझ, एबियां	
भमंरु लु ब बमाझ तलबाग दुइकी धारत	
कूरत बाइ की कूरंत, बकपरी संगरी संबड़ी	
उर्मंट पत्रापट्टी धोछिया तोड़ री डूपलट	
हिरन बाझ	
भोरमा= पाँच रै बारै	१४
बलाम्बर= माल भिबोड़े	१५
कोटड़ी के बींटी है=टोटड़ी के पैर ?	१७
कडू ब = दुग्म	१७
साताबग्य = बरम	१७
दुखो = जगम धुटी	१८
रागम = नायग	
बग्याबरी = बिनाबक बी	१९
दुग्मब बिर्मब = मोटा पुमटा बाझो ग्हेस	१
भीयां = भीई एक जात है जो ब्याना बालकी उठा	
बारो नाम बरता	

बबड़ाप =	— हटाप	
घराड़ त =	— घराड़ा में कुछली करणियो	
बेहर री हापड़ =	माहर री भुजा	२१

नागजी

भुरीयो पवन =	पुरब]री हवा	२१
बमर बाभो =	बमर बमर छाई	२२
नाडियां =	तडावा	
रागडो =	नी जवान	
भांभरदे =	गुई	
बड़ी =	रम सेर	२७
बांभरिया =	रई बजाबा र. हाडिया	
रोड़ =	हमी	२८
पारी =	घत री पाडी	३०
घोटा =	बु तरा	३१
घमन पी/मरदी =	घमन टागवा रो टपजाबा रो बरतन	
गोवा के =	हूदेडी के ऊ ही कर	३२
बाडे =	बाटे	
गाबा =	बोबो	३३
बीबी =	तानो बाएभो	३५
बीबाडिना मंभा नू =	बिपूदन ५ देन	३७
बीगरा =	बीबारा घांनु	
बागाव =	बाटो	

बाबू=	बापा रो पत्नी	
माझो=	सेठ में बखाली करवा ने रु बड़ा मावे बैठवा छोवा रो बया	४०
बीब=	देख	४१

भोजा सपावरण सेळू

बैलू=	बैयती रो बूजो नाम	४३
माया मासूहा नामा=	बीब करवा मागा	
परकाब=	बूबिवा बका	
छीना रो पोरसो=	स्वर्ण पुरुष	
बागुबी=	बतळी	४४
बाठ=	इच्छा	४५
पूबासिमो=	अविषो	४६
बततम=	बित्र ती भाई	४७
बिसरी भाबळ=	बहुरीनी बडी	
बुनलिवो=	छोटो बहो	४८
बिगत गिपो=	पून रो भाई सिमपिवो	
बाबळी=	रैजा रो पाबरो, जो बूबारिपां परवा करे । बिग रे भाङो नी बूो छोटी मू बमर वे बावे	४९
बमी होट=	बमी भेळ	५०
नी दू बा=	बबरी बीज	५१
		५२

घासो डांभी

बैठावां=	बरवां में	७
रोड़ दे=	बंद करदे	७१
घाना मू=	गरम मू	७४
हीवा=	नांवा	
बोडिवां म हुंजम		
री बानिस=	बोडिया मे बापले हायां में जनाबा री बोडिस	७५
पमाच=	बीच	७२
बनड़ी=	रव री मूपरियां	
परेबो=	बबूतर	
बाबोहो=	ऊट	७३
बगडियां=	नङ्गडाबा	
बाबो=	गहाणे	७७
रणो=	उछड़	८५
बांभ बावेना=	टूट बावेना	८१
बीर=	पोडा दे मूम री घाबाज	
तमर=	हुनिया	

घाभम लोबजी

गर बबर=	गुब हरिवो	९२
बटूरा=	बटूबा ग रैर	
बमाररी=	नाक बापी रा ठडावां में बापी करे, एक बर	९१
हुगाईयां=	भूरर री बभोज	

बचकर=	बचन	१४
भांग म्हाङ्गिया=	छोड़ म्हाङ्गिया	
कानी बीच=	कानों में धेड़ा कर	
बैह=	गाह्वर सूबर रे रैबा टी बन	१३
डोफर=	छाग मारयो	
मकफियो=	मकफियो	१६
बुडफटा=	लंगडातो	१७
खेत रणो=	मरयो	
टूड=	सूबर रो मूडा रा घापयो हिस्तो	१८
रपट=	लपक	
डोटो=	घेंप रे लाङ्गी छोके	
कूड्डी डूम=	मांसरी डूपां डोहू टी छीक नापने पोमोड़ी छीक कबाब	
सराबगा=	ठारीक	१९
बू बियोड़ी=	खन बू बियोड़ी	१००
बीचयां=	छातों रो मूमको	१०१
सरब=	बूरा	
बीजङ्गिया=	बिङ्गल	
छीउंग रो म्हेतो=	बैहोउ म्हे न पडवा मागे	
पराक विवरियो=	बहार दिछा में बीजली बमके	१०२
धमंगा रो बाणियो=	बूरा रो	
डैडर=	डैडका	
दिवयो=	बमकनो	१०३

बाइ=	पेट में जोर तो दुबे	१०४
लै बीड़ी=	पीड़ा नू विकल	१०५
देबरे बोइबा=	धौंवर में दरसप करवा	१०६
मैउउ=	इही बिसोवाने मंबाभी लीबबा री रस्सी	१०८

धूमस

भीरबा=	बाह ग्हाकणों	१२०
बायो=	घाम	१२२
बापबा=	बाची री बाह मेओ	१२७
बिलम्पी=	लिपटपोड़ी	१३०
बिनामी=	इबा कीची	१३१
बाबटिपो=	हाव	
लीब री=	बमकरी	
बीजन=	ऊट री एक बाल म्हे	१३६
इ उ=	तेज	१४०
पाबरे=	गुंवे	

हमकर=	परब	२४
बांन ग्वाबिया=	ठोक ग्वाबियो	
कानी भीब=	कानां नि भेद्य कर	
बेह=	बाहर सूबर रे रैवा री बया	२५
डोकर=	काम मारणा	
मलकियो=	मपकियो	२६
मुइकतो=	संनकाठो	२७
जेठ रंभो=	मरनो	
दूब=	सूबर री मुबा ए भावनी हिस्तो	२८
रपट=	तपक	
डोटो=	पेद रे लाकड़ी ठोके	
सूझीरी बूब=	मांसरी बूबां लोह री चीक भावने पीयोड़ी सीक कयाव	
सराबना=	ठाठीक	२९
बूबियोड़ी=	स्तन बूबियोड़ी	१००
भीरयां=	ठारां री भूमकी	१ १
सरब=	बुरा	
भीमजिया=	विष्म	
वीठय रो ओसो=	बैहोस ब्हे न बड़वा लाने	
बपक विवतियो=	बपार दिसा में बीरनी बमके	१०२
धलया रो सड़ियो=	दूरां रो	
केइरा=	पैइरा	
विवनो=	बमकनो	१०४

बाड़=	पेट के खोर रो दुखे	१०४
हैं पीड़ी=	पीड़ा सू बिबळ	१०५
देवरे बोकबा=	बौदर में बरखम करवा	१०६
वैतर=	वही बिसोबाने मंगानी खीबवा री रस्सी	१०८

सूमल

मीरवा=	बात श्हाकनों	१२०
बाबो=	घाम	१२२
बाबवा=	बाबी री बाहू सेजो	१२७
बिलम्बी=	निपटपोड़ी	१३०
बिनासी=	हेवा पीपी	१३१
बांबटियो=	हाथ	
पीर पी=	बपकरी	
पीसल=	ऊ ट ठे एक बाग भे	१३५
हुत=	देव	१४०
बाबटे=	गूदे	

शुभ फलना



गणेश वर
बट विष्णु,
१ वर्ष १९५८

राजेश ५११६

रानी लक्ष्मीकुमारो चू डावत के कुछ पुन हूये महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

समयानि हिन्दी वच बीत	१)
समानि मुत्ताय हिन्दी वच बीत	४)
राजस्थान का रूप राजस्थानी बोड़े	१)
भावन राज राजस्थानी वार्ते	४)
मूलन राजस्थानी वार्ते	४)
बंद रे बबरा बुन राजस्थानी वार्ते	४)
ह वारो बी सा राजस्थानी वी बन्नी की वार्ते	111)
राजस्थानी लोक गीत	१)
राजस्थानी वृत्त संग्रह	४)
दिर डंका डंका गरी	४)
राजस्थानी हस्तक	१)
करली करिब	१)
बद्वि बीचन विरविन बुपन विमान	111)
बबीगुवाबाई विरविन बबीगु बन्धनिका	१)
बाडी बाबर री बरापो बीरबांर	१)
गिन्नुन के डन वार एनी मारिका बी कन बाबर के बंगारक हवा मान राजस्थान बीर कन के बांगुडिफ बन्धन एवं मयमय का देवनागरी बन्धन १)	

प्रति स्थान

राजस्थानी संस्कृति परिषद्
१६४ ए. टी., बनीपार,
जयपुर

रानी लक्ष्मीकुमारो चू डावत के कुछ गुन हुये महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

सप्तर्षिनि प्रहिन्दी मय नीत	१
रामत मुजाय हिन्दी मय नीत	७
राजस्थान का हृदय राजस्थानी दोहे	११
नामकन राज राजस्थानी बाने	१७
मूलत राजस्थानी बाने	२३
ई ई बरका बाल राजस्थानी बाने	२९
हू कारो बी छा राजस्थानी में बरन्नी की बाते	३५
राजस्थानी लोक नीत	४१
राजस्थानी बुरा संघर्ष	४७
गिर झंका झंका पत्रा	५३
राजस्थानी हरजन	५९
करली बरिच	६५
बदि बीबत् बिबित्त बुपन बिनात	७१
बबीग्राचार्य बिबित्त बबीग्रा बरत्तनिका	७७
हाडी बाहर रो बररापो बीरबाँट	८३
दिगुदुम के बत बार रानी नाटिका बी कम मारा के संरक्षण	८९
तथा भारत राजस्थान बीर कम के सांस्कृतिक	९५
मन्तर्क एवं समन्वय का दर्शनार्थी सम्बन्धन ६)	१०१
प्रति स्वत	१०७

राजस्थानी संस्कृति परिपद
१६४ ए. टी., बनीपार्क
जयपुर

रानी लक्ष्मीकुमारी चू डावत के कुछ चुन हुये महत्वपूर्ण प्रकाशन

सप्तर्षिनि हिन्दी गद्य गीत	१)
सप्तर्षि गुरुवाच हिन्दी गद्य गीत	७)
राजस्थान का हृदय राजस्थानी दोहे	१)
सोचन राज राजस्थानी गाने	७)
सुगत राजस्थानी गाने	७)
कई ई बकवा गान राजस्थानी गाने	७)
हू कारो वो का राजस्थानी ये बच्चों की गाने	111)
राजस्थानी लोक गीत	६)
राजस्थानी दुहा लघुह	७)
पिर ऊंचा ऊंचा पडा	७)
राजस्थानी हरजत	३)
करली बरिज	३)
बिबि बीचन बिबिबि सुगत बिलात	111)
बबोगाबाबे बिबिबि बबोगा बल्लनगिजा	१)
हाडी बाहर रो बलागो बीरबात	1)
हिन्दुस के रत बार रानी ताहिवा बी रज दाता के बंसवार तथा भारत राजस्थान बीर रज के सांस्कृतिक सम्पर्क एवं सम्बन्ध का परोक्षतार्थी प्रकाशन	६)

प्रकाशक स्थान

राजस्थानी संस्कृति परिषद

१६४ ए. टी., बनीपार्क,

जयपुर

रानी लक्ष्मीकुमारो चू डावत के कुछ चुन ह्ये महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

सप्तर्षिनिःहृती मय पीठ	१)
सप्तर्षि मुखाय हिन्दी मय पीठ	५)
राजस्थान का हृदय राजस्थानी दोहे	१)
मोक्षम राग राजस्थानी गाने	५)
मूलम राजस्थानी गाने	५)
हरे दे बरबा बाल राजस्थानी गाने	५)
हकारो बी हा राजस्थानी में बच्चों की गाने	111)
राजस्थानी लोक पीठ	५)
राजस्थानी युग संग्रह	५)
पिर ऊंचा ऊंचा गडा	५)
राजस्थानी हरमल	५)
करली बरिज	५)
बदि बीचलु बिरबिन सुपन विनात	१111)
बबीगाचार्य बिरबिन बबीगु बालनविदा	३)
हाडी बादर से बगाबी बीरबदि	५)
विष्णुग के बल बार उनी साहिवा बी सन दाता के संस्कार तथा भारत राजस्थान धीर सन के सांस्कृतिक बन्धन एवं नवम्बद का दवेरदातुर्ग बन्धन	६)

प्रॉफि स्वाम

राजस्थानी संस्कृति परिपद

१६४ ए. डी., बनीपार्क,

बन्दपुर